

# PDF कर्ता-आचार्यरत्न झा, बरदाहा (अररिया)

\* तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम् \*  
 \* विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरस्य सदनैः तिरम्ये \*  
 \* अपेक्षितं सन्निहितो दिष्टं विसृष्टान्यत्र नृणां प्रदिष्टम् \*  
 \* योगोपबन्धं मनुजैरजसं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत् \*  
 \* गिरो निकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्विवृद्धं लभतां सदेदम् \*  
 \* ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽद्यो विपश्चितामर्चनमातनोतु \*

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः



दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।  
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥

जगल्लग्नम्-०।०४

२ गु	सू.	रा १२ बु	११
३	ल. १	श. १	११
मं. ४		१०	
५	७ चं.	८	९
के ६			

विक्रमसंवत् २०८२-८३  
 लक्ष्मणसंवत् ६१६-१७  
 कलिसंवत्सरः ५१२७

मकरन्दानुसारि

## विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गम्



**राजा- बुधः**  
**वर्षा - ११**  
**कर्काकर्तः द्वारकायां महाकुम्भयोगः**  
**सन् १४३३ साल**  
**कामेश्वरसिद्धदेवभट्टासकृतविश्वविद्यालयप्रकाशितम्**  
**प्रधानसम्पादकः - राष्ट्रपतिसम्मानितः पं०श्रीरामचन्द्र झा**  
**पूर्वप्राचार्यः विभागाध्यक्षः सङ्घाध्यक्षः कुलपतिश्च**  
**चलदूरवाणी - ६४३००६३६४८**  
**देशान्तरम् - ०१।३५ अवांशः - २६।३५ पलमा - ०६**  
**वर्षम् - ४८ अङ्कः - ४८**

वर्षलग्नम्-४।२७

गु. १०	१	चं. सू. बु. रा	७
११ मं.		श. १	
१२		६	
१ ल.	३	४	५
के २			

**शालिवाहनशकाब्दः १६४७-४८**  
**भारतीयस्वतन्त्रताब्दः ७८-७९**  
**क्रिस्ताब्दः २०२५-२६**

महाराजाधिराज-कामेश्वरसिंहः



प्रादुर्भावः २८-११-१९०७ ई.  
 तिरोभावः ०१-१०-१९६२ ई.  
 असली एक्काइ में होलोश्राप स्टीकर पर  
 मिथिला पब्लिकेशन का लोगो देखकर लें।

प्राप्तिस्थानम्-मिथिला पब्लिकेशन, जयदीप भवन, खजौची रोड, पटना-०४

मुद्रक-मिथिला पब्लिकेशन रामकृष्णानगर पटना-२०  
 सम्पर्क-पं.श्री अजय मिश्र 8114536746

मूल्यम्- रु 100/-  
 विदेशे मूल्यम् \$ 15



• आनन्ददिव्ययोगचक्रम् •									
योगनाम	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	फलम्	
आनन्दः	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	विदिः	
कालदण्डः	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र	मृत्युः	
धूम्रः	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ	स्वाती	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	दुःखम्	
घाता	रोहिणी	पुष्य	उफ	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	शुभः	
सम्यः	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	सुखम्	
घ्वाङ्क्षः	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र	भरणी	हानिः	
केतुः	पुनर्वसु	पूफ	स्वाती	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	दुःखम्	
श्रीवत्सः	पुष्य	उफ	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	सम्यतिः	
वज्रः	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	हानिः	
मुद्रः	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र	भरणी	आर्द्रा	नाशः	
क्षमम्	पूफ	स्वाती	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	सम्मानः	
मित्रम्	उफ	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	सुखिः	
मानसम्	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	पुष्य	
पद्मः	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	लाभः	
लुब्धः	स्वाती	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ	हानिः	
उत्पातः	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफ	नाशः	
मृत्युः	अनुराधा	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	मृत्युः	
काणः	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेशः	
सिद्धिः	मूल	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ	स्वाती	सिद्धिः	
शुभः	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफ	विशाखा	शुभः	
अमृतम्	उत्तराषाढ	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	सम्मानः	
मशालम्	अभिजित्	पूर्वाभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	लाभः	
गदः	श्रवणा	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ	स्वाती	मूल	हानिः	
मातङ्गः	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफ	विशाखा	पूर्वाषाढ	वृद्धिः	
राहस्यः	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ	कष्टम्	
वरः	पूर्वाभाद्र	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	सिद्धिः	
सुस्थिरः	उत्तरभाद्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूफ	स्वाती	मूल	श्रवणा	शुभः	
प्रबद्धमानः	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफ	विशाखा	पूर्वाषाढ	धनिष्ठा	सुखम्	

• समर्थका विद्वांसः •

०२

प श्री ध्रुव मिश्र, वेद	— विभागाध्यक्षः	प श्री मधुसूदन मिश्र	प श्री भागल मिश्र	प श्री राज्ञद्र झा
प श्री दयानाथ झा, साहित्य	— विभागाध्यक्षः	प श्री दुर्गाधरा मिश्र	प श्री शशिभर मिश्र	प श्री विष्णुदेव झा
प श्री कुणाल कुमार झा, ज्योतिष	— विभागाध्यक्षः	प श्री दिगम्बर मिश्र	प श्री रामकुमार झा	प श्री भूपनारायण मिश्र
प श्री दयानाथ झा, व्यकरण	— विभागाध्यक्षः	प श्री चन्द्रमोहन झा	प श्री भूपेन्द्र ना. झा	प श्री हर्षनाथ झा
प श्री दिलीप कुमार झा, धर्मशास्त्र	— विभागाध्यक्षः	प श्री वामदेव झा	प श्री गुरुश्रा ठाकुर	प श्री बालकृष्ण पाठक
प श्री धीरज कुमार पाण्डेय, दर्शन	— विभागाध्यक्षः	प श्री विम्वेश झा	प श्री धर्मश्रा	प श्री रामकुमार झा
प श्री रामजी ठाकुर	प श्री देवनागरण झा	प श्री अजय झा	प श्री कामेश्वर मिश्र	प श्री मनीचन्द्र ठाकुर
प श्री मोला झा	प श्री राशिनारा झा	प श्री जगन्नाथ झा	प श्री दोहन ठाकुर	प श्री नवीनचन्द्र ठाकुर
प श्री सिवाकान झा	प श्री सिवावारा मिश्र	प श्री रामलाल मिश्र	प श्री सुमूर्ति झा	प श्री चन्द्रनाथ झा
प श्री धनुषेश्वर मिश्र	प श्री वीरानारा मिश्र	प श्री सुमूर्ति झा	प श्री भोलानारा मिश्र	प श्री भूपानाराय तिवारी
प श्री रामजीव मिश्र	प श्री वीरानन्द झा	प श्री प्रमोदनाथ झा	प श्री इन्द्रेव झा	प श्री लक्ष्मीकान झा
प श्री महाकान पाठक	प श्री सुप्रसन्न मिश्र	प श्री अमरनाथ झा	प श्री सुशीलकान मिश्र	प श्री दिनेश ओझा
प श्री किशोरीनाथ झा	प श्री रामकृष्ण झा	प श्री राङ्गकृष्ण मिश्र	प श्री गीतेश्वर यादव	प श्री अमिराश झा
प श्री वैद्यनाथ झा	प श्री विद्यानाथ झा	प श्री धर्मेश झा	प श्री तराश्रीश झा	प श्री शिवकानन्द झा
प श्री हार्दिकेश झा	प श्री वाचस्पति त्रिपाठी	प श्री रजनीश झा	प श्री मेहरा मिश्र	प श्री स्वयंश्रा झा
प श्री गङ्गाधर पाठक	प श्री दामोदर झा	प श्री राजेश्वर झा	प श्री रघुपति झा	प श्री विजयनाथ झा
प श्री गणेशकान झा	प श्री गोविन्द मिश्र	प श्री रजेंद्र च द्वे	प श्री शशिभर मिश्र	प श्री जगन्नाथ मिश्र
प श्री रामनाराय चोहरी	प श्री ब्रह्मदेव मिश्र	प श्री समनारायण झा	प श्री सजीतकुमार झा	प श्री अभयकान ठाकुर
प श्री नीलाम्बर मिश्र	प श्री कमलेश झा	प श्री इन्दिरायाण झा	प श्री भवनाथ प्रतिहस्त	प श्री चन्द्रकुमार झा
प श्री हम्पेश झा	प श्री विकास झा	प श्री हनुमान मिश्र	प श्री हरेराम शर्मा	प श्री सदानन्द झा
प श्री अर्जुना चोहरी	प श्री उडैट ना. झा	प श्री चीन्द्र झा	प श्री वायुपुनन्द मिश्र	प श्री मन्दन कुमार झा
प श्री धर्मनाना मिश्र	प श्री कुलनाथ झा	प श्री देवेंद्र झा	प श्री रामलखन झा	प श्री मुनीन्द्र झा
प श्री होरेंद्रकिशोर झा	प श्री शोभकान झा	प श्री विजयकुमार मिश्र	प श्री राधाकर झा	प श्री शुकदेव शर्मा
प श्री शक्तिनाथ झा	प श्री राधकानान झा	प श्री खगेंद्रनाथ झा	प श्री मोहनजी झा	प श्री राजेश्वर झा
प श्री अण्णक, उष्णायाम	प श्री शिवाकान झा	प श्री रामनिहोरा यादव	प श्री ओझुनारा मिश्र	प श्री प्रमोदनाथ झा
प श्री सुखेश झा	प श्री श्रीपति त्रिपाठी	प श्री बेवण झा	प श्री रामप्रभ शर्मा	प श्री कलशरा झा
प श्री लक्ष्मीनाथ झा	प श्री हसनारायण चार्वेदी	प श्री शिवलोकन झा	प श्री वेनेश्वर झा	प श्री उदुनाथ ठाकुर
प श्री पुन्र्द बारिक	प श्री सननारायण झा	प श्री सुन्दर झा	प श्री उमेश मिश्र	प श्री इन्दनारायण झा
प श्री विनयकुमार मिश्र	प श्री तावानन झा	प श्री गान्धर्व शर्मा	प श्री गोविन्द झा	प श्री विष्ण्व्यास मिश्र
प श्री फूलचन्द्र मिश्र	प श्री इन्द्रधर शर्मा	प श्री धानेश्वर शर्मा	प श्री सौम्यवर्ण झा	प श्री शक्तिनन्द झा
प श्री इन्द्रमणि दास	प श्री ब्रह्मदेव मिश्र	प श्री गान्धर्व शर्मा	प श्री महानन्द ठाकुर	प श्री सत्येश शर्मा
प श्री निरञ्जिव झा	प श्री मीना शर्मा	प श्री धनेश्वर झा	प श्री उमेश मिश्र	प श्री कृष्णकान मिश्र
प श्री चन्द्रकान शुक्ल	प श्री उमेश शर्मा	प श्री चौटी मर्याद	प श्री विजयकुमार मिश्र	प श्री बालाल मिश्र
प श्री राधकान ठाकुर	प श्री विद्या तिवारी	प श्री सुभार कुमार झा	प श्री काशीनाथ झा	प श्री श्रीराम मिश्र
प श्री कालिकाकान झा	प श्री भरतश्याम मिश्र	प श्री दारिकाना झा	प श्री एण्णक पाण्डेय	प श्री श्रीराम ठाकुर
प श्री मदनमोहन पाठक	प श्री भागीश्वर मिश्र	प श्री साधनारा मिश्र	प श्री देवर्षि सिन्हा	प श्री रघुनाथ मिश्र
प श्री शशीन्द्रनाथ मिश्र	प श्री विम्वेश्वर झा	प श्री सुखेश्वर झा	प श्री रामचन्द्र प्रतिहस्त	प श्री रामसेकन झा
प श्री बटोही झा	प श्री गणेश्वर झा	प श्री विवेकानन्द झा	प श्री केदार मिश्र	प श्री राधानारा ठाकुर
प श्री अनिल कुमार झा	प श्री रविन्द्र कुमार मिश्र	प श्री दिनेश झा	प श्री पीताम्बर मिश्र	प श्री रघुनेश झा
			प श्री वीर कुमार झा	प श्री राजेश्वर मिश्र
				प श्री केशव कुमार झा
				प श्री कलमलान मिश्र
				प श्री कमलपति त्रिपाठी
				प श्री अजित कुमार झा
				प श्री विकास
				प श्री कमलेश पाठक



[illegible][illegible]

**• वर्षफलम् •**

इस वर्ष के वर्षारं (गजा) वृष, सिंहका (मन्त्री) शनि, पालिकाधिपति शुक्र, मेघपति मङ्गल, जलपति बुध, शस्यपति चन्द्र, लोकपति सूर्य, सर्वत्राकर्षक मेघ तथा रोहिणीवास सन्धि में है। सिद्धार्थनामक बार्हस्पत्यवर्ष है। वर्ष ११ विशा, धाम्य ११ विशा, प्रव्रतानाम वायु तथा जलग्रहणमा २० विशा है। राशानीवासा दूर्ध्व एव अतिवृष्टि तथा विप्रमत्सरानाम् पुनर्ममयुष् एव कश्चदः । जगल्लान-मेघ, वर्षलान-सिंह, गजा-मन्त्री में समभिन्नभाव, वर्गेरोगरा सूर्य अष्टमस्थ, चन्द्र नीचात, बुध गहुयुक्त, उज्वालिलोत् शुक्युक्त स्व्याहीति सप्तमस्थ, कर्मस्थ बृहस्पति, आयस्य मङ्गल एवं धनस्थ केतु, जगल्लनेमान् मङ्गल नीचात बुधवर्ष जगल्लानत उत्तमस्थ सूर्य, धनस्थ बृहस्पति, सम्भक्तकुन्दला चन्द्रमा, आयस्य मङ्गल इति उज्वालिलोत् शुक्युक्त, घडस्य केतु एव व्यस्यस्थ नीचात बुध गहुयुक्त है। अधिकारियो में शुभग्रहों की अधिकाता है। इस प्रकार ग्रहवृष्टि—दृष्टि—स्थिति के आलोक में वैतन्यस्थ—विजय—विलास—भाषा की स्थिति के बावजूद अनुकूलता की संख्या नवीं होगी। कृषि, स्वास्थ्य, पयाँवार, पिशा, ऊर्जा एवं जल से सम्बद्ध क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य होगा। उद्योग, व्यापार, सञ्चार, क्रौडा एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। आर्थिक अभ्युन्नति, वैधानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में विविध प्रकार के नवीनकार्य—नवीनप्रयोग से वैधिक स्तर पर देश की स्थिति सुदृढ होगी। नीतस्थ्य बुध, पापग्रहों की दृष्टि—युक्ति—अवस्थिति, यदा—कदा प्रा—पांच श्रेष्ठ के योग के कारण समय—समय पर प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प—ज्वालामुखी—हिमपात—तूफान—भूस्खलन—सड़कनामक रोग—अग्निकोष, विद्युत्पात सम्य ओलावृष्टि आदि), राजनैतिक उपद्रव—पुलक, कलह, अनैतिककृत्य, षडयंत्र, विषम सीप एवं मार्ग, अवर्तविरट, शास्त्रात्मिनमत तथा हठालापित से जन—धन की क्षति सम्भावित रहेगी। विषमवृष्टि, खण्डवृष्टि, कहीं—कहीं वृष्टि का अपवाद एवं बाढ से कृषि प्रभावित होगी। भाद्र, अगस्त्यी एवं चैत्रौ फलस्य को उच्च क्रमशः ८५, ९५ एवं ९० प्रतिशत होगी।

**• मासफलम् •**

**श्रावण** — इस मास में ५ बृहस्पतिदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सोम्यन्त्रज्ञ है। अतएव छाषपदार्थ, तरलपदार्थ, वस्त्रादि, फल—व्यूजनादि, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, गृहेष्वपेक्ष्य एवं श्लेषपदार्थ के मूल्य में साम्य की स्थिति रहेगी। ५ बृहस्पतिदिन होने के कारण सुख—शान्ति की स्थिति रहेगी। नवीन कार्याक्रम होगा। दुर्टना एवं उपद्रव आदि में कामी आएगी। कहीं बाढ, कहीं अतिवृष्टि, विषमवृष्टि या खण्डवृष्टि सम्भावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

**भाद्रपद** — इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सोम्यन्त्रज्ञ है। अतएव छाषपदार्थ, खनिजपदार्थ, औषधि, श्लेषपदार्थ, धातुपदार्थ, तरलपदार्थ, फल—व्यूजनादि, वस्त्रादि, वस्त्रादि एवं गृहेष्वपेक्ष्य के भाव में साम्य—सन्ती का क्रम रहेगा। ५ रविदिन होने के कारण प्राकृतिक प्रयोग, दुर्टना, हठालाप, उपद्रव एवं रोगाणिमय सम्भावित रहेगा। बाढ, खण्डवृष्टि अथवा विषमवृष्टि की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

**आश्विन** — इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सोम्यन्त्रज्ञ है। अतएव छाषपदार्थ, धातुपदार्थ, फल—व्यूजनादि, वस्त्रादि, श्लेषपदार्थ, रसाति, तरलपदार्थ एवं रक्तपदार्थ के भाव में समता का क्रम रहेगा। ५ बुधदिन होने के कारण बुधिय, प्रव्रतता, सत्कार्यादि सम्पादन एवं नूतन कार्याक्रम के योग बनेंगे। खण्डवृष्टि की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्तव्य है।

**कार्तिक** — इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं शस्य सप्ती पदार्थों के भाव में साम्य का क्रम रहेगा। श्लेषपदार्थ, वस्त्र, तरलपदार्थ एवं रसादिपदार्थ अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। कहीं—कहीं हठालाप, दुर्टना, राजनीतिक उपद्रव—पुलक एवं खण्डवृष्टि की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिए।



**आगहन** — इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं सौम्यभृङ्ग है। अतएव खाद्यपदार्थ, खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, रक्तपदार्थ, फलादि, गृहोपकरण, काष्ठोपकरण, तरलपदार्थ, भैतपदार्थ, फल—व्यञ्जनादि एवं रसादि के मूल्य में साम्य—तेजी का क्रम रहेगा। ५ रविदिन होने के कारण काले पदार्थों, भैतपदार्थों, वखादि एवं तरलपदार्थों के मूल्य में अपेक्षाकृत तेजी का क्रम रहेगा। खण्डवृष्टि की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिए।

**पौष** —इस मास में ५ मङ्गलदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यभृङ्ग है। अतएव सभी प्रकार के वस्तुओं के भाव में तेजी का क्रम रहेगा। वख, फल—व्यञ्जनादि, गृहोपकरण, रक्तपदार्थ एवम् औषधि के मूल्य में अपेक्षाकृत अधिक तेजी रहेगी। चार ग्रहयोग होने के कारण कहीं—कहीं झञ्झावात, उपलपात, शीताधिक्य, दुर्घटना, उपद्रव, प्राकृतिक प्रकोप एवं हड़ताल की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

**माघ** — इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यभृङ्ग है। अतएव सभी वस्तुओं के भाव में अपेक्षाकृत साम्य का क्रम रहेगा। रक्तपदार्थ, वखादि, धातुपदार्थ, रसादि, फल—व्यञ्जनादि एवम् औषधि के मूल्य में अपेक्षाकृत तेजी का क्रम रहेगा। ५ बुधदिन एवं चार ग्रहयोग होने के कारण हिमपात, शीताधिक्य, प्राकृतिक प्रकोप, रोगाग्निभय, झञ्झावात एवंम् उपलपात सम्भावित रहेगा। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

**फाल्गुन** — इस मास में ५ शुकदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं याम्यभृङ्ग है। पञ्चग्रहयोग है। अतएव रसपदार्थ, वखादि, भैतपदार्थ, फल—व्यञ्जनादि, धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, काष्ठोपकरण एवं गृहोपकरण के भाव में साम्य—तेजी का क्रम रहेगा। तरलपदार्थ, वखादि, फल—व्यञ्जनादि, काष्ठोपकरण एवं रसादि के भाव में अपेक्षाकृत समता का क्रम रहेगा। पञ्चग्रहयोग होने के कारण दुर्घटना, उपद्रव, रोगाग्निभय, प्राकृतिक उत्पात, झञ्झावात, तूफान एवम् ओलावृष्टि की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

**चैत्र** — इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३०, याम्यभृङ्ग एवं चार ग्रहों का योग है। अतएव सभी वस्तुओं के मूल्य में तेजी का क्रम रहेगा। रसपदार्थ, भैतपदार्थ, फल—व्यञ्जनादि, वखादि, औषधि, धातुपदार्थ एवं काष्ठोपकरण के भाव में अपेक्षाकृत अधिक तेजी रहेगी। चारग्रहयोग होने के कारण प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, तूफान आदि) झञ्झावात, उपलपात, रोगाग्निभय, हड़ताल, राजनैतिक उथल—पुथल एवं दुर्घटना सम्भावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण करें।

**वैशाख** —इस मास में ५ मङ्गलदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं याम्यभृङ्ग है। चारग्रहयोग है। अतएव सभी वस्तुओं के भाव में तेजी का क्रम रहेगा। भैतपदार्थ, कृष्णपदार्थ, काष्ठोपकरण, वखादि, औषधि, फल—व्यञ्जनादि एवं तरलपदार्थ के भाव में अपेक्षाकृत साम्य की स्थिति रहेगी। चारग्रहयोग होने के कारण झञ्झावात, उपलपात, रोगाग्निभय, उपद्रव, यान दुर्घटना, हड़ताल एवं प्राकृतिक उत्पात (तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट आदि) की सम्भावना रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण करें।

**ज्येष्ठ** — इस मास में ५ शुकदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं समभृङ्ग है। अतएव खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, तरलपदार्थ, भैतपदार्थ, खाद्यपदार्थ, रसादि, वखादि, फल—व्यञ्जनादि, गृहोपकरण, काष्ठोपकरण, रक्तपदार्थ एवम् औषधि के मूल्य में अपेक्षाकृत समता का क्रम रहेगा। औषी, झञ्झावात, उपलपात एवं ग्रीष्माधिक्य सम्भावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण करें।

**आषाढ** — इस मास में ५ सोमदिन, सूर्यसङ्क्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५, ३० एवं सौम्यभृङ्ग है। अतएव खाद्यपदार्थ, खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, तरलपदार्थ, गृहोपकरण, काष्ठोपकरण, औषधि, रसादि, वखादि एवं फल—व्यञ्जनादि के भाव में तेजी—साम्य का क्रम रहेगा। ५ सोमदिन होने के कारण सौमनस्य का वातावरण बनेगा। नूतन कार्यारम्भ होगा। चिरप्रतीक्षित कार्य सम्पादन सम्भावित रहेगा। खण्डवृष्टि सम्भावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिए।

• राशिफलम् •

**मे़ष** (बु, चै, चो, ल, लि, लु, लै, लौ, अ) — वर्षफल मध्यम है। स्वास्थ्य अनुकूलप्राय रहेगा। यदा—कदा उदरविकार, वातपीडा, घाव या चोट सम्भावित रहेगी। सन्तानसुख बाधित एवं पारिवारिकसुख मध्यमकोटि का रहेगा। शिक्षा, उद्योग, कृषि, व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्र में विलम्ब से सफलता मिलेगी। धर्मकृत्य एवं तीर्थाटन का योग लगेगा। नवीन कार्यारम्भ एवं जीविका के क्षेत्र में आशिक सफलता मिलेगी। दिनाङ्क ०७-०९-२०२५ ई. तक एवम् १२-०१-२०२६ ई. के बाद शनि की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत, हनुमदुपासना, चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**वृष** (ब, उ, ए, ओ, व, वि, बु, बै, वौ) — वर्षफल शुभप्राय है। स्वास्थ्य अनुकूलप्राय रहेगा। सन्तानसुख एवं पारिवारिकसुख मध्यम रहेगा। भ्रमण, तीर्थाटन एवं धर्मकृत्य का योग लगेगा। व्यापार, कृषि, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्रों में आशिक बाधा एवं विलम्ब के बाद सफलता मिलेगी। नवीन कार्यारम्भ का योग लगेगा। केतु की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत, रुद्राभिषेक, चतुर्थाध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**मिथुन** (क, कि, कु, ष, ङ, छ, के, कौ, इ) — वर्षफल साधप्राय रहेगा। आशिक रूप से वात—पित्त—कफजन्य पीडा, उदरविकार या मुरोष की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख एवं पारिवारिकसुख मध्यमकोटि का रहेगा। उद्योग, व्यापार, कृषि, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्रों में बाधा—विलम्ब के बाद लाभ होगा। वैमनस्य—विवाद, तीर्थाटन एवं स्थानपरिवर्तन का योग सम्भावित रहेगा। अतएव दिनाङ्क ०८-०९-२०२५ ई. से १२-०१-२०२६ ई. तक कुम्भराशिवत् शनि की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत, चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**कर्क** (हि, हु, हे, हो, ड, डि, ड्ड, डै, डौ) — शनि की साढेसाती चल रही है। अतएव उदरपीडा, कफ—वातदोष, वैमनस्य—विवाद, घाव या चोट की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख अनुकूल एवं पारिवारिकसुख मध्यमकोटि का रहेगा। शिक्षा, उद्योग, कृषि, व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्रों में बाधा एवं विलम्ब से आशिक सफलता मिलेगी। स्थानपरिवर्तन एवं तीर्थाटन का योग लगेगा। अत कुम्भराशिवत् शनि की तथा दिनाङ्क २९-०६-२०२५ ई. के बाद राहु की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत, रुद्राभिषेक, वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ अथवा चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ करना लाभकर होगा।

**सिंह** (म, मि, मु, में, मो, ट, टि, टु, टे) — शनि की साढेसाती चल रही है। अतएव रक्त—वातदोष, घाव या चोट की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख एवं पारिवारिकसुख में आशिक बाधा होगी। नवीन कार्यारम्भ में विलम्ब होगा। तीर्थाटन एवं धर्मकृत्य का योग बनेगा। कृषि, शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्रों में बाधा एवं विलम्ब से आशिक लाभ होगा। विवाद—वैमनस्य की स्थिति सम्भावित रहेगी। अतएव कुम्भराशिवत् शनि की तथा राहु—केतु की उपासना करनी चाहिए। मङ्गलव्रत, आदित्यह्दयस्तोत्रपाठ, वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ अथवा चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ करना लाभकर होगा।

**कन्या** (ढो, ण, पि, पु, ष, ण, ठ, पे, पौ) — वर्षफल मिश्रित है। वात—कफदोष, घाव, चोट या उदरविकार की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख मध्यम तथा पारिवारिकसुख बाधित रहेगा। शिक्षा, कृषि, उद्योग, व्यापार, नवीन कार्यारम्भ एवं राजनीति के क्षेत्रों में बाधा—विलम्ब से सफलता मिलेगी। तीर्थाटन, धर्मकृत्य एवं स्थानपरिवर्तन का योग लगेगा। केतु की तथा दिनाङ्क ०७-०९-२०२५ ई. तक एवम् १३-०१-२०२६ ई. के बाद शनि की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत एवं चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ करना चाहिए।

**तुला** (र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, तै) —वर्षफल मिश्रित है। पारिवारिकसुख एवं सन्तानसुख मध्यमकोटि का रहेगा। वात—रक्तदोष, उदरपीडा एवं घाव—चोट की आशिक सम्भावना रहेगी। नवीन कार्यारम्भ में बाधा एवं विलम्ब से सफलता मिलेगी। कृषि, उद्योग,

व्यापार, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्र में बाधा—विलम्ब से आशिक सफलता मिलेगी। अतएव कुम्भराशिवत् दिनाङ्क ०८-०९-२०२५ ई. से १२-०१-२०२६ ई. तक शनि की तथा राहु की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत एवं चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**वृधिक** (तो, न, नि, नु, ने, नो, ष, णि, गु) — वर्षफल मिश्रित है। उदरविकार एवं वात—रक्तदोष से स्वास्थ्य यदा—कदा प्रभावित होगा। सन्तानसुख एवं पारिवारिकसुख अनुकूलप्राय रहेगा। शिक्षा, राजनीति, कृषि, उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्रों में आशिक सफलता मिलेगी। भ्रमण, स्थानपरिवर्तन एवं तीर्थाटन सम्भावित रहेगा। नवीन कार्यारम्भ अथवा चिरप्रतीक्षित कार्य में सफलता सम्भावित रहेगी। कुम्भराशिवत् शनि की तथा दिनाङ्क २९-०६-२०२५ ई. के बाद राहु की उपासना लाभकर रहेगी। मङ्गलव्रत, चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना कल्याणकर होगा।

**धनु** (ले, यो, ष, णि, णु, ष, फ, ड, धे) — वर्षफल मिश्रित है। वात—रक्तदोष, चोट, घाव एवम् उदरपीडा की सम्भावना रहेगी। सन्तानसुख अनुकूल तथा पारिवारिकसुख बाधित रहेगा। तीर्थाटन एवं स्थानपरिवर्तन का योग लगेगा। शिक्षा, उद्योग, कृषि, व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्रों में आशिक बाधा एवं विलम्ब से सफलता मिलेगी। साझेदारी के कार्यों में लाभ होगा। नवीन कार्यारम्भ एवं चिरप्रतीक्षित कार्य में सफलता की सम्भावना रहेगी। दिनाङ्क ०७-०९-२०२५ ई. तक एवम् १३-०१-२०२६ ई. के बाद शनि की उपासना लाभकर रहेगी। रविव्रत/अनौना/मङ्गलव्रत, चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**मकर** (मो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खु, खे, खौ, ग, गि) — दिनाङ्क ०८-०९-२०२५ ई. से १२-०१-२०२६ ई. तक शनि की साढेसाती रहेगी। अतएव वात—रक्तदोष, घाव—चोट, उदरपीडा एवं शल्यक्रिया सम्भावित रहेगी। सन्तानसुख अनुकूल एवं पारिवारिकसुख मध्यम रहेगा। कृषि, उद्योग, व्यापार एवं शिक्षा के क्षेत्रों में बाधा एवं विलम्ब से लाभकर स्थिति रहेगी। स्थानपरिवर्तन एवं भ्रमण का योग लगेगा। नवीन कार्यारम्भ एवं राजनीति के क्षेत्र में बाधा तथा विलम्ब से आशिक सफलता मिलेगी। अतएव कुम्भराशिवत् शनि की तथा केतु की उपासना करनी चाहिए। रविव्रत/अनौना/मङ्गलव्रत, चतुर्थीध्यायदुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।

**कुम्भ** (गु, गे, गी, स, सि, सु, से, सो, द) — शनि की साढेसाती चल रही है। अतः वात—रक्तदोष, उदरपीडा, शत्रुबाधा, घाव—चोट एवं वैमनस्य—विवाद सम्भावित रहेगा। सन्तानसुख मध्यम एवं पारिवारिकसुख अनुकूल रहेगा। कृषि, व्यापार, उद्योग, शिक्षा एवं राजनीति आदि के क्षेत्रों में बाधा एवं विलम्ब से आशिक लाभ होगा। हनुमदर्शन—पूजन—स्तोत्रपाठ, गौसेवा, मङ्गलव्रत, चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ, शनिपूजन—स्तोत्रपाठ—मन्त्रजप, तिलतैल से हनुमद्दीपदान, शनिदिन अश्वत्थपूजन, कृष्णकम्वल—छाता—जूता—लोहोपकरणादिदान, शिवपूजन, हनुमानचालीसापाठ शान्त्त्यर्थ करना चाहिए। काला घोडानाल/बृधोत्सर्ग दानी/नाव के माडि के लोहे की अङ्गुठी, गङ्गाजल से सिक एवं शनिमन्त्र से अभिमन्त्रित कर वाम हाथ की मध्यमा में शनिदिन पूर्वाह्ण में धारण करना चाहिए।

**मीन** (दि, दु, ध, ङ, ज, दे, दो, च, चि) — शनि की साढेसाती चल रही है। अतएव वात—रक्तदोष, उदरविकार, घाव—चोट एवं विवाद—वैमनस्य की स्थिति सम्भावित रहेगी। सन्तानसुख अनुकूल तथा पारिवारिकसुख मध्यम रहेगा। नवीन कार्यारम्भ एवं राजनीति के क्षेत्र में बाधा तथा विलम्ब के बाद आशिक सफलता मिलेगी। मङ्गलकृत्य, धर्मकृत्य, तीर्थाटन तथा भ्रमण का योग लगेगा। शिक्षा, कृषि, उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्रों में विलम्ब—बाधा के बाद सफलता मिलेगी। साझेदारी के कार्य में बाधा सम्भावित है। अतएव कुम्भराशिवत् शनि की तथा राहु की उपासना लाभकर होगी। मङ्गलव्रत, चतुर्थीध्याय दुर्गापाठ अथवा वाल्मीकिरामायण सुन्दरकाण्डपाठ करना श्रेयस्कर होगा।



०५

**सूर्यस्य**—ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः ।**चन्द्रस्य**—ॐ सो सोमाय नमः ।**कुजस्य**—ॐ अ अङ्गाराकाय नमः ।**बुधस्य**—ॐ बु बुधाय नमः ।**बृहस्पतेः**—ॐ बृ बृहस्पतये नमः ।**शुक्रस्य**—ॐ शु शुक्राय नमः ।**शनेः**—ॐ श शनैश्चराय नमः ।**राहोः**—ॐ रा राहवे नमः ।**केतोः**—ॐ के केतवे नमः ।**शुभनक्षत्राणि**—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, रेवती ।**शुभलग्नानि** राशयश्च—बुध, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन ।**शुभदिनानि**—चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनानि ।**शुभतिययः**—२,३, ५,७,१०,११,१२,१३,१५ ।**पापग्रहाः**—श्रीणचन्द्र(कृष्णपक्षीयैकादशीतः शुक्लपक्षीयपञ्चमी यावत्)—पापयुक्तबुध—सूर्य—मङ्गल—शनि—राहु—केतवः ।**शुभग्रहाः**—अश्वीणचन्द्र—पापविपुक्तबुध—बृहस्पति—शुक्रग्रहाः ।

**ग्रहाणां समिधः**—अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामागौऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दुर्वा कुराह्य समिधः क्रमात् ॥  
**शाकल्यनिर्माणम्**—तिलादौ तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलादौ यवाः स्मृताः । यवादौ शर्करा प्रोक्ता सर्वादौन्तु धृत स्मृतम् ॥  
**छन्दोगानां देवताप्राणप्रतिष्ठापनम्**—ॐ वाङ्मनः प्राणापानी व्यानश्चबुः श्रोत्रं शर्मं बर्म भूतिः प्रतिष्ठा ॥  
**वाजसनेयिनां देवताप्राणप्रतिष्ठापनम्**—ॐ मनोजुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्ट यज्ञऽयंमिमां दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

**ग्रहाणामरिहहरत्सम्**—  
रज्ज्जावती, कुष्ठ (कुष्ठ), बला (बरियार), शियहट्टु (काउनी), घन(मोधा), सर्पपः, हरिद्रा, देवदारुः, पुट्टा(सहरफोका), लोघम् — एतैरौषधैर्द्युतजले पुष्पाद्यतदुर्वाश्रीखण्डरक्तचन्दनधान्यशतावरीतीर्षौदकसज्जमुनिकातिलयवपञ्चगव्यताम्बूलपञ्चपल्लवपञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जले स्नायात् । एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।  
**गर्भधानमुहूर्तः**—  
रोहिणी, मृगशिरा, उत्तर३, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनीनक्षत्रेषु । १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु । चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारेषु । रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रि यावत् । शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः, पापैस्त्रयापारिगैः, पुष्टग्रहलक्षणे, चन्द्रे विषमाशगे युग्मराशौ शुभम् ।

**सौमन्तपुत्रसन्तमुहूर्तः**—  
पुत्रसन्तं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सौमन्तोन्नयनञ्च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम् । मृगशिरा, पुष्य, श्रवणा, मूल, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, उत्तर३ (जन्मभं विना) नक्षत्रेषु । १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथिषु । शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत् । सूर्यमङ्गलबृहस्पतिवारेषु । मतान्तरेण चन्द्रशुक्रौ अपि । पूर्वार्ण्ये, पुष्पस्याङ्गे तदशौ शुभम् । तत्र पापैः ३, ६, ११ स्थितैः । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० स्थितैः । चन्द्रे २, ३, ४, ५, ९, १०, ११ स्थिते । ४, ८, १० पापरहितैः शुभम् ।

• अर्द्धग्रहराशोधकचक्रम् •							
दिनम्	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः
दिने	४।५	२।३	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रौ	४।६	४।३	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

**जातकमुहूर्तः**—  
जातकस्य ग्रहदोषप्रशमनपूर्वकया श्रीवन्दये जन्मकाले एव जातकम् पिता कुर्यात् । तदतिक्रमे एकादशे द्वादशे वा द्विसे कुर्यात् । तदभावे चित्रा, अनुराधा, रेवती, उत्तर३, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु । पूर्णिमा विहाय शुभतिथिदिनलक्षणेषु शुभम् ।

**शिराशोधनमुहूर्तः**—  
अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, पुनर्वसु, उत्तर३, पुष्य, चित्रा, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु । शुभतिथिषु । वर्षासिंहवृश्चिकम्भलग्नस्ये न्यूनपाण शुभम् । अन्नप्रशानोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु सुतिकापथ्य शुभम् । औषधि-भक्षणोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु औषधिभक्षण शुभ स्यात् ।

**शुक्लिकान्तरमुहूर्तः**—  
अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, अनुराधा, उत्तर३, रेवतीनक्षत्रेषु । रविमङ्गलबृहस्पतिवारेषु । शुभलग्नेषु शुभदयुक्तेषु । १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुक्लिकान्तर शुभम् । आरलेषा, पूर्वा३, ज्येष्ठा, धनिष्ठानक्षत्रेषु मध्यमम् ।

**प्रसूतिनक्षत्रोदयमुहूर्तः**—  
अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तर३, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु । ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथिषु । ३, ५, ६, ७, ८, ११ लग्नेषु । शुभदिनेषु । पूर्वार्णे शुभम् ।

**स्त्रीणां लक्षाभरणधारणमुहूर्तः**—  
भरणी, आर्द्रा, आरलेषा, मघा, विशाखा, शतभिषारहितनक्षत्रेषु । शनिमङ्गलरहितदिनेषु । शुभतिथौ स्त्रीणां लक्षाभरण(लहरी) धारण शुभम् ।

**शिशुनिष्क्रमणमुहूर्तः**—  
जन्मतो द्वादशेऽङ्गे शुभम् । तदतिक्रमे तृतीये चतुर्थे वा मासि यात्रोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु शुभ स्यात् ।

**शितोर्ध्वपुंसपुत्रसन्तमुहूर्तः**—  
आदौ पृथ्वी वराह सम्भूय कुजबले नष्टमे मासि । उत्तर३, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजिन्नक्षत्रेषु । रिकामारहिततिथिषु । शुभदिनेषु । वर्षासिंहवृश्चिकम्भलग्नस्ये । शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्धवा पृथिव्यावृणवशयेत् । तन्मन्त्र—रक्षेन वसुधे देवि सदा सर्वगत शुभम् । आयुः प्रमाण सकल निश्चित्य हरिष्ये ॥ अथ शिशोःसे वस्त्रम्, शस्त्रम्, लेखिनीम्, पुस्तकम्, सुवर्णं रौप्यं च स्थापयम् । तेषु बालो य गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातयेति ।

**शिशुविलोकनमुहूर्तः**—  
तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवदव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम् ।

**कण्ठीपणतुहूर्तः**—  
१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत् । चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु । जन्मतारा विहाय श्रवणा, धनिष्ठा, हस्त, पुनर्वसु, उत्तर३, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधनक्षत्रेषु । १२, ६ मासे वा विषमवर्षे चैतृषीहरिशर्यामरिकासमवर्षाणि त्यक्तानि । २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नेषु । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० गतैः । पापैः ३, ६, ११ गतैः । लग्नस्थे गुरो शुद्धसमये शुभः ।

**नामकरणमुहूर्तः**—  
विषाणा ११, १२, श्रविषाणां १३, वैषाणां १६, शुद्राणां ३१ नमे दिने नामकरणं शुभम् । अथवा स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, उत्तर३, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधनक्षत्रेषु । १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु । चन्द्र-बुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु । पूर्वार्णे शुभम् । मय्याहे मध्यमम् । शुभलग्नेषु । शुभे १, ४, ५, ७, ९, १० स्थिते । पापैः ३, ६, ११ स्थितैः । ८, १२ गृहे शुद्धे । चन्द्रे २, ३, ५, ९, १० स्थिते । लग्नं शुभाशे पितृपुत्रयोर्द्वन्द्वगतान्कूले उत्तराश्वे शुद्धसमये शुभ नामकरणम् ।

**अन्नप्रशानमुहूर्तः**—  
कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु, बालकानां षष्ठासममासेषु । रोहिणी, उत्तर३, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्यनक्षत्रेषु । २, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथिषु । चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु । शुक्लपक्षे । पूर्वार्णे । २, ३, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३ तिथिषु । शुभलग्नेषु । मत्तान्तरे रोहिण्युत्तराश्वेयपि । चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु । २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथिषु । शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे ५ यावत् । २, ३, ४, ८, ९, १२ पद्मश्रीनक्षत्रेणोक्तं शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे । पापैः ३, ६, ११ गतैः । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० गतैः । जन्मराशिलनयोरष्टमेतत्लग्ने । ८, १२ रहितचन्द्रे शुभम् ।

**वृद्धाकरण(पुत्रेण-आपचकवर्त्तन)मुहूर्तः**—  
चैत्ररहितमासादिपणमासे अग्रहायणे च । ज्येष्ठाग्रहायणयोः ज्येष्ठसप्तमानं विना । विषमवर्षेषु । अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु । मत्तान्तरे रोहिण्युत्तराश्वेयपि । चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु । २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथिषु । शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे ५ यावत् । २, ३, ४, ८, ९, १२ पद्मश्रीनक्षत्रेणोक्तं शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे । पापैः ३, ६, ११ गतैः । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० गतैः । जन्मराशिलनयोरष्टमेतत्लग्ने । ८, १२ रहितचन्द्रे शुभम् ।

**महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः**—  
श्रीगणेशोऽस्मिन्पूर्वकं शान्तिपाठं कृत्वा कृशवर्तिनजलन्यादाय सङ्कल्पः—अथ अमुके मासि अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुकोऽन्यायाय श्रीअमुकशर्मणाः उपस्थितताराविशेषेणाखिलराष्ट्रद्विद्विप्रशमनपूर्वकोर्ध्वपुष्टवक्रपृष्टिरेकस्यश्राविकाय । अथाभ्यस्य यथाकालं यजुर्वेदानन्तरं—  
मार्घ्यदिनराशौयम् ३० हौं ३० जू जः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुमैरुपि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारकमिव बन्धनमृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वो जू जः हौं ३० हौं महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य एतदहस्त्वर्चःपुष्टवक्रजपमात्रं करिष्यामि । ३० हौं ३० जू जः (सप्तमस्तनः) अथ श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्टाः कृष्णः पद्मनिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयस्त्वा देवता हौं बीजं जू शक्तिः सः कोलक महामृत्युञ्जयप्रणये ममाभीष्टसिद्धयर्थं जपे विनियोगः । ऋष्यादित्यास्त—वामदेवकहोलवशिष्टाःकृष्णयो नमः शिरसि । पद्मनिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोऽन्यो नमः मुखे । सदाशिवमहामृत्युञ्जयप्रददेवतायो नमः हृदि । हौं बीजंय नमःनाभौ । जू शक्तये नमःपादयोः । सः कोलकम नमःसर्वज्ञे । ३० हौं ३० जू जः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ३० नमो भगवते रुद्राय शुभलायणये स्वाहा हृदयाय नमः । ३० हौं ३० जू जः भूर्भुवः स्वः यजामहे ३० नमो भगवते रुद्राय अमरस्यै मां जीवय शिरसि स्वाहा । ३० हौं ३० जू जः भूर्भुवः स्वः सुगन्धि पुष्टिवर्धनं ३० नमो भगवते रुद्राय चन्द्रस्यै जयिते स्वाहा शिखार्ये वरदा । ३० हौं ३० जू जः भूर्भुवः स्वः उर्वारकमिव बन्धनम् ३० नमो भगवते रुद्राय विपुलनायक्य हौं हौं कवचाय हुम् । ३० हौं ३० जू जः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ३० नमो भगवते रुद्राय विलोचनाय ऋण्यजुः । साममवरायणये नैत्रवयाय वीरदा । ३० हौं ३० जू जः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ३० नमो भगवते रुद्राय अनिरायाय उज्ज्वलज्ज्वालया मा रक्ष त्वं अयोग्यय अस्माकं फदा । इति श्रीमहासिद्धिर्जलं सुगतिं पीयूषपात्रं वहदस्ताब्धेन दधस्तुदीपनमलं हस्तस्यास्पृङ्गह्नेम् । सूर्येन्दग्निलोचनां कतले पाशाशसुडाङ्काश्रमोऽनं विप्रमधय सुगतिं मृत्युञ्जय सम्मतेतु इदमेतन् ध्यात्वा यथोपायैः समुज्य नमः जपेत् । जपसमाप्तौ च शाकत्यादिधिरिदंशशक्रमेण होमपत्रपाजानंनङ्गाणभोजनञ्च कार्येत् । लघुमृत्युञ्जयमन्त्र—३० जू जः ।

सूर्यस्य—ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः ।**चन्द्रस्य**—ॐ सो सोमाय नमः ।**कुजस्य**—ॐ अ अङ्गाराकाय नमः ।**बुधस्य**—ॐ बु बुधाय नमः ।**बृहस्पतेः**—ॐ बृ बृहस्पतये नमः ।**शुक्रस्य**—ॐ शु शुक्राय नमः ।**शनेः**—ॐ श शनैश्चराय नमः ।**राहोः**—ॐ रा राहवे नमः ।**केतोः**—ॐ के केतवे नमः ।**शुभनक्षत्राणि**—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, रेवती ।**शुभलग्नानि** राशयश्च—बुध, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन ।**शुभदिनानि**—चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनानि ।**शुभतिययः**—२,३, ५,७,१०,११,१२,१३,१५ ।**पापग्रहाः**—श्रीणचन्द्र(कृष्णपक्षीयैकादशीतः शुक्लपक्षीयपञ्चमी यावत्)—पापयुक्तबुध—सूर्य—मङ्गल—शनि—राहु—केतवः ।**शुभग्रहाः**—अश्वीणचन्द्र—पापविपुक्तबुध—बृहस्पति—शुक्रग्रहाः ।

**ग्रहाणां समिधः**—अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामागौऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दुर्वा कुराह्य समिधः क्रमात् ॥

**शाकल्यनिर्माणम्**—तिलादौ तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलादौ यवाः स्मृताः । यवादौ शर्करा प्रोक्ता सर्वादौन्तु धृत स्मृतम् ॥

**छन्दोगानां देवताप्राणप्रतिष्ठापनम्**—ॐ वाङ्मनः प्राणापानी व्यानश्चबुः श्रोत्रं शर्मं बर्म भूतिः प्रतिष्ठा ॥

**वाजसनेयिनां देवताप्राणप्रतिष्ठापनम्**—ॐ मनोजुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्ट यज्ञऽयंमिमां दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

• **ग्रहाणामरिहहरत्सम्** •

रज्ज्जावती, कुष्ठ (कुष्ठ), बला (बरियार), शियहट्टु (काउनी), घन(मोधा), सर्पपः, हरिद्रा, देवदारुः, पुट्टा(सहरफोका), लोघम् — एतैरौषधैर्द्युतजले पुष्पाद्यतदुर्वाश्रीखण्डरक्तचन्दनधान्यशतावरीतीर्षौदकसज्जमुनिकातिलयवपञ्चगव्यताम्बूलपञ्चपल्लवपञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जले स्नायात् । एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।

• **गर्भधानमुहूर्तः** •

रोहिणी, मृगशिरा, उत्तर३, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनीनक्षत्रेषु । १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु । चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारेषु । रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रि यावत् । शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः, पापैस्त्रयापारिगैः, पुष्टग्रहलक्षणे, चन्द्रे विषमाशगे युग्मराशौ शुभम् ।

• **सौमन्तपुत्रसन्तमुहूर्तः** •

पुत्रसन्तं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सौमन्तोन्नयनञ्च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सबले कार्यम् । मृगशिरा, पुष्य, श्रवणा, मूल, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, उत्तर३ (जन्मभं विना) नक्षत्रेषु । १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथिषु । शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत् । सूर्यमङ्गलबृहस्पतिवारेषु । मतान्तरेण चन्द्रशुक्रौ अपि । पूर्वार्ण्ये, पुष्पस्याङ्गे तदशौ शुभम् । तत्र पापैः ३, ६, ११ स्थितैः । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० स्थितैः । चन्द्रे २, ३, ४, ५, ९, १०, ११ स्थिते । ४, ८, १० पापरहितैः शुभम् ।

• अर्द्धग्रहराशोधकचक्रम् •							
दिनम्	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः
दिने	४।५	२।३	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रौ	४।६	४।३	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

• योगिनीवासे युद्धयात्रायाम् •							
तिथयः	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०
दिशा	पूर्वे	आग्नेये	दक्षिणे	नैऋत्ये	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे
ईशाने							

• **जातकर्ममुहूर्तः** •

जातकस्य ग्रहदोषप्रशमनपूर्वकायुःश्रीवृद्धये जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात् । तदतिक्रमे एकादशे द्वादशे वा दिवसे कुर्यात् । तदभावे चित्रा, अनुराधा, रेवती, उत्तर३, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु । पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलक्ष्णेषु शुभम् ।

• **शिरोगेर्दुर्घपानमुहूर्तः** •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, पुनर्वसु, उत्तर३, पुष्य, चित्रा, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु । शुभतिथिषु । वृषसिंहवृद्धिककुम्भलग्नेषु स्नानपानं शुभम् । अन्नप्राशनोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु **सुतिकापथ्यं** शुभम् । औषधि—भ्रष्टणोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु **औषधिभक्षणं** शुभं स्यात् ।

• **सूतिकास्नानमुहूर्तः** •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, अनुराधा, उत्तर३, रेवतीनक्षत्रेषु । रविमङ्गलबृहस्पतिवारेषु । शुभलग्नेषु शुभदयुक्तेषु । १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम् । आश्लेषा, पूर्वा३, ज्येष्ठा, धनिष्ठानक्षत्रेषु मध्यमम् ।

• **प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्तः** •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तर३, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु । ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथिषु । ३, ५, ६, ७, ८, ११ लग्नेषु । शुभदिनेषु । पूर्वार्ण्ये शुभम् ।

• **स्त्रीणां लक्षाधरणधारणमुहूर्तः** •

भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, विशाखा, शतभिषारहितनक्षत्रेषु । शनिमङ्गलरहितदिनेषु । शुभतिथौ स्त्रीणां लक्षाधरण(लहटी) धारणं शुभम् ।

• **शिशुनिष्क्रमणमुहूर्तः** •

जन्मतो द्वादशेऽह्नि शुभम् । तदतिक्रमे तृतीये चतुर्थे वा मासि यात्रोक्ततिथिदिननक्षत्रेषु शुभं स्यात् ।

• **शिशोर्भुक्षुपवेशनमुहूर्तः** •

आदौ पृथ्वी वराहञ्च सम्पूज्य कुजबले पञ्चमे मासि । उत्तर३, रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त, पुष्य, अभिजिन्नक्षत्रेषु । रिक्तामारहिततिथिषु । शुभदिनेषु । वृषसिंहवृद्धिककुम्भलग्नेषु । शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत् । तन्मन्त्र—रघेन वसुधे देवि सदा सर्वगत शुभम् । आयुः प्रमाणं सकलं निश्चिपस्य हरिप्रिये ॥ अत्रैव शिशोरो वस्त्रम्, शस्त्रम्, लेखिनीम्, पुस्तकम्, सुवर्णं रीर्यं च स्थाप्यम् । तेषु बालो य गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति ।

• **शिशुविलोकनमुहूर्तः** •

तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्यफलवसद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम् ।

• **कण्ठवेधमुहूर्तः** •

१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत् । चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु । जन्मतारा विहाय श्रवणा, धनिष्ठा, हस्त, पुनर्वसु, उत्तर३, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधानक्षत्रेषु । १२, ६ मासे वा विषमवर्षे । चैत्रपौर्णमिराशयनरिकासमवर्षाणि त्यक्त्वा । २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नेषु । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० गतैः । पापैः ३, ६, ११ गतैः । लग्नस्थे गुरो शुद्धसमये शुभः ।

• **नामकरणमुहूर्तः** •

विप्राणां ११, १२, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम् । अथवा स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, उत्तर३, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधानक्षत्रेषु । १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु । चन्द्र—बुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु । पूर्वार्ण्ये शुभम् । मध्याह्ने मध्यमम् । शुभलग्ने । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० स्थिते । पापैः ३, ६, ११ स्थितैः । ८, १२ गतैः शुद्धे । चन्द्रे २, ३, ५, ९, १० स्थिते । लग्ने शुभाशौ पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारायुक्ते उन्नययणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम् ।

• **अन्नप्राशनमुहूर्तः** •

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु, बालकानां षष्ठात्सममासेषु । रोहिणी, उत्तर३, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्यनक्षत्रेषु । २, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथिषु । चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु । शुक्लपक्षे । पूर्वार्ण्ये । २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ लग्नेषु । एषु जन्मलग्नराशयोरष्टमलग्नमश च रहितेषु । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० स्थितैः । पापैः ३, ६, ११ गतैः । दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभदययुतलग्ने । ४, ६, ८, १२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम् ।

• **चूडाकरण(मुण्डन—आद्यकचकर्तन)मुहूर्तः** •

चैत्ररहितमाषादिषण्मासे अग्रहायणे च । ज्येष्ठाग्रहायणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना । विषमवर्षेषु । अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु । मतान्तरेण रोहिण्युत्तराग्रयेष्वपि । चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु । २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथिषु । शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे ५ यावत् । २, ३, ४, ८, ९, १२ एतद्वाशेलग्नमाशौ शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे । पापैः ३, ६, ११ गतैः । शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० गतैः । जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने । ८, १२ रहितचन्द्रे शुभम् ।

• **महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः** •

श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकं शान्तिपाठं कृत्वा कृशत्रयतिलजलान्यादाय सङ्कल्प्य—ॐ अद्य अमुके मासि अमुकं पक्षे अमुकतिथौ अमुकश्रेष्ठस्यास्य श्रीअमुकशर्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टहर्तितप्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्टवबलपुष्टिनैऋत्यप्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत—माध्यन्दिनशारादीयं “ॐ हौं ॐं जुं सः भूर्भुवः स्वः” इति महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसङ्ख्यकजपमहं करिष्यामि । ॐ हौं ॐं जुं सः (सप्तस्तमन्त्रः) अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्टाः ऋषयः पङ्क्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रा देवता हौं बीजं जुं शक्तिः सः कोलकं महामृत्युञ्जयश्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थं जपे विनियोगः । **ऋष्यादिन्यासः**—वामदेवकहोलवशिष्टऋषिभ्यो नमः **शिरसि** । पङ्क्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः **मुखे** । सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताभ्यो नमः **हृदि** । हौं बीजाय नमः**नाभौ** । जुं शक्तये नमः**पादयोः** । सः कोलकाय नमः**सर्वङ्गे** । ॐ हौं ॐं जुं सः भूर्भुवः स्वः इत्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा **हृदयाय नमः** । ॐ हौं ॐं जुं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय **शिरसि स्वाहा** । ॐ हौं ॐं जुं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा **शिखायै वषट्** । ॐ हौं ॐं जुं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारूकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय विपुरात्मकाय हौं हौं हौं **कवचाय हुम्** । ॐ हौं ॐं जुं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋषयः साममन्त्रत्रयाय नेत्रत्रयाय **वौषट्** । ॐ हौं ॐं जुं सः भूर्भुवः स्वः मामृताद् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलरूपाय मां रक्ष रक्ष अघोराय **अस्त्राय फट्** । इति षडङ्गन्यासः । ततः चन्द्रोद्भासितमूर्द्धं सुपति पीयूषपात्रं वहद्वस्त्राब्जेन दधत्सुदीजममलं हास्यास्यपङ्कुरहम् । सूर्यैर्द्धगिगविलोचनं करतले पाशाश्चसुराहकुशाम्भोजं विभ्रतमध्वं सुपतिं मृत्युञ्जयं सस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारेः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत् । जपसमाप्तौ च शाकत्पादिभिर्दशाराक्रमेण होमतर्पणामाजनाद्वाहणभोजनञ्च कारयेत् ।

**लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः**—ॐ जुं सः ।



• **उपनयन(खतबन्ध)मुहूर्तः** •

शुद्धसमये, उत्तरायणे माषाढिपणमासेषु, सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु (सामवेदिनां मङ्गलवारोऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथिषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्णे च शुभम्। मकरार्के पौषे ११, १२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढे १०,११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्विनी,रोहिणी,मृगशिरा,आर्द्रा, पुष्य, आश्लेषा, पूर्वा३, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु (अत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियुगादिषु, अपराह्णे, सायम्, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्याः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्वन्द्विक्रियः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरुः षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १,५,८ स्याः पापा न शुभाः। ६,८,१२ गताः शुभा न शुभप्रदाः। ३, ६, ११ गताः पापाः शुभदाः। पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतः शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः।

**गुरुशुद्धिः**—जन्मराशितः उपनयनकाले २,५,७,९,११ स्थानगतः गुरुः शुभः। ४,१०,१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १,३,६,८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १,३,६,१० स्थानगतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४,८,१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तम्, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तम्, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोक्तं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

**प्रदोषनिर्णयः**—यदा तृतीयायां ग्रहरात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धग्रहरात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवितदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

• **विवाहमुहूर्तः** •

मार्गमाषफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु सौक्रमेणे (मार्गे देवोत्थानात्परम्परायाः हरिशयनात्प्रागेव)। १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु। अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु पञ्चशलाकावैधरहितेषु। वृषमिथुनकन्यातुलाधनुमीनलग्नेषु। शुभग्रहेषु १,४,५,७,९,१० स्थितेषु, पापेषु ३,६,११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुः शुक्रौ वा १,४,५,७,९,१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठपक्षासह त्रिज्येष्ठसप्तकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं माध्यमं स्यात्। आवश्यकं कृतिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्ययोर्विवाहः शुभः।

• **वर-कन्या-वरणमुहूर्तः** •

शुभतिथिदिनलग्नेषु। कृतिका, पूर्वा३,अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषुपुष्यफलवस्त्रादिभिः वरवरणं कन्यावरणञ्च शुभम्।

• **सङ्गीतनृत्यवाद्यारम्भमुहूर्तः** •

शुभतिथिषु। शनिमङ्गलरहितदिनेषु। रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। लग्ने बुधे, मिथुनकन्यागते चन्द्रे शुभदृष्टे, चतुर्थे शुभग्रहे, सङ्गीताद्यारम्भः शुभः।

• **विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्तः** •

विवाहमुहूर्ते वैवाहिकमण्डपादिकम्, उपनयनादिमुहूर्ते च उपनयनादिमण्डपादिकं (आवश्यके शुभतिथिदिननक्षत्रेषु) विधेयम्।

• **बधूपवेशमहूर्तः** •

विवाहदिवसाद्योऽशदिनमध्ये समदिने पञ्चमसप्तमनवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे। चैत्रपौषभाद्रपयमासमलमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचारः कालविचारो वा। १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु। चन्द्रबृहस्पतिशुक्रशनिवारेषु। मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु। २, ३, ५, ६, ७, ८, ९, ११, १२ लग्नेषु। शुभैः १, २, ५, ७, १०, ११ स्थितैः। पापैः ३, ६, ११ स्थितैः। चतुर्षाष्टमशुद्धे शुभः।

• **हिरागमनमुहूर्तः** •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। १,२,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। रविचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु मृत्युयोगरहितेषु। २,३,६,७,१२ लग्नेषु शुभयुतदृष्टेषु। शुके १,४,७,१० गतैः। जीवे ३,६,१०,११ गते। पापैः ३,६,११ स्थितैः शुभम्। विषमवर्षे सौक्रमेण मार्गफाल्गुनवैशाखमासेषु। शुक्रबाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले, वामपृष्ठगते शुके, शुक्रोदिते हिरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। तृतीयादिविषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्वविहितं (रेवती, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि हिरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो विधेयः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले हिरागमनं शुभम्।

• **नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्तः** •

रोहिणी, मृगशिरा, उत्तरा३, पुष्य, कृतिका, विशाखा, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। बुधबृहस्पतिशनिवारेषु। शुभतिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। २, ५, ८, ११ लग्नेषु। लग्नात् चतुर्षाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलयुते सप्तमस्थे शुभः।

• **मासस्नानमुर्तः** •

विवाहदिनाद्योऽशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तम्। २, ३, ५, ७, १०, १३ तिथिषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वफल्गुनी, उत्तरफल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वातीनक्षत्रेषु। वृषमिथुनकन्यातुलालग्नेषु शुभम्।

• **देवताजालारापयवाटिकादिप्रतिष्ठाामुहूर्तः** •

चैत्ररहितोत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु। २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु। मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी, उत्तरा३ नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाय्यदेवताकतिथिदिननक्षत्रेषु देवताप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यम्, कुम्भे ब्रह्माणम्, मिथुने शङ्करं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीया। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रशुभैः ३, ६, ११ स्थितैः। शुभैः १२, ८ भिन्नस्थानगतैः देवताप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहान् पुष्ट्यै, बुद्धं श्रवणायाम्, गणेशादीन् रेवत्या स्थापयेत्। भगवतो देवोत्थानैकादश्या रामनवम्याम्, कृष्णाष्टम्याम्। देव्याः नवरात्रे, दीपमालिकायाम्, जानकीनवम्याम्। शङ्करस्य शिवरात्रौ (माषफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्याम्) वा शुभं प्रतिष्ठानम्।

• **तडागवापीकूपोदिखनन(चापाकल—नल—बोरिङ्गस्थापनं)मुहूर्तः** •

विचैत्रोत्तरायणे, शुक्लपक्षे, शुद्धसमये। रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, उत्तरा३, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ४, १०, ११, १२ लग्नेषु राशिषु च। शुके दशमस्थे, बृहस्पतिबुधयोर्मन्तरस्थलग्ने, पापैः निर्बले, शुभैः सुबलिभिः, शुद्धे तडागवापीकूपखनन(चापाकल—नल—बोरिङ्गस्थापनं)चक्रे शुभम्।

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (बालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमापि) गणेशविष्णुसरस्वतालक्ष्माकुलग्रामदेवताः स्थापयितुं शुभम्। पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अभिजित्, श्रवणा, रेवतीनक्षत्रेषु। २,३,५,६,१०,११,१२ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। चन्द्र—बुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। वृषमिथुनकन्याधनुमीनलग्नेषु तत्रवारो चोत्तमः। कुम्भाशकं विनाऽष्टमशुद्धे, गुरौ दशमे, बुधे सप्तमे, शुके लग्ने ग्रहबलाढ्ये शुभः।

• **विद्यारम्भमुहूर्तः** •

उत्तरायणे गणेशविष्णुलक्ष्मीसरस्वतीकुलग्रामदेवतााः सम्पूज्य अक्षराहणे दृढे सङ्गते सति। सूर्यबुधबृहस्पतिशुक्रवारेषु। २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथिषु। अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, पूर्वा३, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० गतैः, पापैः ३, ६, ११ गतैः। वृषमिथुनकन्याधनुमीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

• **दीक्षाग्रहणमुहूर्तः** •

अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। अत्यावश्यकं कृष्णपक्षे ५ यावत्। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुद्धसमये प्रातः मध्याह्ने वा। २, ३, ५, ७, ९, १२ लग्नेषु। शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० गतैः, पापैः ३, ६, ११ स्थितैः। वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, अग्रहायण, माघ, फाल्गुनमासेषु (सौक्रमेण)। सङ्क्रान्ती, पूर्णिमायाम्, नवरात्रमध्ये, सूर्यग्रहणे, सिद्धि क्षेत्रे, मन्वादि—युगादिषु च मुहूर्तं विनाऽपि दीक्षाग्रहणं शुभम्।

• **व्रतोद्यापनमुहूर्तः** •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिदिवसेषु दिवसे वा। कार्तिक, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढमासेषु। कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनञ्च शुद्धसमये वृद्धिकसङ्क्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे सति सम्भवे शुद्धसमये कार्यम्। शुभलग्नेषु। शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० स्थितैः, पापैः ३, ६, ११ स्थितैः, पञ्चमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्धभावेऽपि परमावश्यकं शुभम्।

• **पुराणादिश्रवणमुहूर्तः** •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणानक्षत्रेषु। २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे ५ यावत्। शुभलग्ने। लग्ने शुभयुगदृष्टे बलाढ्ये। शुभैः १, ४, ५, ७, ९, १० स्थितैः, पापैः ३, ६, ११ स्थितैः। उत्तरायणे। श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गमासेषु शुभम्। तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धक्षेत्रे, पर्वविशेषे, नवरात्रादौ च मुहूर्तं विनाऽपि शुभम्।

• **कल्याणार्थं शान्तिमुहूर्तः** •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुद्धसमये, आवश्यकोऽशुद्धेऽपि। चैत्रपौषभाद्रमलमास—क्षयमासरहिते शुभम्। शुभलग्ने, लग्नस्थे गुरौ, चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्तिः शुभा।

• **स्वामिसेवा(नैकी)मुहूर्तः** •

अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित्, रेवतीनक्षत्रेषु। सूर्यबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिलग्नेषु। लग्ने शुभयुते, सूर्ये कुजे वा १०, ११ स्थिते, सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्या राशीराशौष्ठापि मैत्र्या सत्यां सेवारम्भः शुभः।

• **इन्धनस्थापनमुहूर्तः** •

शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्। तत्र सूर्यनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभम्, ततः ६ अशुभम्, ततः ४ शुभम्, ततः ८ अशुभम्, ततः ४ शुभम्।



• देवालयारम्भगृहारम्भजलाशयारम्भे छातदिशानम् •					• सूर्यभातडागचक्रम् •				
छातदिक्	नैऋत्याम्	आग्नेयाम्	ऐशान्याम्	वायव्याम्	स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि		
देवालयारम्भे	ध.म.कु.सूचं	मी.मे.वृ.सूचं	मि.क.सि.सूचं	क.तु.व.सूचं	पूर्वे	०२	जलशायः		
जलाशयात्तम्भे	वृ.वृ.ध.सूचं	म.कु.मी.सूचं	मे.वृ.मि.सूचं	क.सि.क.सूचं	आग्नेये	०३	बहुजलम्		
गृहारम्भे	वृ.मि.क.सूचं	मि.क.तु.सूचं	वृ.ध.म.सूचं	कु.मी.मे.सूचं	दक्षिणे	०२	जलहानिः		
• गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात् •					• गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात् •				
स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि	स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि				
शोषे	०३	अग्निधनम्	मुखे	०१	अग्निदाहः				
अन्नभादे	०४	शान्तम्	पूर्वे	०४	उद्धसनम्				
पुष्टपादे	०४	स्वीर्यम्	दक्षिणे	०४	लाभः				
पुष्टे	०३	धनम्	पश्चिमे	०४	धनम्				
दक्षोदे	०४	लाभः	उत्तरे	०४	कलहः				
पुच्छे	०३	नाशः	मध्ये	०४	विनाशः				
कामोदे	०३	धननाशः	आग्नेयान्	०३	स्थिरता				
मुखे	०३	कष्टम्	कण्ठे	०३	स्थिरता				
• हवनचक्रं सूर्यभात् •					• रोहिणीषाढापीचक्रम् •				
नक्षत्रम्	ग्रहाः	फलानि	स्थानम्	नक्षत्रम्	फलानि				
०३	सूर्यः	अशुभम्	पुष्टे	०४	शुभजलम्				
०३	चन्द्रः	शुभम्	नाभौ	०४	बुद्धिनाशः				
०३	शुक्रः	अशुभम्	हृदि	०४	स्थिरता				
०३	शनिः	अशुभम्	मध्ये	०४	कलहः				
०३	बुधः	अशुभम्	नेत्रयोः	०४	धननाशः				
०३	मङ्गलः	अशुभम्	पादयोः	०४	दुःखम्				
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							
०३	बुधः	अशुभम्							
०३	मङ्गलः	अशुभम्							
०३	शुक्रः	अशुभम्							
०३	शनिः	अशुभम्							



• चिह्नपादियोगचक्र तिथिदिनखवशेन •						
दिनानि	रविः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः
सिद्धियोगः	३, ८, १३	१, ६, ११	३, ८, १३	२, ७, १२	५, १०, १५	१, ६, ११
अमृतयोगः	५, १०, १५	५, १०, १५	२, ७, १२	१, ६, ११	३, ८, १३	४, ९, १४
सर्वार्थसिद्धि योगः	अश्विनी, पुष्य, हस्त, मूल	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, श्रवणा	अश्विनी	रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, रेवती	अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवणा, रेवती
मृत्युयोगः	१, ६, ११	२, ७, १२	१, ६, ११	३, ८, १३	४, ९, १४	२, ७, १२
राज्यप्रदयोगः	—	—	४, ९, १४	—	—	—
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२

• ताराचक्रम् •						
ताराः	जन्म	सम्यत्	विपत्	क्षेमः	प्रत्यारिः	साधकः
नक्षत्राणि	१, १०, १९	२, ११, २०	३, १२, २१	४, १३, २२	५, १४, २३	६, १५, २४
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	—	गुडम्	—	लवणम्	—
जन्मनामग्रामनक्षत्राद्याः भौतदिनवधिं गणयित्वा नवभिर्हरेत्। शेषं तारा स्यात्। तत्र २, ४, ६, ८, ९ ताराः शुभदाः। प्रथमतया मध्यमा। ३, ७ अशुभदा। विशेषः—सर्वेषु शुभकार्येषु ताराविचारः कर्तव्यः। पञ्चमतया आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा च भवेत्तत् प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृत्तेस्तया अशुभा, तत्र दानं कार्यम्।						
• कालशूलम्—उप काले पूर्वस्याम्, मध्याह्ने दक्षिणस्याम्, सायंकाले (गोधुल्याम्) पश्चिमाम्याम्, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्, कालशूलदोषत्वात्।						
• युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम् •						
सञ्ज्ञा	नक्षत्राणि	तिथयः		दिनानि		फलानि
कुलः	अश्विनी, कृतिका, मृगशिरा, पुष्य, मघा, पूर्वा३, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, श्रवणा	४, ८, १२, १४		मङ्गल, शुक्र		स्थायिजयदः (मुद्गलह)
अकुलः	भरणी, रोहिणी, पुनर्वसु, आश्लेषा, उत्तरा३, हस्त, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती	१, ३, ५, ७, ११, १३, १५		सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शनि		यायिजयदः (मुद्गई)
कुलाकुलः	आर्द्रा, मूल, अभिजित्, शतभिषा	२, ६, १०		बुध		उभयोः सन्धिः

• नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रम् •			
सञ्ज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभः	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाश्वः	रोहिणी, पुष्य, उत्तरफल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा, रेवती	शरीरलाभः	पूर्वस्याम्
मन्दश्वः	मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ, शतभिषा, अश्विनी	प्रयत्नाल्लाभः	दक्षिणस्याम्
मध्याश्वः	आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित्, पूर्वाभाद्र, भरणी	दूतं श्रवणमल्लाभः	पश्चिमाम्याम्
सुलोचनः	पुनर्वसु, पूर्वफल्गुनी, स्वाती, मूल, श्रवणा, उत्तरभाद्र, कृतिका	अलाभः	उत्तरस्याम्

• खलकस्थापनमुहूर्तः—ग्रामसमीपे उच्चप्रदेशे प्रसन्नभूमौ शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्।

• धान्यच्छेदनमुहूर्तः •

मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा, पूर्वभाद्र, हस्त, कृतिका, धनिष्ठा, श्रवणा, मृगशिरा, स्वाती, मघा, उत्तरा३, पूर्वाषाढ, भरणी, चित्रा, पुष्यनक्षत्रेषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु। २, ५, ८, ११ लघ्नेषु शुभम्। अन्यान्त्यपि यवगोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि।

• मेधिरोगमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुभतिथि—दिन—लघ्नेषु मेधिरोगेण शुभम्।

• वर्षरावशेन मेधिविचारः •

वर्षेण सूर्ये वंशस्य, चन्द्रे शिम्बरस्य, मङ्गले कदम्बरस्य, बुधे उदुम्बरस्य, गुरौ आम्रस्य, भुगुजे पलाशस्य, शनौ निम्बरस्य मेधिरोगेण शुभम्।

• कणमर्दनमुहूर्तः •

मघा, पूर्वफल्गुनी, उत्तरफल्गुनी, रोहिणी, ज्येष्ठा, मूल, अनुराधा, श्रवणा, रेवतीनक्षत्रेषु। शुभतिथिदिनलघ्नेषु शुभम्।

• धान्यस्थापनमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। शुभतिथिदिनयोः, २, ३, ५, ८, ९, १०, ११, १२ लघ्नेषु शुभम्।

• धान्यवृद्धिमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुभतिथिदिनलघ्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

• बीजस्थापनमुहूर्तः •

रोहिणी, मृगशिरा, मघा, हस्त, स्वाती, मूल, उत्तराषाढ, पूर्वभाद्र, रेवतीनक्षत्रेषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुक्रलपथे, कृष्णपथे ५ यावत्। २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु। २, ५, ८, ११ लघ्नेषु शुभम्।

• बीजवपनमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, पुष्य, रेवतीनक्षत्रेषु। २, ३, ५, ८, १०, ११, १२, १५ तिथिषु। चन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभलघ्नेषु, लघ्ने शुभद्वयुते, शुभे केन्द्रकोणयोः, पापे त्रिषङ्गायनैः शुभम्।

• हलप्रवहणमुहूर्तः •

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, मघा, उत्तरा३, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, मूल, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। चन्द्रमङ्गलबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिषु। शुभलघ्नेषु। पापे निर्वर्त्तैः, शुभे सुबलिभिः, चन्द्रे जलचरराशिस्थे तत्रवारो वा, गुरौ लग्नस्थे, शुके विधौ च पुष्टे शुभम्।

• धान्यरोपणमुहूर्तः •

रोहिणी, उत्तरफल्गुनी, विशाखा, मूल, शतभिषा, पूर्वभाद्रपदनक्षत्रेषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिषु, शुभलघ्नेषु च शुभम्।

• कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्तः •

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवणा, धनिष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु। सूर्यमङ्गलबुधशुक्रदिनेषु। शुद्धसमये। ३, ५, ८, १०, १३, १५ तिथिषु। शुभग्रहयुक्तलघ्नेषु शुभम्।

• त्रिविधप्रवेशः—दिवा नृप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः शुभः।

• अग्निवासचक्रम् •											
शुक्रलपथे	कृष्णपथे	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	शुक्रलपथे	कृष्णपथे	रवि
१ ५ ९ १३ २ ६ १० १४	२ ६ १० १४	भुवि	भुवि	दिवि	भुतले	भुवि	भुवि	दिवि	१ ५ ९ १३ २ ६ १० १४	२ ६ १० १४	भुवि
२ ६ १० १४ ३ ७ ११ ३०	३ ७ ११ ३०	भुवि	दिवि	भुतले	भुवि	भुवि	दिवि	भुतले	२ ६ १० १४ ३ ७ ११ ३०	३ ७ ११ ३०	भुवि
३ ७ ११ १५ — ४ ८ १२	४ ८ १२	दिवि	भुतले	भुवि	भुवि	दिवि	भुतले	भुवि	३ ७ ११ १५ — ४ ८ १२	४ ८ १२	दिवि
— ४ ८ १२ १ ५ ९ १३	५ ९ १३	भुतले	भुवि	भुवि	दिवि	भुतले	भुवि	भुवि	— ४ ८ १२ १ ५ ९ १३	५ ९ १३	भुतले
फलम्—भुवि सौख्यम्, दिवि प्राणनाशः, भुतले च धननाश इति ज्ञेयम्। विधि—(शुक्रलदितिथिसङ्ख्या+सूर्यादिदिनसङ्ख्या+१)×४=३० शेषे शुभः। १, २ शेषे अशुभः।											
• पार्थिवशिवपूजाया विहिततिथयः—शुक्रलपथे—२, ५, ६, ९, १२, १३, कृष्णपथे—१, ४, ५, ८, ११, १२, ३० शिवस्यामिकत्वादष्टमीवतुर्दशौ अपि शुभे। विधि—(शुक्रलदितिथिसङ्ख्या X २ + ५) + ७ = १, २, ३ शेषे शुभम्। अन्यदशुभम्। १ शेषे कैलाशः, २ शेषे गौरिसिन्धौ, ३ शेषे वृषाकृदः शिवः अभौष्टः स्यात्।											
• हलचक्रमकेभूकृभात् •				• बीजवपने क्रमिकर राहुभात् •							
नक्षत्रम्	३	८	९	८	नक्षत्रम्	८	३	१	३	१	३
फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

• ऋणप्रदानमुहूर्तः(द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः) •

स्वाती, पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, विशाखा, पुष्य, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषानक्षत्रेषु। शुभतिथिषु, १, ४, ७, १० लघ्नेषु, लघ्ने शुभयुगपष्टे, ५, ८, ९ ग्रहरहिते, चन्द्रगुरुशुक्रशनिदिनेषु शुभम्। ऋणदाने निषिद्धसमयः—बुधवासरः, भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्वा३, चित्रा, ज्येष्ठा, नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च।

• ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः—रविभौमदिने। सहकान्तिः। वृद्धियोगः। हस्तनक्षत्रम्। एषु ऋणार्पणं शुभम्।

• विपणिमुहूर्तः •

अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तरा३, अनुराधा, अभिजित्, रेवतीनक्षत्रेषु। १, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ तिथिषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रशनिदिनेषु। शुक्रलपथे, कृष्णे १० यावत्। १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२ लघ्नेषु, लघ्ने चन्द्रशुके, पापेः ८, २ रहितैः, शुभैः २, १०, ११ स्थितैः शुभा।

• मौलचालनमुहूर्तः •

अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवतीनक्षत्रेषु। शुभतिथिदिनेषु। चरलग्नेषु। शुभे १, २, ४, ५, ७, १० स्थितैः, पापेः ३, ६, ११ स्थितैः शुभम्।

• वस्तुनां क्रयमुहूर्तः—शुभतिथिदिनलघ्नेषु। अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवणा, शतभिषा, रेवतीषु शुभः।

• रक्तमोक्षण(ऑपरेशन)मुहूर्तः—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवणा, शतभिषानक्षत्रेषु। सूर्यमङ्गलबृहस्पतिदिनेषु। शुभतिथिलघ्नेषु शुभा।



प्रथमलालनसारिणी—इशा-रंग-यश-गन्त-पटोपल-रवा-भोशना-डोपल-सुन-वड। यडाश-भागम्य-तले-स्थित-भवन-दव-लान-वड-कलानुपातान्॥																														इशा-रंग-यश-गन्त-पटोपल-रवा-भोशना-डोपल-सुन-वड। यडाश-भागम्य-तले-स्थित-भवन-दव-लान-वड-कलानुपातान्॥							
अश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९							
मेष	०२	०२	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०६
३	४७	५४	०१	०८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	०३	११	१९	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	००	०८	१६	२५	३३	४२							
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	४२	०७	२९	४१	०३	३८	५०	१२	२४	४६	०८	३०	४२	०७
वृष	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	
४	५०	५८	०७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	०९	११	२९	३९	४९	५९	०९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१		
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	०६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	
५	४१	५१	०१	११	२१	३१	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४५	५७	०९	२०	३३	४३	५४	०६	१७	२९	४०	५२	६२	७२	८२	९२	१०२	११२		
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	
कर्क	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५	०७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६		
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८	४८	२८	४८	२८	४८		
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६		
५	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५५	०७	१९	२९	४०	५२	०३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	०७	१८	२९	४०	५१	६२	७३	८४		
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२		
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१		
५	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४१	५२	०३		
३८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२		
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६		
५	१९	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४१		
३८	०८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२		
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२		
५	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०	४१	५२	०३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	०७	१९	३०		
४७	०२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	०८	२४	४०	५६	१२		
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८		
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९		
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	०६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	०४	३८	१२	४६	२०	५४	२८	४८	२८	४८	२८	४८		
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३		
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	०१	११	२१	३१	४१	५१	०२	१२	२२	३२	४२	५२	०३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३	१०३		
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२४	४४	०६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	०८	३०	४२	५४	०६	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०	६६		
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७		
४	२३	३१	४०	४८	५६	०५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	०५	१२	२०	२७	३४																			



**\* औषधिपञ्चगुह्यम् \***  
अश्विनो, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणीनक्षत्रेषु। सूर्यचन्द्रबुधबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। ३, ६, ९, १२ लग्नेषु, शुभे: ३, ६, ९, १२ गणिते, लग्नात् ७, ८, १२ ग्रहहितेषु औषधिपञ्चगु शुभम्। जन्मनक्षत्रे औषधिपञ्चगुमशुभम्।

**\* चिकित्सागुह्यम् \***  
अश्विनो, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवणा, शतभिषानक्षत्रेषु। सूर्यचन्द्रमङ्गलबृहस्पतिशुक्रदिनेषु। शुभतिथिलग्न्येषु शुभम्।

**\* उरुधर्मगुह्यम् \***  
भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, पूर्वा३, ज्येष्ठा, मूलनक्षत्रेषु। मङ्गलशनिदिनेषु। १, ८, १०, ११ लग्नेषु। १, ३, ४, ५, ९, १०, ११, १४ तिथिषु शुभम्।

**\* केटरवधसप्तविंशत्यनदिचालनगुह्यम् \***  
अश्विनो, मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवतीनक्षत्रेषु। चन्द्रमङ्गलबृहस्पतिशुक्रशनिदिनेषु। १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथिषु। चतुर्थेशे बलयुक्ते १, ४, ५, ७, ९, १० स्थिते, लग्नेशदशमेशनवमेशेऽपि १, ४, ५, ७, ९, १० गतेर्बलयुक्ते, पापे: ३, ६, ११ स्थानस्थिते: यानादिचालने शुभम्।

**\* चरकारकग्रहाः \*** ग्रहेषु सर्वाधिकशान्तात्मकारकस्तत्रतुनाशक्रमेणमात्य-धातुमातृ-पितृपुत्रातिकारकाः ज्ञेयाः। अशसाम्ये कलाधिक्यम्, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्।

**\* स्थिरकारकाः \*** तन्वादिभावानां क्रमेण सूर्य-बृहस्पति-मङ्गल-चन्द्रबृहस्पति-बृहस्पति-मङ्गल-शुक्र-शनि-बृहस्पति-बुध-शुक्र-शनयः स्थिरकारका भवन्ति।

**\* स्वर्णादिवरणकजन्मज्ञानम् \*** जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १, ६, ११ स्थिते स्वर्णपादे, १, ५, ९ स्थिते रजतपादे, ३, ७, १० स्थिते ताम्रपादे, ४, ८, १२ स्थिते लोहपादे जन्म ज्ञेयम्।

**\* आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु \*** रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रपदपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकाद्विंशेषु लोहपादे जन्म भवति। तेषां फलम्-स्वर्णपादेष्वुक्तम्, रजतपादे शोभनम्, ताम्रपादे मध्यमम्, लोहपादे च हीनफलमिति।

**\* द्वादशनाड्यवयवम् \***  
द्भिघ्नेष्टनाड्यः पञ्चाष्टा यन्त्रेषु पलीकृतम्। दशाष्टमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत्।।

**\* होरावक्रम् \***

राशि	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१५°	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र
३०°	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य

• राशीनां स्वाभिचरदिसंज्ञाभावादिवक्रम् •												
राशि	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
स्वामी <td>मङ्गल<td>शुक्र<td>बुध<td>चन्द्र<td>सूर्य<td>बुध<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	मङ्गल <td>शुक्र<td>बुध<td>चन्द्र<td>सूर्य<td>बुध<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	शुक्र <td>बुध<td>चन्द्र<td>सूर्य<td>बुध<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	बुध <td>चन्द्र<td>सूर्य<td>बुध<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	चन्द्र <td>सूर्य<td>बुध<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td></td></td></td></td>	सूर्य <td>बुध<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td></td></td></td>	बुध <td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td></td></td>	शुक्र <td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td></td>	मङ्गल <td>बृहस्पति<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td></td>	बृहस्पति <td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति</td></td></td>	शनि <td>शनि<td>बृहस्पति</td></td>	शनि <td>बृहस्पति</td>	बृहस्पति
संज्ञा <td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	चर <td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	स्थिर <td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	द्विस्वभाव <td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	चर <td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td></td></td></td></td>	स्थिर <td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td></td></td></td>	द्विस्वभाव <td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td></td></td>	चर <td>स्थिर<td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td></td>	स्थिर <td>द्विस्वभाव<td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td></td>	द्विस्वभाव <td>चर<td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td></td>	चर <td>स्थिर<td>द्विस्वभाव</td></td>	स्थिर <td>द्विस्वभाव</td>	द्विस्वभाव
प्रकृति <td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	पित्त <td>वात<td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	वात <td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	सम <td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	कफ <td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td></td></td></td></td>	पित्त <td>वात<td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td></td></td></td>	वात <td>सम<td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td></td></td>	सम <td>कफ<td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td></td>	कफ <td>पित्त<td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td></td>	पित्त <td>वात<td>सम<td>कफ</td></td></td>	वात <td>सम<td>कफ</td></td>	सम <td>कफ</td>	कफ
आकृति <td>ह्रस्व<td>ह्रस्व<td>सम<td>सम<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	ह्रस्व <td>ह्रस्व<td>सम<td>सम<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	ह्रस्व <td>सम<td>सम<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	सम <td>सम<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	सम <td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td></td></td></td></td>	दीर्घ <td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td></td></td></td>	दीर्घ <td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td></td></td>	दीर्घ <td>दीर्घ<td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td></td>	दीर्घ <td>सम<td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td></td>	सम <td>सम<td>ह्रस्व<td>सम</td></td></td>	सम <td>ह्रस्व<td>सम</td></td>	ह्रस्व <td>सम</td>	सम
जाति <td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	क्षत्रिय <td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	वैश्य <td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	शूद्र <td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	विप्र <td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td></td></td></td></td>	क्षत्रिय <td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td></td></td></td>	वैश्य <td>शूद्र<td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td></td></td>	शूद्र <td>विप्र<td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td></td>	विप्र <td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td></td>	क्षत्रिय <td>वैश्य<td>शूद्र<td>विप्र</td></td></td>	वैश्य <td>शूद्र<td>विप्र</td></td>	शूद्र <td>विप्र</td>	विप्र
घातमास <td>कार्तिक<td>मार्ग<td>आषाढ<td>पौष<td>ज्येष्ठ<td>भाद्र<td>मार्ग<td>आषाढ<td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	कार्तिक <td>मार्ग<td>आषाढ<td>पौष<td>ज्येष्ठ<td>भाद्र<td>मार्ग<td>आषाढ<td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	मार्ग <td>आषाढ<td>पौष<td>ज्येष्ठ<td>भाद्र<td>मार्ग<td>आषाढ<td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	आषाढ <td>पौष<td>ज्येष्ठ<td>भाद्र<td>मार्ग<td>आषाढ<td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	पौष <td>ज्येष्ठ<td>भाद्र<td>मार्ग<td>आषाढ<td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td></td></td></td></td>	ज्येष्ठ <td>भाद्र<td>मार्ग<td>आषाढ<td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td></td></td></td>	भाद्र <td>मार्ग<td>आषाढ<td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td></td></td>	मार्ग <td>आषाढ<td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td></td>	आषाढ <td>श्रावण<td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td></td>	श्रावण <td>वैशाख<td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td></td>	वैशाख <td>चैत्र<td>फाल्गुन</td></td>	चैत्र <td>फाल्गुन</td>	फाल्गुन
घाततिथि <td>नन्दा<td>पूर्णा<td>भद्रा<td>भद्रा<td>जया<td>पूर्णा<td>रिक्ता<td>नन्दा<td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	नन्दा <td>पूर्णा<td>भद्रा<td>भद्रा<td>जया<td>पूर्णा<td>रिक्ता<td>नन्दा<td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	पूर्णा <td>भद्रा<td>भद्रा<td>जया<td>पूर्णा<td>रिक्ता<td>नन्दा<td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	भद्रा <td>भद्रा<td>जया<td>पूर्णा<td>रिक्ता<td>नन्दा<td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	भद्रा <td>जया<td>पूर्णा<td>रिक्ता<td>नन्दा<td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td></td></td></td></td>	जया <td>पूर्णा<td>रिक्ता<td>नन्दा<td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td></td></td></td>	पूर्णा <td>रिक्ता<td>नन्दा<td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td></td></td>	रिक्ता <td>नन्दा<td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td></td>	नन्दा <td>जया<td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td></td>	जया <td>रिक्ता<td>जया<td>पूर्णा</td></td></td>	रिक्ता <td>जया<td>पूर्णा</td></td>	जया <td>पूर्णा</td>	पूर्णा
दिन <td>रवि<td>शनि<td>चन्द्र<td>बुध<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति<td>शुक्र<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	रवि <td>शनि<td>चन्द्र<td>बुध<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति<td>शुक्र<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	शनि <td>चन्द्र<td>बुध<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति<td>शुक्र<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	चन्द्र <td>बुध<td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति<td>शुक्र<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	बुध <td>शनि<td>शनि<td>बृहस्पति<td>शुक्र<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td></td></td></td></td>	शनि <td>शनि<td>बृहस्पति<td>शुक्र<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td></td></td></td>	शनि <td>बृहस्पति<td>शुक्र<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td></td></td>	बृहस्पति <td>शुक्र<td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td></td>	शुक्र <td>शुक्र<td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td></td>	शुक्र <td>मङ्गल<td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td></td>	मङ्गल <td>बृहस्पति<td>शुक्र</td></td>	बृहस्पति <td>शुक्र</td>	शुक्र
नक्षत्र <td>मघा<td>हस्त<td>स्वाती<td>अनुराधा<td>मूल<td>श्रवणा<td>शतभिषा<td>रेवती<td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	मघा <td>हस्त<td>स्वाती<td>अनुराधा<td>मूल<td>श्रवणा<td>शतभिषा<td>रेवती<td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	हस्त <td>स्वाती<td>अनुराधा<td>मूल<td>श्रवणा<td>शतभिषा<td>रेवती<td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	स्वाती <td>अनुराधा<td>मूल<td>श्रवणा<td>शतभिषा<td>रेवती<td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	अनुराधा <td>मूल<td>श्रवणा<td>शतभिषा<td>रेवती<td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td></td></td></td></td>	मूल <td>श्रवणा<td>शतभिषा<td>रेवती<td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td></td></td></td>	श्रवणा <td>शतभिषा<td>रेवती<td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td></td></td>	शतभिषा <td>रेवती<td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td></td>	रेवती <td>भरणी<td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td></td>	भरणी <td>रोहिणी<td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td></td>	रोहिणी <td>आर्द्रा<td>आश्लेषा</td></td>	आर्द्रा <td>आश्लेषा</td>	आश्लेषा
योग <td>विक्कम्भ<td>सूकर्मा<td>परिच<td>व्याघात<td>धृति<td>शुभ<td>शुक्ल<td>व्यतीपात<td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	विक्कम्भ <td>सूकर्मा<td>परिच<td>व्याघात<td>धृति<td>शुभ<td>शुक्ल<td>व्यतीपात<td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	सूकर्मा <td>परिच<td>व्याघात<td>धृति<td>शुभ<td>शुक्ल<td>व्यतीपात<td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	परिच <td>व्याघात<td>धृति<td>शुभ<td>शुक्ल<td>व्यतीपात<td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	व्याघात <td>धृति<td>शुभ<td>शुक्ल<td>व्यतीपात<td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td></td></td></td></td>	धृति <td>शुभ<td>शुक्ल<td>व्यतीपात<td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td></td></td></td>	शुभ <td>शुक्ल<td>व्यतीपात<td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td></td></td>	शुक्ल <td>व्यतीपात<td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td></td>	व्यतीपात <td>वज्र<td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td></td>	वज्र <td>वैधृति<td>गण्ड<td>वज्र</td></td></td>	वैधृति <td>गण्ड<td>वज्र</td></td>	गण्ड <td>वज्र</td>	वज्र
करण <td>वव<td>शकुनि<td>चतुर्द्वि<td>नाग<td>वव<td>कौलव<td>तैत्तिल<td>गर<td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	वव <td>शकुनि<td>चतुर्द्वि<td>नाग<td>वव<td>कौलव<td>तैत्तिल<td>गर<td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	शकुनि <td>चतुर्द्वि<td>नाग<td>वव<td>कौलव<td>तैत्तिल<td>गर<td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	चतुर्द्वि <td>नाग<td>वव<td>कौलव<td>तैत्तिल<td>गर<td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	नाग <td>वव<td>कौलव<td>तैत्तिल<td>गर<td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td></td></td></td></td>	वव <td>कौलव<td>तैत्तिल<td>गर<td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td></td></td></td>	कौलव <td>तैत्तिल<td>गर<td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td></td></td>	तैत्तिल <td>गर<td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td></td>	गर <td>तैत्तिल<td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td></td>	तैत्तिल <td>शकुनि<td>वाणिज<td>विष्टि</td></td></td>	शकुनि <td>वाणिज<td>विष्टि</td></td>	वाणिज <td>विष्टि</td>	विष्टि
प्रहर <td>१<td>४<td>३<td>१<td>१<td>१<td>४<td>१<td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	१ <td>४<td>३<td>१<td>१<td>१<td>४<td>१<td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	४ <td>३<td>१<td>१<td>१<td>४<td>१<td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	३ <td>१<td>१<td>१<td>४<td>१<td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	१ <td>१<td>१<td>४<td>१<td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td></td></td></td></td>	१ <td>१<td>४<td>१<td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td></td></td></td>	१ <td>४<td>१<td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td></td></td>	४ <td>१<td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td></td>	१ <td>१<td>४<td>३<td>४</td></td></td></td>	१ <td>४<td>३<td>४</td></td></td>	४ <td>३<td>४</td></td>	३ <td>४</td>	४
पुरुषचन्द्र <td>१<td>५<td>९<td>२<td>६<td>१०<td>३<td>७<td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	१ <td>५<td>९<td>२<td>६<td>१०<td>३<td>७<td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	५ <td>९<td>२<td>६<td>१०<td>३<td>७<td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	९ <td>२<td>६<td>१०<td>३<td>७<td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	२ <td>६<td>१०<td>३<td>७<td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td>	६ <td>१०<td>३<td>७<td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td></td></td></td>	१० <td>३<td>७<td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td></td></td>	३ <td>७<td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td></td>	७ <td>४<td>८<td>११<td>१२</td></td></td></td>	४ <td>८<td>११<td>१२</td></td></td>	८ <td>११<td>१२</td></td>	११ <td>१२</td>	१२
स्त्रीचन्द्र <td>१<td>८<td>७<td>९<td>४<td>३<td>६<td>२<td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	१ <td>८<td>७<td>९<td>४<td>३<td>६<td>२<td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	८ <td>७<td>९<td>४<td>३<td>६<td>२<td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	७ <td>९<td>४<td>३<td>६<td>२<td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td></td>	९ <td>४<td>३<td>६<td>२<td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td></td></td></td></td>	४ <td>३<td>६<td>२<td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td></td></td></td>	३ <td>६<td>२<td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td></td></td>	६ <td>२<td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td></td>	२ <td>१०<td>११<td>५<td>१२</td></td></td></td>	१० <td>११<td>५<td>१२</td></td></td>	११ <td>५<td>१२</td></td>	५ <td>१२</td>	१२
• ग्रहाणामुज्वादिषोडशचक्रम् •												
ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु			
उज्ज्व <td>मेघ १०°<td>वृष ३°<td>मकर २८°<td>कन्या १५°<td>कर्क ५°<td>मीन २७°<td>तुला २०°<td>मिथुन<td>धनु<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	मेघ १०° <td>वृष ३°<td>मकर २८°<td>कन्या १५°<td>कर्क ५°<td>मीन २७°<td>तुला २०°<td>मिथुन<td>धनु<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	वृष ३° <td>मकर २८°<td>कन्या १५°<td>कर्क ५°<td>मीन २७°<td>तुला २०°<td>मिथुन<td>धनु<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	मकर २८° <td>कन्या १५°<td>कर्क ५°<td>मीन २७°<td>तुला २०°<td>मिथुन<td>धनु<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	कन्या १५° <td>कर्क ५°<td>मीन २७°<td>तुला २०°<td>मिथुन<td>धनु<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	कर्क ५° <td>मीन २७°<td>तुला २०°<td>मिथुन<td>धनु<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	मीन २७° <td>तुला २०°<td>मिथुन<td>धनु<td colspan="3"></td></td></td></td>	तुला २०° <td>मिथुन<td>धनु<td colspan="3"></td></td></td>	मिथुन <td>धनु<td colspan="3"></td></td>	धनु <td colspan="3"></td>			
नीच <td>तुला १०°<td>वृश्चिक ३°<td>कर्क २८°<td>मीन १५°<td>मकर ५°<td>कन्या २७°<td>मेघ २०°<td>धनु<td>मिथुन<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	तुला १०° <td>वृश्चिक ३°<td>कर्क २८°<td>मीन १५°<td>मकर ५°<td>कन्या २७°<td>मेघ २०°<td>धनु<td>मिथुन<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	वृश्चिक ३° <td>कर्क २८°<td>मीन १५°<td>मकर ५°<td>कन्या २७°<td>मेघ २०°<td>धनु<td>मिथुन<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	कर्क २८° <td>मीन १५°<td>मकर ५°<td>कन्या २७°<td>मेघ २०°<td>धनु<td>मिथुन<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	मीन १५° <td>मकर ५°<td>कन्या २७°<td>मेघ २०°<td>धनु<td>मिथुन<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	मकर ५° <td>कन्या २७°<td>मेघ २०°<td>धनु<td>मिथुन<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	कन्या २७° <td>मेघ २०°<td>धनु<td>मिथुन<td colspan="3"></td></td></td></td>	मेघ २०° <td>धनु<td>मिथुन<td colspan="3"></td></td></td>	धनु <td>मिथुन<td colspan="3"></td></td>	मिथुन <td colspan="3"></td>			
मूलत्रिकोण <td>सिह<td>वृष<td>मेघ<td>कन्या<td>धनु<td>तुला<td>कुम्भ<td>कुम्भ<td>सिह<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	सिह <td>वृष<td>मेघ<td>कन्या<td>धनु<td>तुला<td>कुम्भ<td>कुम्भ<td>सिह<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	वृष <td>मेघ<td>कन्या<td>धनु<td>तुला<td>कुम्भ<td>कुम्भ<td>सिह<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	मेघ <td>कन्या<td>धनु<td>तुला<td>कुम्भ<td>कुम्भ<td>सिह<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	कन्या <td>धनु<td>तुला<td>कुम्भ<td>कुम्भ<td>सिह<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	धनु <td>तुला<td>कुम्भ<td>कुम्भ<td>सिह<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	तुला <td>कुम्भ<td>कुम्भ<td>सिह<td colspan="3"></td></td></td></td>	कुम्भ <td>कुम्भ<td>सिह<td colspan="3"></td></td></td>	कुम्भ <td>सिह<td colspan="3"></td></td>	सिह <td colspan="3"></td>			
जातिः <td>क्षत्रिय<td>वैश्य<td>क्षत्रिय<td>शूद्र<td>विप्र<td>विप्र<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	क्षत्रिय <td>वैश्य<td>क्षत्रिय<td>शूद्र<td>विप्र<td>विप्र<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	वैश्य <td>क्षत्रिय<td>शूद्र<td>विप्र<td>विप्र<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	क्षत्रिय <td>शूद्र<td>विप्र<td>विप्र<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	शूद्र <td>विप्र<td>विप्र<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	विप्र <td>विप्र<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	विप्र <td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td></td></td>	चाण्डाल <td>चाण्डाल<td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td></td>	चाण्डाल <td>चाण्डाल<td colspan="3"></td></td>	चाण्डाल <td colspan="3"></td>			
दिक् <td>पूर्व<td>वायव्य<td>दक्षिण<td>उत्तर<td>ईशान<td>आग्नेय<td>पश्चिम<td>नैऋत्य<td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	पूर्व <td>वायव्य<td>दक्षिण<td>उत्तर<td>ईशान<td>आग्नेय<td>पश्चिम<td>नैऋत्य<td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	वायव्य <td>दक्षिण<td>उत्तर<td>ईशान<td>आग्नेय<td>पश्चिम<td>नैऋत्य<td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	दक्षिण <td>उत्तर<td>ईशान<td>आग्नेय<td>पश्चिम<td>नैऋत्य<td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	उत्तर <td>ईशान<td>आग्नेय<td>पश्चिम<td>नैऋत्य<td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	ईशान <td>आग्नेय<td>पश्चिम<td>नैऋत्य<td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	आग्नेय <td>पश्चिम<td>नैऋत्य<td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td></td></td>	पश्चिम <td>नैऋत्य<td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td></td>	नैऋत्य <td>नैऋत्य<td colspan="3"></td></td>	नैऋत्य <td colspan="3"></td>			
भाग्योदय <td>२२ वर्ष<td>२४ वर्ष<td>२८ वर्ष<td>२२ वर्ष<td>१६ वर्ष<td>२५ वर्ष<td>३६ वर्ष<td>४२ वर्ष<td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	२२ वर्ष <td>२४ वर्ष<td>२८ वर्ष<td>२२ वर्ष<td>१६ वर्ष<td>२५ वर्ष<td>३६ वर्ष<td>४२ वर्ष<td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	२४ वर्ष <td>२८ वर्ष<td>२२ वर्ष<td>१६ वर्ष<td>२५ वर्ष<td>३६ वर्ष<td>४२ वर्ष<td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	२८ वर्ष <td>२२ वर्ष<td>१६ वर्ष<td>२५ वर्ष<td>३६ वर्ष<td>४२ वर्ष<td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	२२ वर्ष <td>१६ वर्ष<td>२५ वर्ष<td>३६ वर्ष<td>४२ वर्ष<td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	१६ वर्ष <td>२५ वर्ष<td>३६ वर्ष<td>४२ वर्ष<td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	२५ वर्ष <td>३६ वर्ष<td>४२ वर्ष<td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td></td></td>	३६ वर्ष <td>४२ वर्ष<td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td></td>	४२ वर्ष <td>४८ वर्ष<td colspan="3"></td></td>	४८ वर्ष <td colspan="3"></td>			
प्रकृतिः <td>पित्त<td>कफ<td>पित्त<td>सम<td>वात<td>कफ<td>वात<td>वात<td>वात<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	पित्त <td>कफ<td>पित्त<td>सम<td>वात<td>कफ<td>वात<td>वात<td>वात<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	कफ <td>पित्त<td>सम<td>वात<td>कफ<td>वात<td>वात<td>वात<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	पित्त <td>सम<td>वात<td>कफ<td>वात<td>वात<td>वात<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	सम <td>वात<td>कफ<td>वात<td>वात<td>वात<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	वात <td>कफ<td>वात<td>वात<td>वात<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	कफ <td>वात<td>वात<td>वात<td colspan="3"></td></td></td></td>	वात <td>वात<td>वात<td colspan="3"></td></td></td>	वात <td>वात<td colspan="3"></td></td>	वात <td colspan="3"></td>			
पुसादिसंज्ञा <td>पुरुष<td>स्त्री<td>पुरुष<td>नपुंसक<td>पुरुष<td>स्त्री<td>नपुंसक<td>नपुंसक<td>पुरुष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	पुरुष <td>स्त्री<td>पुरुष<td>नपुंसक<td>पुरुष<td>स्त्री<td>नपुंसक<td>नपुंसक<td>पुरुष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	स्त्री <td>पुरुष<td>नपुंसक<td>पुरुष<td>स्त्री<td>नपुंसक<td>नपुंसक<td>पुरुष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	पुरुष <td>नपुंसक<td>पुरुष<td>स्त्री<td>नपुंसक<td>नपुंसक<td>पुरुष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	नपुंसक <td>पुरुष<td>स्त्री<td>नपुंसक<td>नपुंसक<td>पुरुष<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	पुरुष <td>स्त्री<td>नपुंसक<td>नपुंसक<td>पुरुष<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	स्त्री <td>नपुंसक<td>नपुंसक<td>पुरुष<td colspan="3"></td></td></td></td>	नपुंसक <td>नपुंसक<td>पुरुष<td colspan="3"></td></td></td>	नपुंसक <td>पुरुष<td colspan="3"></td></td>	पुरुष <td colspan="3"></td>			
आकृति <td>ह्रस्व<td>ह्रस्व<td>ह्रस्व<td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	ह्रस्व <td>ह्रस्व<td>ह्रस्व<td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td></td>	ह्रस्व <td>ह्रस्व<td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td></td>	ह्रस्व <td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td></td>	ह्रस्व <td>दीर्घ<td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td></td></td></td></td>	दीर्घ <td>ह्रस्व<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td></td></td></td>	ह्रस्व <td>दीर्घ<td>दीर्घ<td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td></td></td>	दीर्घ <td>दीर्घ<td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td></td>	दीर्घ <td>दीर्घ<td colspan="3"></td></td>	दीर्घ <td colspan="3"></td>			
• द्वैकानचक्रम् •												
राशि	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१०°	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य <td>बुध</td> <td>शुक्र</td> <td>मङ्गल</td> <td>बृहस्पति</td> <td>शनि</td> <td>शनि</td> <td>बृहस्पति</td>	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	शनि	शनि	बृहस्पति
२०°	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल	बृहस्पति	शनि	शनि	बृहस्पति	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र
३०°	बृहस्पति	शनि	शनि	बृहस्पति	मङ्गल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मङ्गल

• वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम् •												
स्वामी	शनि	रवि	मङ्गल	बृहस्पति	शुक्र	बुध	चन्द्र					
नक्षत्र	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा					
नक्षत्र	विशाखा	स्वाती	चित्रा	हस्त	उत्तरफल्गुनी	पूर्वफल्गुनी	मघा					
नक्षत्र	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ	उत्तराषाढ	अभिजित्	श्रवणा					
नक्षत्र	भरणी	अश्विनी	रेवती	उत्तरभाद्र	पूर्वभाद्र	शतभिषा	धनिष्ठा					
संज्ञा	चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृता					
• ग्रहाणां धारणाय मणयः •												
सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु				
माणिक्य	मुक्ता	विद्रुम	पद्मा	पाशुराज	हारा	नीलमणि	गोमट	लहसुनिया				
गारुड	मुनस्त्योन	मुद्रा	लीली	सुनहला	स्फटिक	यमुनिया	लाजावत	लाजावत				
विद्रुम	चांदी	मुद्रा	सेना	मोती	चांदी	लोह	लाजावत	लाजावत				
• नवमाराचक्रम् •												
राशि	मेघ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३।२०	म	श	शु	च	म	श	शु	च	म	श	शु	च
६।४०	श	श	म	सू	शु	श	म	सू	शु	श	म	सू
१०।००	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व
१३।२०	च	म	श	शु	च	म	श	शु	च	म	श	शु
१६।४०	सू	शु	श	म	सू	शु	श	म	सू	शु	श	म
२०।००	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व
२३।२०	शु	च	म	श	शु	च	म	श	शु	च	म	श
२६।४०	म	सू	शु	श	म	सू	शु	श	म	सू	शु	श
३०।००	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व	बु	व
• विंशाराचक्रम् •												
विषमराशौ												
अशा	मेघमिथुनसिंहतुलाधनुकुम्भ						अशा					
०५°	मङ्गल						०५°					
१०°	शनि						१२°					
१८°	बृहस्पति						२०°					
२५°	बुध						२५°					
३०°	शुक्र						३०°					

विंशिधासुवीरकाचक्रम्			१०
दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः	
चरधे लग्नेशः	चरधे लग्नेशः	चरधे लग्नेशः	
चरधेऽष्टमेशः	स्थिरधेऽष्टमेशः	द्विस्वधेऽष्टमेशः	
स्थिरधे लग्नेशः	स्थिरधे लग्नेशः	स्थिरधे लग्नेशः	
द्विस्वधेऽष्टमेशः	चरधेऽष्टमेशः	स्थिरधेऽष्टमेशः	
द्विस्वधे लग्नेशः	द्विस्वधे लग्नेशः	द्विस्वधे लग्नेशः	
स्थिरधेऽष्टमेशः	द्विस्वधेऽष्टमेशः	चरधेऽष्टमेशः	
लग्नेशाष्टमेशयोरेव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्यां) लग्नहोरालग्नाभ्यांज्ञापूर्विकीयम्।			
आयुर्विचारः			
लग्नसप्तमयोऽन्तरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्याम्, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां लग्नहोरालग्नाभ्यांज्ञेति प्रकारव्येष्ट्यापूर्विकीयम्। प्रकारव्येष्ट्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्, विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्बौ बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्बौ बली तस्य केन्द्रे स्थित्वा दीर्घायुः, पणकरो मध्यायुः, आपोक्लिप्ते वात्स्यायुः। इत्यमेवात्मकारकवशेनापि। १, ८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चेकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः, पणकरो मध्यमायुरापोक्लिप्ते वात्स्यायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रतदा दीर्घायुर्योगः, सपक्षेमध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदा अल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तवक्रद्वारा प्रकारव्येष्टेण दीर्घायुर्योगे श्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारव्यादिवशेन क्रमशः ८०, ७२, ६४ वर्षाण्ययुः। अल्पायुष्यपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्ययुर्निति।			
आयुः स्थानमारकादिस्थानञ्च- अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुस्तादात्म्यम्। द्वितीयं गतमर्धैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशानन्दशा न शुभा। लग्नेशाष्टमेशानवमेशानां दशा शुभा, विषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलादा, परं स्थानान्तरशुभाशुभवशेन शुभपरत्वाशुभफलद्वेति।			
द्वादशराशज्ञानम्-प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशराशास्त्व प्रतिद्वादशराशामानम् २।३० अशात्मकं भवति। द्वादशराशेषाः स्वरशित एव गण्यन्ते।			



# आचार्य रतन झा

आचार्य रत्नम															श्रावणकृष्णपक्षः										११																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																
तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः			

मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलदिश्यग्रहा दिनद्वयग्रहान्तर गतिष्व							दैनिकलक्षणसारणीकृतम्												०१ भुगी वल्लो ०८ १४० १०६ १४३ अयनाशा २२ १५३ १३७		विचित्रविषया— श्रावणकृष्णपक्षभ्यां मनसरेणा उद्यापनं पुनश्च कार्यम्। अयनान्तिकनिमित्तानिपुणैः रससेवनं पुष्टिकरम्। सायङ्काले च मृगकर्मिकादुत्थलजान् सार्पमतेणामिभ्यन्त्रं गृहीतुं विक्रीतुं (वर्जयेच्छाकम्)। सम्पा चौरपाशा द्वाडे सारो विना आस्तोक आस्तोक आस्तोक। आस्तोकेति वचः बुधाय च स्यात् न निवर्तते। शतधा भिद्यते मूर्धा शिशुवृक्षकल यथा। शान्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्।। कस्यापि कृतव्रतस्याद्यापनावश्यकता नान्यतुरागैः— कुर्यादुत्थापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं भवेत्।। तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत् तद् व्रतं निष्फलं	
---	--	--	--	--	--	--	----------------------	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	---	--	--	--



[illegible]



तिथयः											भाद्रकृष्णपक्षः		शकाब्दः १९४७, संवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क १०।०८।२०२५ ई. तो दिनाङ्क २३।०८।२०२५ ई. यावत्। शुद्धः ०९ तः अशुद्धः, वर्षतुं, सौर्यगोलः, याम्यायनम्, पश्चिमे कालः ०९ तः उत्तरे कालः।	१३														
दिनाति	द. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	राश्यादिः	द. प.	घ. मि.	घ. मि.	रा. संकेतः	अं.														
०१ र	१८१७	दि. १२।१६	धनि २५।१८	दि. ०३।१८	शोभन ५३।०२	को १८।१७	कुम्भ	अहोरात्रम्	०३।२३।३४।१२	३२।१४	५।२७	६।३३	१९	२५														
०२ च	१५।१५	दि. ११।१८	शत २३।५७	दि. ०३।०३	आग ४७।३१	ग १५।१५	कुम्भ	अहोरात्रम्	०३।२४।३१।३६	३२।१४	५।२८	६।३२	२०	२६														
०३ म	११।१६	दि. ०९।१८	पुषा २१।१९	दि. ०२।१२	सुकर्मा ४१।१७	वि ११।१६	कुं. ०७।२१	दि. ०८।२४	०३।२५।२९।००	३२।३८	५।२८	६।३२	२१	२७														
०४ वृ	०६।१४	दि. ०८।१३	उमा १८।१७	दि. ०१।१०	भृति ३४।३०	वा. ०६।२४	मीनः	अहोरात्रम्	०३।२६।२६।२४	३२।३५	५।२९	६।३१	२२	२८														
०५ श	००।१५	दि. ०५।१३	रेवती १५।१०	दि. ११।३८	शुलः २७।१३	तै. ००।४८	मौ. १५।१०	दि. ११।३४	०३।२७।२३।१८	३२।३२	५।३०	६।३०	२३	२९														
०६ श	४८।१५	रा. ०१।१०	अश्वि ११।१०	दि. ०९।१८	गण्ड. १९।१८	वि. २२।१३	मेघः	अहोरात्रम्	०३।२८।२१।१२	३२।२८	५।३०	६।३०	२४	३०														
०७ श	४२।१६	रा. १०।३७	भरणी ०६।१५	दि. ०८।१९	जुद्धि १२।१०	वा. १५।१३	मे. २०।१७	दि. ०१।१४	०४।१०।१६।२४	३२।२१	५।३२	६।२८	२६	०१														
०८ र	३६।१५	रा. ०८।१४	कृत्ति ०२।१०	प्रा. ०६।१८	ध्रुवः ०४।२४	तै. ०९।१६	वृषः	अहोरात्रम्	०४।१०।१६।२४	३२।२१	५।३२	६।२८	२६	०१														
१० च	३१।०४	स. ०५।१८	मृग ५५।२२	रा. ०३।१४	हर्षणः ४९।१४	ख. ०३।१५	वृ. २७।०८	दि. ०४।२३	०४।११।१४।१०	३२।१८	५।३२	६।२८	२७	०२														
११ म	२५।१३	दि. ०३।१४	आर्द्रा ५२।२७	रा. ०२।३२	वज्रः ४३।०९	वा. २५।१३	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०४।१२।११।३६	३२।१५	५।३३	६।२७	२८	०३														
१२ वृ	२१।३०	दि. ०२।१०	पुन ५०।२५	रा. ०१।१४	सिद्धिः ३७।१०	तै. २१।३०	मि. ३५।१६	रा. ०७।१६	०४।१०।१६।२४	३२।१२	५।३४	६।२६	२९	०४														
१३ श	१७।१५	दि. १२।१५	पुष्य ४९।१५	रा. ०१।१६	व्यती ३१।१४	च. १७।१७	कर्कः	अहोरात्रम्	०४।१०।१६।२४	३२।१२	५।३४	६।२६	२९	०४														
१४ श	१५।२७	दि. ११।१६	श्र्ल ४९।१२	रा. ०१।१६	वती २७।२८	श. १५।२७	क. ४९।१२	रा. ०१।१६	०४।१०।१६।२४	३२।१२	५।३४	६।२६	२९	०४														
१५ श	१४।१०	दि. ११।१६	मघा ५०।२०	रा. ०१।१४	पत्तिः २४।०१	जा. १४।१०	सिंहः	अहोरात्रम्	०४।१०।१६।२४	३२।१२	५।३४	६।२६	२९	०४														
तिथयः											दैनिकलम्सारिणीचक्रम्																	
दिनाति	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मित्रमानयः	मे. अ.	वृ. अ.	मि. अ.	क. अ.	सि. अ.	क. अ.	तु. अ.	वृ. अ.	घ. अ.	म. अ.	कु. अ.	मी. अ.									
०१ र	०५।१७।२६।०६	०३।०८।१०।२४	०२।२०।१४।१३	०२।१९।१७।२५	११।०४।२५।१६	०४।२७।१६।१३	४६।२१	२३।३४	०१।३०	०३।१३	०६।११	०८।१७	१०।३२	१२।१४	१५।०६	१७।११	१८।१७	२०।२८	२१।१५									
०२ च	०५।१०।१३।१५	०३।१०।१०।१६	०२।२०।३६।१५	०२।२०।१२।३२	११।०४।२२।२०	०४।२७।१३।१२	४६।१९	२३।३०	०१।२६	०३।३९	०५।१७	०८।१३	१०।२८	१२।१५	१५।०२	१७।१७	१८।१३	२०।२४	२१।१३									
०३ म	०५।१०।११।१८	०३।१०।१८।१०	०२।२०।१९।३७	०२।२१।३९।३९	११।०४।१८।१४	०४।२७।१८।३१	४६।१७	२३।२६	०१।२२	०३।३५	०५।१३	०८।१०	१०।२४	१२।११	१४।१८	१७।१३	१८।१९	२०।२०	२१।१९									
०४ वृ	०५।१०।१९।१७	०३।१०।१८।१०	०२।२१।०२।१९	०२।२२।१०।१६	११।०४।१५।२८	०४।२७।३७।२०	४६।१६	२३।२२	०१।१८	०३।३१	०५।१९	०८।१०	१०।२४	१२।३७	१४।१४	१६।१५	१८।१५	२०।१६	२१।१५									
०५ श	०५।१०।१५।१४	०३।११।१५।११	०२।२१।१५।१०	०२।२१।१५।१०	११।०४।१०।१३	०४।२७।३४।१०	४६।१५	२३।१९	०१।१५	०३।३२	०५।१६	०८।१०	१०।२४	१२।३४	१४।१४	१६।१५	१८।१५	२०।१६	२१।१५									
०६ श	०५।१०।३५।१०	०३।१२।३९।१४	०२।२१।३७।१३	०२।२५।१३।१०	११।०४।१०।३७	०४।२७।३९।१०	४६।१४	२३।१५	०१।११	०३।२४	०५।१२	०७।१८	१०।२३	१२।३०	१४।१७	१६।१२	१८।३८	२०।१९	२१।३८									
०७ श	०५।११।१३।१८	०३।१३।१८।१०	०२।२१।३९।१८	०२।२६।२४।१५	११।०४।१०।२१	०४।२७।२४।३८	४६।१०	२३।०७	०१।०३	०३।१६	०५।३४	०७।१०	१०।२५	१२।२२	१४।३९	१६।१४	१८।३०	२०।११	२१।३०									
०८ र	०५।११।१३।१५	०३।१५।१६।१७	०२।२१।१८।१५	०२।२१।१८।१५	११।०४।१०।२१	०४।२७।२४।३८	४६।१०	२३।०७	०१।०३	०३।१६	०५।३४	०७।१०	१०।२५	१२।२२	१४।३९	१६।१४	१८।३०	२०।११	२१।३०									
१० च	०५।१२।२९।१४	०३।१६।३४।३४	०२।२२।१०।२८	०२।२४।१६।१५	११।०४।१६।१३	०४।२७।२१।२७	४६।१०	२३।०४	०१।१०	०३।१३	०५।३१	०७।१७	१०।२२	१२।१९	१४।३६	१६।१४	१८।२७	२०।१८	२१।२७									
११ म	०५।१३।१०।१९	०३।१७।१८।१०	०२।२२।१८।१५	०२।२२।१८।१५	११।०४।१०।२१	०४।२७।२४।३८	४६।१०	२३।०७	०१।०३	०३।१६	०५।३४	०७।१०	१०।२५	१२।२२	१४।३९	१६।१४	१८।३०	२०।११	२१।३०									
१२ वृ	०५।१३।१६।२६	०३।१८।२९।१५	०२।२२।१८।१५	०२।२२।१८।१५	११।०४।१०।२१	०४।२७।२४।३८	४६।१०	२३।०७	०१।०३	०३।१६	०५।३४	०७।१०	१०।२५	१२।२२	१४।३९	१६।१४	१८।३०	२०।११	२१।३०									
१३ श	०५।१४।१२।१५	०३।१९।१८।१२	०२।२२।१८।१५	०२।२२।१८।१५	११।०४।१०।२१	०४।२७।२४।३८	४६।१०	२३।०७	०१।०३	०३।१६	०५।३४	०७।१०	१०।२५	१२।२२	१४।३९	१६।१४	१८।३०	२०।११	२१।३०									
१४ श	०५।१५।१०।२१	०३।२१।१८।१२	०२।२२।१८।१५	०२।२२।१८।१५	११।०४।१०।२१	०४।२७।२४।३८	४६।१०	२३।०७	०१।०३	०३।१६	०५।३४	०७।१०	१०।२५	१२।२२	१४।३९	१६।१४	१८।३०	२०।११	२१।३०									
१५ श	०५।१५।१०।२१	०३।२३।२०।१२	०२।२३।१०।१३	०३।०४।१६।३१	११।०४।३५।१७	०४।२७।१५।३३	४६।१०	२२।१६	००।१८	०२।१५	०५।१३	०७।१९	०९।१४	१२।१०	१४।१८	१६।२३	१८।१९	२०।१९	२१।१९									



तिथयः	तिथयः	नक्षत्राणि	योगाः	करणाणि	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ	सू. अ.	दिनाङ्कः	भाद्रशुक्लपक्षः	शकाब्दः १९४७, संवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क २४।०८।२०२५ ई. तो दिनाङ्क ०७।०९।२०२५ ई. यावत्। अशुद्धः, वर्णतुं, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।	१४									
दिनाति	द. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	रा. प.	रा. मं. नं. अ.	चन्द्रदर्शनम् ३० सौम्यशुक्लफलं साम्यम्, रविव्रतम्, पूर्वोत्तरयात्रा द्वितीयापूर्वफलान्योः। दक्षिणयात्रा हस्ते।											
०१ र.	१४।०८	दि. ११।१५	पुफ. ५२।१७७	रा. ०२।१७३	शिवः २१।३४	ब. १४।०८	सिह.	अहोयम्	०४।०७।००।०४	३१।५८	५।३६	६।२४	०८	२४								
०२ च.	१५।१५	दि. ११।१७७	उफ. ५६।१९९	रा. ०४।१७३	सिद्धः २०।१०	कौ. १५।१५	सि. ०८।१७३	दि. ०९।१०६	०४।०७।५७।५३	३१।५८	५।३७	६।२३	०९	२५								
०३ म.	१७।१४	दि. १२।१७८	हस्तः ६०।१००	अहोयम्	साध्यः १९।१३८	ग. १७।५४	कन्या	अहोयम्	०४।०८।५५।५३	३१।५९	५।३८	६।२२	०४	२६								
०४ बु.	२१।३०	दि. ०२।१७४	हस्तः ०१।१७७	प्रा. ०६।१०९	शुभः १९।१५९	वि. २१।३०	क. ३४।१०७	रा. ०७।१७७	०४।०९।५३।३१	३१।५८	५।३८	६।२२	०५	२७								
०५ बु.	२५।१६	दि. ०४।१०१	मित्रा ०६।५७	दि. ०८।१२६	शुक्लः २०।५९	बा. २५।५६	तुला	अहोयम्	०४।१०।५१।२०	३१।५५	५।३९	६।२१	०६	२८								
०६ शु.	३०।१६	स. ०६।१०२	स्वाती १३।१५	दि. १०।५८	ब्रह्म २२।२४	तै. ३०।५६	तुला	अहोयम्	०४।११।४९।१०९	३१।५२	५।४०	६।२०	०७	२९								
०७ रा.	३६।०२	रा. ०८।०५	विशा. १९।१४६	दि. ०१।३४	ऐन्द्रः २३।५७	ग. ०३।२९	तु. ०३।१०९	दि. ०६।५४	०४।१२।४७।१०	३१।५८	५।४०	६।२०	०८	३०								
०८ र.	४०।१७	रा. १०।१०	अनु. २६।१०५	दि. ०४।१०७	वैश्वि. २५।२०	वि. ०८।२५	वृश्चिकः	अहोयम्	०४।१३।४५।११	३१।५४	५।४१	६।१९	०९	३१								
०९ च.	४४।१८	रा. ११।१४९	ज्ये. ३१।१४९	स. ०६।१२६	विक्र. २६।१७	बा. १२।५३	वृ. ३१।१४९	स. ०६।१२६	०४।१४।४३।१२	३१।५३	५।४२	६।१८	१०	३१								
१० म.	४८।१३	रा. १२।१५६	मूलम् ३६।१२२	रा. ०८।१२४	प्रीति. २६।३१	तै. १६।३१	घनुः	अहोयम्	०४।१५।११।१३	३१।५२	५।४३	६।१७	११	०२								
११ बु.	५०।१५	रा. ०१।१४६	पूषा. ४०।२७	रा. ०९।५५	आयु. २५।५१	व. १९।१०४	घ. ५६।१०५	रा. ०४।१०८	०४।१६।३९।१४	३१।५२	५।४४	६।१६	१२	०३								
१२ बु.	५०।१७	रा. ०२।१०३	उषा. ४२।१८	रा. १०।५५	सोभा. २४।१७	ब. २०।१६	मकरः	अहोयम्	०४।१७।३७।१५	३१।५८	५।४४	६।१६	१३	०४								
१३ शु.	५०।१०	रा. ०१।१४९	श्रवणा ४४।११	रा. ११।२५	शोभ. २१।१२	कौ. २०।१९	मकरः	अहोयम्	०४।१८।३५।१६	३१।५४	५।४५	६।१५	१४	०५								
१४ रा.	४८।२१	रा. ०१।१०६	घनि. ४४।१४	रा. ११।२८	अग. १८।१६	ग. १९।१६	म. १४।१३	दि. ११।२७	०४।१९।३३।३२	३१।५०	५।४६	६।१४	१५	०६								
१५ र.	४५।२४	रा. ११।५७	शत. ४३।०७	रा. ११।०२	सुकर्मा १३।३४	वि. १६।५३	कुम्भः	अहोयम्	०४।२०।३१।४८	३१।५०	५।४७	६।१३	१६	०७								
तिथयः	दिनाति	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अ.	वृ. अ.	मि. अ.	क. अ.	सि. अ.	क. अ.	तु. अ.	वृ. अ.	घ. अ.	म. अ.	कु. अ.	मी. अ.	०६ भृगो वल्लो ०८।१०।०७।३२ अयनाशा २२।५३।१४४	विविधविषयाः—भाद्रशुक्लतृतीयायां हरितालिका। सा च चतुर्थीयुता ग्राह्या। स्कान्दे— कला काष्ठा मुहूर्ताणि द्वितीया यदि दूश्यते। सा तृतीया न कर्तव्या कर्तव्या गणसयुता॥ व्रतेऽस्मिन् पार्वतीशिवयो पूजा क्रियते। चतुर्थ्यां सरोहिणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च परयेत्तन्मन्त्रः—सिहः प्रसेनमवधीतुं सिहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥ प्रार्थनामन्त्रः—दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिना प्रकृत्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥ चतुर्थीतन्त्रयोदशी यावदणशी सम्पूज्य चतुर्दश्या पूजनोत्तरं विसर्जनम्। अष्टमी दुर्वाख्या। अस्यां राधाजनयनयुक्तो महालक्ष्मीव्रतारम्भश्च। तथा च द्वादशीतः इन्द्रपूजास्मत्। एकादश्यां विष्णोः पार्ष्णपरिवर्तनम्— ब्रह्मे भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि। कटिदानं भवेद्दिष्णोर्महापूजा प्रवर्तते। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेच द्वादशी तव। पार्ष्ण समार्वितस्व सुखं स्वर्गिणि माधव॥ त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदित्यु। विबुधे त्वयि बुध्येत जगदेतन्व्यगचरम्॥ देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरञ्जनं। कटिदानं कुरुष्वार्घ्यं मासि भाद्रपदे शुभे॥ अनन्तधारणम्— अनन्तससारमहासमुद्रे मानं समध्मुद्धर वासुदेव। अनन्तरूपे विनियोजयस्व हानन्तरूपाय नमो नमस्ते॥ भाद्रपूर्णिमायां ऋषितर्पणोत्तरं शङ्खे जलाक्षतैरपुष्प(काशपुष्प)फलद्रव्यादिकं गृहीत्वा सन्ध्येन दक्षिणाभिमुखं अगस्त्यार्चयन् कुर्यात्तन्मन्त्रः— कुम्भयोगिनिसमुत्पन्नं मुनीनां मुनिसततम्। उदयने लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ शङ्खे पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च। उदयने लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु॥ ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः १० तः पूर्वोदितः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्रो पूर्वोदितः शनिः। वातावरणम्—पश्चाद्यन्तभागयोः वातमेघचारखण्डवृष्टयस्तन्मध्यभागे वातातपमेघच्छायाच्छिन्नवृष्टयः।
०१ र.	०५।१६।१०।०५	०३।२४।५२।११	०२।२३।१७।१०	०३।०५।५४।३०	११।१०।३०।५३	०४।२७।०२।१२	४५।५९	२२।१२	००।३८	०२।५९	०५।०९	०७।२५	०९।१७	११।१५	१४।१४	१६।१९	१८।०५	१९।३६	२१।०५	ल. १	श. ११	
०२ च.	०५।१६।५८।३८	०३।२६।४५।१०	०२।२३।२८।१९	०३।०७।०६।१९	११।१०।३२।०६	०४।२६।५९।११	४५।५५	२२।१३	००।३४	०२।१७	०५।०५	०७।२२	०९।१३	११।५३	१४।१०	१६।१५	१८।०१	१९।३२	२१।०१	वृ. २	श. १०	
०३ म.	०५।१७।३७।११	०३।२७।५७।३९	०२।२३।१८।१७	०३।०८।१८।२८	११।१०।३२।०६	०४।२६।५६।१०	४५।५५	२२।१५	००।३१	०२।१४	०५।०२	०७।१८	०९।३३	११।५०	१४।१०	१६।१२	१७।५८	१९।३९	२०।५८	शु. ३	९	
०४ बु.	०५।१८।४५।१३	०३।२९।३०।१८	०२।२३।५२।२४	०३।०९।३०।३६	११।१०।३२।०६	०४।२६।५२।१९	४५।५३	२२।१६	००।२९	०२।१०	०४।५८	०७।१४	०९।२९	११।१६	१४।१३	१६।१०	१७।५४	१९।३५	२०।५४	सू. ४	८	
०५ बु.	०५।१८।५४।१५	०४।१०।१०।३७	०२।२४।०४।११	०३।१०।१२।२४	११।१०।३२।०६	०४।२६।५९।३९	४५।५२	२२।२८	००।२४	०२।३७	०४।५५	०७।११	०९।२६	११।१३	१४।१०	१६।१५	१७।५१	१९।२९	२०।५९	वृ. के.	७	
०६ शु.	०५।१९।३२।१७	०४।१०।३५।०६	०२।२४।५४।५८	०३।११।५४।२२	११।१०।३०।१७	०४।२६।५६।२९	४५।५१	२२।२९	००।२०	०२।३३	०४।५१	०७।१७	०९।२२	११।३९	१३।१६	१६।१०	१७।५७	१९।४८	२०।५७	श. ५	७	
०७ रा.	०५।१९।११।१५	०४।१०।४६।१४	०२।२४।१८।१०	०३।१३।१०।२०	११।१०।३०।१७	०४।२६।५३।१८	४५।५९	२२।२९	००।१७	०२।३०	०४।५८	०७।१४	०९।१९	११।३६	१३।१३	१५।५८	१७।५४	१९।४५	२०।५४	वृ. ५	७	
०८ र.	०५।२०।५०।१३	०४।१०।५७।२२	०२।२४।३८।०८	०३।१४।१८।१८	११।१०।३९।१७	०४।२६।५०।१०	४५।१७	२२।२७	००।१३	०२।२६	०४।५७	०७।१०	०९।१५	११।३२	१३।१९	१५।५४	१७।५०	१९।११	२०।५०	श. ६	७	
०९ च.	०५।२१।२९।१४	०४।१०।३८।३०	०२।२४।५९।१६	०३।१५।३०।१६	११।१०।३४।२७	०४।२६।३६।५६	४५।१५	२२।२३	००।१९	०२।२२	०४।५८	०७।१६	०९।१६	११।२८	१३।१५	१५।५०	१७।३६	१९।१७	२०।५३	वृ. के.	७	
१० म.	०५।२१।१०।३७	०४।१०।५९।३८	०२।२५।००।२२	०३।१६।१२।१४	११।१०।३९।३७	०४।२६।३३।१५	४५।१३	२२।१०	००।१५	०२।१८	०४।३६	०७।१५	०९।१७	११।२४	१३।११	१५।५६	१७।३२	१९।१३	२०।५३	ल. १	श. १०	
११ बु.	०५।२१।१७।३४	०४।११।१०।१६	०२।२५।११।२८	०३।१७।५४।१२	११।१०।३४।२७	०४।२६।३०।३३	४५।११	२२।१०	००।१०	०२।१५	०४।३३	०७।१९	०९।१७	११।२१	१३।३८	१५।५३	१७।२९	१९।१०	२०।५९	वृ. २	श. ९	
१२ बु.	०५।२३।२६।३१	०४।१२।११।५३	०२।२५।२२।३४	०३।१९।१०।१०	११।१०।३९।५९	०४।२६।२७।२४	४५।३९	२२।१०	००।१३	०२।११	०४।३२	०७।१५	०९।१७	११।२७	१३।३३	१५।३९	१७।२९	१९।१५	२०।५५	ल. २	श. ९	
१३ शु.	०५।२४।०५।२८	०४।१२।३२।१०	०२।२५।३३।१०	०३।२०।१८।०८	११।१०।३९।१०	०४।२६।२४।१४	४५।३७	२२।१८	००।१७	०२।१०	०४।२५	०७।१६	०९।१६	११।२३	१३।३०	१५।५३	१७।२९	१९।१८	२०।५१	शु. २	८	
१४ रा.	०५।२४।१४।५५	०४।१६।०८।१८	०२।२५।१४।०४	०३।२१।३०।३८	११।१०।३०।३८	०४।२६।२१।१०	४५।३५	२२।१५	००।१७	०२।१०	०४।२२	०७।३८	०९।१७	११।१०	१३।३७	१५।२२	१७।२४	१९।१८	२०।५८	वृ. के.	७	
१५ र.	०५।२४।२४।२२	०४।१७।५४।३६	०२।२५।१४।२८	०३।२२।१३।०८	११।१०।२५।३०	०४।२६।१७।५२	४५।३३	२२।१५	००।१७	०२।१०	०४।२८	०७।३४	०९।१७	११।१०	१३।३७	१५।२२	१७।२४	१९।१८	२०।५८	ल. ३	श. ९	



जीमूतवाहन(जीवितपुत्रिका)व्रतं पूर्वद्युरपरेद्युवा प्रदोषे यत्र चाष्टमी। तत्र पूज्यः  
स नारीधी राजा जीमूतवाहनः॥ इति विष्णुधर्मोत्तरवचनान्त्या च  
विविधविषयोक्तजीमूतवाहनव्रतनिर्णयमूलकचनेभ्यश्चास्मिन्नेव सप्तम्यां रविवारे  
एव प्रदोषव्यापिन्यामष्टम्यां जीमूतवाहन(जीवितपुत्रिका)व्रतं स्यात्। एवञ्च तद्दिने  
एव चन्द्रोदयव्यापिन्यामष्टम्यां लक्ष्मीव्रतञ्चापीति सिद्धान्तः।



तिथयः															शकाब्दः १९४७, संवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क २२।०९।२०२५ ई. तो दिनाङ्क ०७।१०।२०२५ ई. यावत्।										१६
तिथयः			तिथयः			नक्षत्राणि			योगाः			करणानि			चन्द्रारायः			स्यष्टसूर्यः			दिनमानम्	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्कः	
दिनानि	द. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	राश्यादिः	द. प.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	रा. म्ने को अं.	राश्यादिः	द. प.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	घ. मि.	
०१ च.	४८।४६	रा. ०१।२८	उफ. १४।०२	दि. ११।३५	शुक्ल ३७।४८	कि. १७।३१	कन्या	अहोरात्रम्	०५।०५।०९।०२	३०।०८	५।५८	६।०२	३१	०६	२२	३०।०८	५।५८	६।०२	३१	०६	२२	३०।०८	५।५८	६।०२	
०२ म.	५२।३७	रा. ०२।५८	हस्त १८।३२	दि. ०१।२४	व्रज ३७।५३	वा. २०।३७	क. ५१।४७	रा. ०२।३०	०५।०६।०७।४८	३०।०४	५।५९	६।०१	०१	०७	२३	३०।०४	५।५९	६।०१	०१	०७	२३	३०।०४	५।५९	६।०१	
०३ बु.	५६।५७	रा. ०४।४७	चित्रा २४।०१	दि. ०३।३६	ऐन्द्र ३८।४२	तै. २४।४२	तुला	अहोरात्रम्	०५।०७।०६।३४	३०।००	६।००	६।००	०२	०८	२४	३०।००	६।००	६।००	०२	०८	२४	३०।००	६।००	६।००	
०४ बु.	६०।००	अहोरात्रम्	स्वाती ३०।११	स. ०६।०५	वैश्वि. ३९।५६	च. २९।२९	तुला	अहोरात्रम्	०५।०८।०५।२०	२९।५६	६।०१	५।५९	०३	०९	२५	२९।५६	६।०१	५।५९	०३	०९	२५	२९।५६	६।०१	५।५९	
०५ श.	०७।१२	दि. ०८।५५	अनु. ४३।०८	रा. ११।४७	पौति. ४२।५१	वा. ०७।४२	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०५।१०।०३।०९	२९।४८	६।०२	५।५८	०५	११	२७	२९।४८	६।०२	५।५८	०५	११	२७	२९।४८	६।०२	५।५८	
०६ र.	१२।७७	दि. १०।५४	ज्ये. ४९।०४	रा. ०१।४१	आयु. ४३।४९	तै. १२।०७	बु. ४९।०४	रा. ०१।४१	०५।११।०२।१२	२९।४४	६।०३	५।५७	०६	१२	२८	२९।४४	६।०३	५।५७	०६	१२	२८	२९।४४	६।०३	५।५७	
०७ च.	१६।१९	दि. १२।३६	मूलम् ५४।१२	रा. ०३।४५	सोभा ४४।१२	व. १६।१९	घनुः	अहोरात्रम्	०५।१२।०१।१५	२९।४०	६।०४	५।५६	०७	१३	२९	२९।४०	६।०४	५।५६	०७	१३	२९	२९।४०	६।०४	५।५६	
०८ म.	१९।३३	दि. ०१।५४	पूषा ५८।११	रा. ०५।२१	शोभ. ४३।४२	व. १९।३३	घनुः	अहोरात्रम्	०५।१३।००।१७	२९।३६	६।०५	५।५५	०८	१४	३०	२९।३६	६।०५	५।५५	०८	१४	३०	२९।३६	६।०५	५।५५	
०९ बु.	२१।४१	दि. ०२।४६	उषा. ६०।००	अहोरात्रम्	अग. ४२।२२	को. २१।४१	घ. १३।५१	दि. ११।३८	०५।१३।०५।१९	२९।३२	६।०६	५।५४	०९	१५	०१	२९।३२	६।०६	५।५४	०९	१५	०१	२९।३२	६।०६	५।५४	
१० बु.	२२।२९	दि. ०३।०६	उषा. ०१।०२	प्रा. ०६।३१	सुकर्मा ३९।५८	ग. २२।२९	मकरः	अहोरात्रम्	०५।१४।५८।२१	२९।२८	६।०६	५।५४	१०	१६	०२	२९।२८	६।०६	५।५४	१०	१६	०२	२९।२८	६।०६	५।५४	
११ शु.	२१।५८	दि. ०२।५४	श्रवणा ०२।३६	दि. ०७।०९	धृतिः ३६।३५	वि. २१।५८	म. ३२।४६	स. ०७।१३	०५।१५।५७।२३	२९।२४	६।०७	५।५३	११	१७	०३	२९।२४	६।०७	५।५३	११	१७	०३	२९।२४	६।०७	५।५३	
१२ श.	२०।१४	दि. ०२।१४	घनि. ०२।५६	दि. ०७।१८	शुलः ३२।१३	वा. २०।१४	कुम्भा	अहोरात्रम्	०५।१६।५६।४१	२९।२०	६।०८	५।५२	१२	१८	०४	२९।२०	६।०८	५।५२	१२	१८	०४	२९।२०	६।०८	५।५२	
१३ र.	१७।२५	दि. ०१।०७	शत. ०२।०७	दि. ०७।००	गण्डः २६।५९	तै. १७।२५	कु. ४५।५४	रा. १२।३१	०५।१७।५५।५९	२९।१६	६।०९	५।५१	१३	१९	०५	२९।१६	६।०९	५।५१	१३	१९	०५	२९।१६	६।०९	५।५१	
१४ च.	१३।३५	दि. ११।३६	पूषा. ००।१८	प्रा. ०६।१७	वृश्चि. २१।००	व. १३।३५	मीनः	अहोरात्रम्	०५।१८।५५।१७	२९।१२	६।१०	५।५०	१४	२०	०६	२९।१२	६।१०	५।५०	१४	२०	०६	२९।१२	६।१०	५।५०	
१५ म.	०८।५७	दि. ०९।४५	रेवती ५४।१५	रा. ०३।५२	ध्रुव. १४।२२	व. ०८।५७	मी. ५४।१५	रा. ०३।५२	०५।१९।५४।३५	२९।०८	६।१०	५।५०	१५	२१	०७	२९।०८	६।१०	५।५०	१५	२१	०७	२९।०८	६।१०	५।५०	
तिथयः															दैनिकलम्नसारिणीचक्रम्										
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	बु. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	क. अं.	तु. अं.	बु. अं.	घ. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.	अन्यनाशाः	२२।५३।४८				
०१ च.	०६।०५।१९।५६	०५।१४।३४।३९	०२।२८।१९।२०	०४।१०।०४।५२	११।०१।१२।२५	०४।२५।३०।११	४५।०४	२०।५६	२२।५२	०१।०५	०३।२३	०५।३९	०७।५४	१०।११	१२।२८	१४।३३	१६।१९	१७।५०	१९।१९	२२।५३।४८					
०२ म.	०६।०६।१०।०५	०५।१६।२०।५८	०२।२८।२८।०२	०४।१२।०८।००	११।०१।०७।३०	०४।२५।२७।००	४५।०२	२०।५२	२२।४८	०१।०१	०३।१९	०५।३५	०७।५०	१०।०७	१२।२४	१४।२९	१६।१५	१७।४६	१९।१५	२२।५३।४८					
०३ बु.	०६।०६।४०।१४	०५।१६।०७।१७	०२।२८।३६।४३	०४।१३।११।०८	११।०१।०२।३६	०४।२५।३३।१९	४५।००	२०।४९	२२।४५	००।५८	०३।१६	०५।३२	०७।४७	१०।०४	१२।२१	१४।२६	१६।१२	१७।४३	१९।१२	२२।५३।४८					
०४ बु.	०६।०७।२०।२३	०५।१९।५३।३६	०२।२८।४५।२४	०४।१४।३४।१६	११।००।५७।४२	०४।२५।२०।३८	४४।५८	२०।४५	२२।४१	००।५४	०३।१२	०५।२८	०७।४३	१०।००	१२।१७	१४।२२	१६।०८	१७।३९	१९।०८	२२।५३।४८					
०५ श.	०६।०८।१०।३१	०५।२१।३९।५५	०२।२८।५४।०५	०४।१५।४७।२४	११।००।५२।४८	०४।२५।१७।२८	४४।५६	२०।४१	२२।३७	००।५०	०३।०८	०५।२१	०७।३६	०९।१३	१२।१०	१४।१५	१६।०१	१७।३२	१९।०१	२२।५३।४८					
०६ र.	०६।०९।२१।२५	०५।२५।०४।४९	०२।२९।०९।१९	०४।१८।१४।३६	११।००।४२।५०	०४।२५।१०।६	४४।५२	२०।३४	२२।३०	००।४३	०३।०९	०५।१७	०७।३२	०९।१९	१२।०६	१४।११	१५।५७	१७।२८	१८।५७	२२।५३।४८					
०७ च.	०६।१०।११।५२	०५।२६।४७।१५	०२।२९।१६।५५	०४।१९।२८।१२	११।००।३७।५१	०४।२५।०७।५५	४४।५०	२०।३०	२२।२६	००।३९	०२।५७	०५।१३	०७।२८	०९।१५	१२।०२	१४।०७	१५।५३	१७।२८	१८।५३	२२।५३।४८					
०८ म.	०६।१०।४२।१९	०५।२८।२९।४१	०२।२९।२४।३१	०४।२०।४१।४८	११।००।३२।५३	०४।२५।०४।४४	४४।४८	२०।२७	२२।२३	००।३६	०२।५४	०५।१०	०७।२५	०९।१२	११।५९	१४।०४	१५।५०	१७।२१	१८।५०	२२।५३।४८					
०९ बु.	०६।११।२२।१५	०६।००।१२।०७	०२।२९।३२।०७	०४।२१।१५।२४	११।००।२७।५५	०४।२५।०१।३३	४४।४६	२०।२३	२२।१९	००।३२	०२।५०	०५।०६	०७।२१	०९।१८	११।५५	१४।००	१५।४६	१७।१७	१८।४६	२२।५३।४८					
१० बु.	०६।१२।०३।११	०६।०१।५४।३३	०२।२९।३९।४३	०४।२३।०९।००	११।००।२२।५७	०४।२४।५८।२३	४४।४४	२०।१९	२२।१५	००।२८	०२।४६	०५।०२	०७।१७	०९।३४	११।५१	१४।०२	१५।४२	१७।१८	१८।४२	२२।५३।४८					
११ शु.	०६।१२।४३।३७	०६।०३।३६।५९	०२।२९।४७।१९	०४।२४।२२।३६	११।००।१७।५९	०४।२४।५६।१३	४४।४२	२०।१६	२२।१२	००।२५	०२।४३	०४।५९	०७।१८	०९।३१	११।४८	१३।५३	१५।३९	१७।१०	१८।३९	२२।५३।४८					
१२ श.	०६।१३।२४।२९	०६।०५।२२।००	०२।२९।५३।५९	०४।२५।३६।१७	११।००।१३।३५	०४।२४।१४।२०	४४।४०	२०।१२	२२।०८	००।२१	०२।३९	०४।५५	०७।१७	०९।३७	११।४४	१३।४९	१५।३५	१७।१०	१८।३५	२२।५३।४८					
१३ र.	०६।१४।०५।२१	०६।०६।४७।०१	०३।००।०७।३९	०४।२६।४९।५८	११।००।०९।११	०४।२४।४८।५१	४४।३८	२०।०८	२२।०४	००।१७	०२।३५	०४।५१	०७।०६	०९।३३	११।१०	१३।५५	१५।३१	१७।१०	१८।३१	२२।५३।४८					
१४ च.	०६।१४।४६।४३	०६।०८।२२।०१	०३।००।०७।४८	०४।२७।०३।३९	११।००।०४।४७	०४।२४।४५।१०	४४।३६	२०।०५	२२।०१	००।१४	०२।३२	०४।४८	०७।०३	०९।२०	११।३७	१३।४२	१५।२८	१६।५९	१८।२८	२२।५३।४८					
१५ म.	०६।१५।२७।००	०६।०९।५७।००	०३।००।१३।५७	०४।२९।१७।२०	११।००।००।३३	०४।२४।४२।२७	४४।३४	२०।०३	२२।५७	००।१०	०२।२८	०४।४४	०६।५९	०९।१६	११।३३	१३।३८	१५।२४	१६।५५	१८।२४	२२।५३।४८					



तिथयः											नक्षत्राणि											योगाः											करणाणि											चन्द्रराशयः											स्पष्टसूर्यः											दिनमानम्											सू. उ.											सू. अ.											दिनाङ्कः											कार्तिककृष्णपक्षः											शकाब्दः १९४७, संवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क ०८.१०.१०२५ ई. चो दिनाङ्क २१.१०.१०२५ ई. यावत्। शुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः ११ तः याम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।											१७																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																									
तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथयः		तिथ	



तिथयः	तिथयः	नक्षत्राणि	योगाः	करणाणि	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ	सू. अ	दिनाङ्कः	कार्तिकशुक्लपक्षः	शकाब्दः १९४७, सवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क २२१०१२०२५ ई. तो दिनाङ्क ०५१११२०२५ ई. यावत्। शुद्धः, शरदतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।	१८						
दिनानि	द. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	राश्यादिः	द. प.	घ. मि.	घ. मि.	रा. सं. मी. अ.						
०१ बु.	३०१८	स. ०६१२९	स्वाती ४७१८	रा. ०११७	प्रोतिः ५५१७	वा. ३०१८	तुला	अहोरात्रम्	०६१०४१८८१३०	२८१००	६१२२	५१३८	३० ०५ २२						
०२ बु.	३५१२७	रा. ०८१३४	विशा ५३१४७	रा. ०३१५४	आयुः ५६१४२	वा. ०२१५३	तु. ३७१००	रा. ०९१५५	०६१०५१८८१९९	२८१०६	६१२३	५१३७	०१ ०६ २३						
०३ शु.	४०१४६	रा. १०१४२	अनु ६०१००	अहोरात्रम्	सोमा ५८१०५	तै. ०८१०७	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०६१०६१८८१०८	२८१०२	६१२४	५१३६	०२ ०७ २४						
०४ श.	४५१४३	रा. १२१४१	अनु ००१७७	प्रा. ०६१३१	शोभ. ५९१०९	व. १३१५५	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०६१०७१८८१२२	२८१०४	६१२४	५१३६	०३ ०८ २५						
०५ र.	५०१०३	रा. ०२१२६	ज्ये. ०६१२०	दि. ०८१५७	अग. ५९१४१	व. १७१५३	वृ. ०६१२०	दि. ०८१५७	०६१०८१८८१४६	२७१५४	६१२५	५१३५	०४ ०९ २६						
०६ च.	५३१२१	रा. ०३१४६	मूलम् १११४०	दि. १११०६	सुकर्मा ५९१२५	कौ. १६१४२	धनु	अहोरात्रम्	०६१०९१८८१२०	२७१५०	६१२६	५१३४	०५ १० २७						
०७ म.	५५१३३	रा. ०४१४०	पूषा १५१५५	दि. १२१४९	श्रुतिः ५८१४६	ग. २४१२७	घ. ३११४३	रा. ०७१०८	०६११०१८८१२४	२७१४७	६१२७	५१३३	०६ ११ २८						
०८ बु.	५६१२६	रा. ०५१०१	उषा १९१०५	दि. ०२१०५	शुलः ५६१०६	वि. २६१००	मकरः	अहोरात्रम्	०६११११८८१२८	२७१४४	६१२७	५१३३	०७ १२ २९						
०९ बु.	५६१००	रा. ०४१५२	श्रवणा २०१५८	दि. ०२१५१	गण्डः ५२१५५	वा. २६१४३	म. ५११७७	रा. ०२१५९	०६११२१८८१३२	२७१४१	६१२८	५१३२	०८ १३ ३०						
१० शु.	५४१२२	रा. ०४१४३	घनि. २११३५	दि. ०३१०६	वृद्धिः ४८१४६	तै. २५१४१	कुम्भः	अहोरात्रम्	०६११३१८८१३६	२७१३८	६१२८	५१३२	०९ १४ ३१						
११ श.	५११३६	रा. ०३१०७	शत २११००	दि. ०२१५३	ध्रुवः ४३१४४	व. २२१५९	कुम्भः	अहोरात्रम्	०६११४१८८१५५	२७१३४	६१२९	५१३१	१० १५ ०१						
१२ र.	४७१५०	रा. ०११३८	पूषा १९१२३	दि. ०२१५५	व्या. ३७१५४	व. १९१४३	कु. ०४१४८	दि. ०८१२५	०६११५१८८१४४	२७१३१	६१३०	५१३०	११ १६ ०२						
१३ च.	४३१४४	रा. १११४८	उभा १६१५९	दि. ०११४८	हर्षणः ३११२१	कौ. १५१२६	मीनः	अहोरात्रम्	०६११६१८८१३३	२७१२८	६१३०	५१३०	१२ १७ ०३						
१४ म.	३८१०४	रा. ०९१४५	रेवती १३१४६	दि. १२१०१	वज्रः २४१४४	ग. १०१३९	मी. १३१४६	दि. १२१०१	०६११७१८८१५२	२७१२५	६१३१	५१२९	१३ १८ ०४						
१५ बु.	३२१२१	रा. ०७१२८	अश्वि १०१०२	दि. १०१३३	सिद्धिः १६१४१	वि. ०५१४३	मेघ	अहोरात्रम्	०६११८१८८१४१	२७१२२	६१३२	५१२८	१४ १९ ०५						
मित्रमानकालिकदैनिकमङ्गलदिसष्टग्रह दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च											दैनिकलग्नसारणीचक्रम्								
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मित्रमानम्	मे. अ.	व. अ.	मि. अ.	क. अ.	सि. अ.	क. अ.	तु. अ.	व. अ.	घ. अ.	म. अ.	कु. अ.	मी. अ.
०१ बु.	०६१२५१४६१५६	०६१२९१४६१०४	०३१०१३११३१	०५११७१४८१२४	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०५	१९१०५	२११०१	२३१४४	०११३२	०३१४८	०६१०३	०८१२०	१०१३७	१२१४२	१४१२८	१५१५९	१७१३८
०२ बु.	०६१२६१२८१३३	०७१००१५०१२८	०३१०१३५१३९	०५११९१०२१४२	१०१२८१५६१००	०४१२३१५११३७	४४१०३	१९१०१	२०१५७	२३१४०	०११२८	०३१४४	०५१५९	०८१२६	१०१३३	१२१३८	१४१२४	१५१५५	१७१२४
०३ शु.	०६१२७१४०१०	०७१०११५४१५२	०३१०१३९१४७	०५१२०१४७१००	१०१२८१५२१३६	०४१२३१४८१२७	४४१०१	१८१५७	२०१५३	२३१४०	०११२४	०३१४०	०५१५५	०८१२३	१०१२५	१२१३४	१४१२०	१५१५१	१७१२०
०४ श.	०६१२७१५२१०	०७१०२१२९१००	०३१०१४२१३३	०५१२१३११३७	१०१२८१४९१३१	०४१२३१४२१०५	४३१५७	१८१५०	२०१४६	२२१५९	०११४७	०३१३३	०५१४८	०८१०५	१०१२२	१२१२७	१४१४३	१५१४४	१७१४३
०५ र.	०६१२८१३४१०९	०७१०३१०३१०८	०३१०१४५११९	०५१२२१४६१४४	१०१२८१४६१२६	०४१२३१४२१०५	४३१५५	१८१४६	२०१४२	२२१५५	०११४३	०३१२९	०५१४४	०८१०१	१०१२८	१२१२३	१४१०९	१५१४०	१७१०९
०६ च.	०६१२९१४६१०८	०७१०३३३७१४६	०३१०१४८१०५	०५१२४१००१५१	१०१२८१४३१२२	०४१२३१३८१५४	४३१५५	१८१४६	२०१४२	२२१५५	०११४३	०३१२९	०५१४४	०८१०१	१०१२८	१२१२३	१४१०९	१५१४०	१७१०९
०७ म.	०६१२९१५८१०७	०७१०४१११२४	०३१०१५०१५१	०५१२४१५५१२८	१०१२८१४०१४८	०४१२३१३८१५४	४३१५५	१८१४६	२०१४२	२२१५५	०११४३	०३१२९	०५१४४	०८१०१	१०१२८	१२१२३	१४१०९	१५१४०	१७१०९
०८ बु.	०७१००१४०१०६	०७१०४१४५१३२	०३१०१५३१३७	०५१२६१३०१०५	१०१२८१३७१४४	०४१२३१३२१३२	४३१५०	१८१३८	२०१३४	२२१४७	०११०५	०३१२९	०५१३६	०७१५३	१०१२०	१२१२५	१४१०१	१५१३२	१७१०९
०९ बु.	०७१०११२१०५	०७१०५११९१४०	०३१०१५६१२३	०५१२७१४४१४१	१०१२८१३४१४०	०४१२३१२९१२२	४३१५०	१८१३४	२०१३०	२२१४३	०११०१	०३१२९	०५१३२	०७१४४	१०१२०	१२१२५	१४१०१	१५१३८	१६१५७
१० शु.	०७१०२१४६१३१	०७१०५१५९१२५	०३१०२१००१२९	०६१००१४४१०६	१०१२८१२८१३९	०४१२३१२३१०१	४३१४७	१८१२६	२०१२२	२२१३५	००१५७	०३१२९	०५१२४	०७१४५	१०१२०	१२१२७	१४१०३	१५१२४	१६१५३
११ श.	०७१०३१२८१५८	०७१०६१०५१०२	०३१०२१०११४८	०६१०११२८१५४	१०१२८१२३१४५	०४१२३१२६१४२	४३१४९	१८१३०	२०१२६	२२१३९	००१५७	०३१२९	०५१२४	०७१४५	१०१२०	१२१२७	१४१०३	१५१२४	१६१५३
१२ र.	०७१०४११११२४	०७१०६१०३१३९	०३१०२१०३१०७	०६१०२१४३१४२	१०१२८१२३१४५	०४१२३१२६१४२	४३१४९	१८१३०	२०१२६	२२१३९	००१५७	०३१२९	०५१२४	०७१४५	१०१२०	१२१२७	१४१०३	१५१२४	१६१५३
१३ च.	०७१०४११११२४	०७१०६१०३१३९	०३१०२१०३१०७	०६१०२१४३१४२	१०१२८१२३१४५	०४१२३१२६१४२	४३१४९	१८१३०	२०१२६	२२१३९	००१५७	०३१२९	०५१२४	०७१४५	१०१२०	१२१२७	१४१०३	१५१२४	१६१५३
१४ म.	०७१०४१५३१५०	०७१०६१०३१४२	०३१०२१०४१२६	०६१०३१५८१३०	१०१२८१२११४८	०४१२३१२३१२८	४३१४९	१८१३०	२०१२६	२२१३९	००१५७	०३१२९	०५१२४	०७१४५	१०१२०	१२१२७	१४१०३	१५१२४	१६१५३
१५ बु.	०७१०५१३६१४६	०७१०५१४४१२३	०३१०२१०५१४५	०६१०५१४३१४८	१०१२८१२८१४२	०४१२३१२०१४७	४३१४०	१८१३१	२०१०७	२२१२०	००१३८	०२१५४	०५१०९	०७१३८	१११४८	१३१३७	१५१०५	१६१३४	

वृश्चिके बुधः ५७१०४, अग्न्यादिदेवोत्थापनम्, बलिपूजा, अन्नकुटः, गोवर्द्धनपूजा, गोक्रीडा, गोपूजा, वृषभे औषधदानम्, महाकविकालिदासजयन्त्युत्सवः-उज्जयिग्रामे तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां तत्कर्मस्थले च, ४

चन्द्रदर्शनम् ४५ सौम्यशुद्धफल समर्पम्, यमद्वितीया, भ्रातृद्वितीया, भगिनीगृहे भोजनम्, यमुनास्नानम्, श्रीचित्रगुप्तपूजा, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्।

स्वातया रात्रिः ३६१०२ खीनपुसुसोयोगी वृषलान् मण्डकवाहनब्रह्मण्डानाडीपतिशशमिस्तेन वातच्छिन्नवृष्टियोगः, कडगहल्ली ३ प्रतिहारपट्टीव्रतीनां निरामिषभोजनम्, उत्तरयात्रा।

श्रीगणेश ४ व्रतम्, प्रतिहारपट्टीव्रतीनां सयम् (नहा-चाय), पश्चिमोत्तरयात्रा चतुर्थ्याम्, म. १३१५ उपरि ४५१४३ यावत्।

प्रतिहारपट्टीव्रतीनामेकभुक्तम् (खरना), उत्तरयात्रा ज्येष्ठ्यायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा पञ्चम्याम्, म. ००१२० उपरि १५१२० यावत्।

प्रतिहारपट्टीव्रतम्, सायंकालिकार्पणम् उत्तरयात्रा पञ्चम्याम्।

प्रातःकालिकार्पणम् पारणञ्च, जगद्धात्रीपूजारम्भः, सामापूजारम्भः, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे, वृश्चिके मङ्गलः ४६१३४, म. ५५१३३ उपरि।

गोपाष्टमी, गोपूजा, पश्चिमास्तो मङ्गलः १७१०८, म. २६१०० यावत्।

अध्यायनवर्मा, गङ्गास्नानदानादि, धात्रीच्छायायां भोजनम्, दीक्षाग्रहणम्, सत्ययुगादि, अहल्याजयन्त्युत्सवः, राजर्षिसौरभ्यजनकजयन्तीमहोत्सवः, पञ्चकारम्भो दिवा घ. ०२१५१ उपरि।

गृहप्रवेशः, गृहारम्भः शतभिषायाम्, जगद्धात्रीविसर्जनम्, सरदारपटेल(१४९)जयन्ती।

नवम्बर ११ तुलायां शुक्रः ३२१२९, म. २२१५९ उपरि ५११३६ यावत्, द.ति. ५११३६ उपरि, गृहारम्भप्रवेशो शतभिषायाम्, देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषाम् ११ व्रतोद्यापनम्, श्रीमपञ्चकव्रतारम्भः, पश्चिमयात्रेकादश्यां पूर्वोत्तरे

बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणम्, दामोदर १२, तुलसाविवाहः, चातुर्मास्यव्रतपारणम्, तामसमन्वादि, द.ति. ४७१५० यावत्।

वक्रो बुधः २११३१, प्रदोष १३ व्रतम्, विद्यापति(५९९)स्मृतिदिवसः, बाबासाहेबवामदेवमहोदय(२३६)स्मृतिदिवसः, गृहप्रवेशाख्योदरयाम्, गृहारम्भो रेवत्यायां पश्चिमोत्तरयात्रा त्रयोदशीरेवत्यायां।

प्रदोष १४ व्रतम्, वैकुण्ठ १४, कार्शोविश्वनाथप्रतिष्ठादिनम्, पश्चिमयात्रा रेवत्यायां ततः उत्तरा विना यात्रा, पञ्चकान्तो दिवा घ. १२१०१ उपरि, म. ०११४६ उपरि १६१४६ यावत्, म. ३८१०४ उपरि।

कार्तिकी १५ गङ्गास्नानदानादि, सोनगुप्तापलायनम्, श्रीमपञ्चकव्रतसमाप्तिः, सर्वदेवदेव्युत्थापनम्, औत्तममन्वादि, निम्बार्क-नानक(५५६)जयन्ती, हरिहरभासपुष्करवराहवैद्यनाथ स्नानादिकम्, गोरालाषट्ठे कमलज्योतिर्विजयः, जीवधरपट्टे जीववत्सायां स्नानदानार्चनादिकम्, पुणिमाव्रतम्, कार्तिकेयवतारः, कार्तिकेयपूजनम्, पुर्वाभिमुखसामाविसर्जनम्, गृहारम्भ अश्विन्याम्, उत्तर विना यात्राश्विन्याम्, म. ०५१४३ यावत्।

मित्रमानकालिकदैनिकमङ्गलदिस्पष्टग्रह दिनग्रहयान्तर गणितः							दैनिकलक्षणसारिणीपत्रम्										०३ भूगो वल्लो ०८१६०१०८१२८ अपराशा २२१५३१५३		विधिपरिचयः- कार्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या । तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्ति निर्मा पौतपुष्पाश्चतुर्दिभिः पूजयेत् गच्छ पूजयेत् । गोवर्द्धनपुष्पमन्त्र- लोकवर्द्धनग्रहाय नमो क्लृप्तगणपतये कृष्णवह्निस्तच्छायं तवा कोटिपदो तव । गोवर्द्धनपुष्प- लक्ष्मीं लोकपालानां च गौलाय सविता । वहति यथायं स मे पाप यच्छिरोऽनु । अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पुष्टतः । गावो मे हृदयं मायं मया वसाम्यहम् । प्रातर्द्वितीयया पौतर्गोवर्द्धनपुष्प- प्रातस्त्वानुजाताहं पुष्टं भस्मिन् कृष्ण । प्रीत्ये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः । कनिष्ठप्रातर् सति- प्रातस्त्वानुजाताहं पुष्टं भस्मिन् कृष्ण । प्रीत्ये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः । काशीमातृपुष्प- काशीचाप्या समाश्रित्य पुष्टं योजेत् हि यस्य आश्रित्य पौत्राण्येता तु वार्षिकं किरित्व हेतुः । धार्मिकलिताहोत्रं कार्मिकविभूतितः । धार्मिकानां तु नारायणो भवेत् । एकारद्वया विष्णुरव्यापनमन्त्र- ब्रह्मेन्दुरद्वैतविद्यमानो भवानुविर्ब्रह्मदेवतः प्राप्ता तवेयं किं कौमुद्यालया जायुष्य कलनाभः । मेघा तवा निर्मलपुण्ड्रदं शङ्खमुपवर्द्ध मनोहराणि । अहं दहनोक्तिं च पुण्यहेतोर्जागुष्य जायुष्य च लोकनाभः । उत्तिष्ठोक्तिं गोवर्द्ध त्वं निज द्रोणं त्वया चोर्वीयामनेन प्रोक्षितं धुवनमप्यम् । हरिश्चर्या- आ-पा-का-सितपयस्य मैत्राकानां दादशो बुधवारो हरिर्वाग उच्यते । आषाढशुक्लद्वितीयायां सूर्यास्तकाले वानुपुन्यवर्षः, भाद्रपदशुक्लद्वि तमवार्यायां, कार्तिकशुक्लद्वितीयायां बुधवैवातनक्षत्रयोः योगेन हरिश्चर्यायोगः स्यात् । तत्र व्रतमनकल्प पुष्यव्रतम्- कार्तिकयोः यो बुधवारो कृत्वा नक्त समाचरेत् । स जीव पद्मभोजितं वृषभमिदं क्षुण्णं । हरिश्चर्या- मार्ग्या पृथ्वीदतो मङ्गलः ०८ तः पश्चिमास्तः, मार्ग्या पश्चिमोदितो बुधः १३ तः वकी, यो पृथ्वीदतो बृहस्पतिः, मार्ग्या पृथ्वीतः शुक्रः, वकी पृथ्वीतः शनिः । वातावनः प्रातर्गोवर्द्धनभागयोः वातातपमेघच्छायादयस्तन्मध्यभाये वायुचार्चनचतुष्टयः ।
दिनातिथः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मित्रमानम्	मे. अ.	व. अ.	मि. अ.	क. अ.	सि. अ.	क. अ.	तु. अ.	व. अ.	घ. अ.	म. अ.	कु. अ.	मी. अ.
०१ बु.	०६१२५१४६१५६	०६१२९१४६१०४	०३१०१३११३१	०५११७१४८१२४	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०५	१९१०५	२११०१	२३१४४	०११३२	०३१४८	०६१०३	०८१२०	१०१३७	१२१४२	१४१२८	१५१५९	१७१३८
०२ बु.	०६१२६१२८१३३	०७१००१५०१२८	०३१०१३५१३९	०५११९१०२१४२	१०१२८१५६१००	०४१२३१५११३७	४४१०३	१९१०१	२०१५७	२३१४०	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
०३ बु.	०६१२७१००१००	०७१०११५५१२९	०३१०१३९१४७	०५१२०१७३००	१०१२८१५२१३६	०४१२३१५११३७	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
०४ श.	०६१२८१२८१३०	०७१०२१२९१००	०३१०१३८१३३	०५१२११११३७	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
०५ श.	०६१२९१३८१३९	०७१०३१३०१०८	०३१०१३९१४७	०५१२२१११३७	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
०६ च.	०६१२९१३८१३९	०७१०३१३३७४	०३१०१३९१४७	०५१२३१११३७	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
०७ म.	०६१२९१५८१०७	०७१०४११११२४	०३१०१४०११४	०५१२४११०१०५	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
०८ बु.	०६१३०१००१०६	०७१०४११११३२	०३१०१४३१३७	०५१२६१०१०५	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
०९ बु.	०६१३०१२०१०५	०७१०५१११३०	०३१०१४६१३९	०५१२७१११३०	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
१० श.	०७१३०१४०१०४	०७१०५११३०८	०३१०१४९१३९	०५१२८११३०८	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
११ श.	०७१३०१४६१३१	०७१०५११३०८	०३१०१४९१३९	०५१२९११३०८	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
१२ र.	०७१३०१४६१३१	०७१०५११३०८	०३१०१४९१३९	०५१२९११३०८	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
१३ च.	०७१३०१४६१३१	०७१०५११३०८	०३१०१४९१३९	०५१२९११३०८	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
१४ म.	०७१३०१४६१३१	०७१०५११३०८	०३१०१४९१३९	०५१२९११३०८	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०
१५ बु.	०७१३०१४६१३१	०७१०५११३०८	०३१०१४९१३९	०५१२९११३०८	१०१२८१५९१४५	०४१२३१५४१४८	४४१०१	१९१०४	२०१५३	२३१३७	०११२८	०	०	०	०	०	०	०	०



विषयः	विषयः			नक्षत्राणि		योगाः	करणाणि	चन्द्रराशयः		स्यष्टसूर्यः	दिनमानम्	सु. उ.	सु. अ.	दिनाङ्काः
दिनानि	द. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	राश्यादिः	द. प.	घ. मि.	घ. मि.	रा. क. नो. अ.	
०१ बु.	२६।२४	सं. ०५।०६	भरणी ०५।१६	दि. ०८।१४	व्यती. ०८।१३	क्रौ. २६।२४	मे. १९।१३	दि. ०२।२९	०६।१९।१०।२९	२७।१९	६।३२	५।२८	१५ २० ०६	
०२ शु.	२०।२५	दि. ०२।१३	कृति. ०१।१४	दि. ०७।१५	वरी. ००।१८	ग. २०।२५	वृष. ००।१८	दि. ०३।२८	०६।२०।१०।१७	२७।१६	६।३३	५।२७	१६ २१ ०७	
०३ श.	१४।३५	दि. १२।२४	मृग. ५३।१४	रा. ०४।०३	शिव. ४५।२९	वि. १४।३५	वृ. २५।१०	दि. ०४।२८	०६।२१।११।१८	२७।२२	६।३४	५।२६	१७ २२ ०८	
०४ र.	०९।०५	दि. १०।१२	आर्द्रा ५०।२१	रा. ०२।१४	सिद्ध. ३८।१२	वा. ०९।०५	मिथुनम्	अर्धरात्रम्	०६।२२।११।१९	२७।०९	६।३४	५।२६	१८ २३ ०९	
०५ च.	०४।०८	दि. ०८।१४	पुन. ४७।३९	रा. ०१।३९	साध्य. ३१।३०	तै. ०४।१०	मि. ३३।२०	रा. ०७।१५	०६।२३।१२।२०	२७।०६	६।३५	५।२५	१९ २४ १०	
०७ म.	५६।३४	रा. ०५।१३	पुष्य. ४५।१८	रा. १२।१४	शुभ. २५।२४	वि. २८।१५	कर्क.	अर्धरात्रम्	०६।२४।१२।१९	२७।०३	६।३५	५।२५	२० २५ ११	
०८ बु.	५४।१७	रा. ०४।१९	श्ले. ४४।१६	रा. १२।३४	शुक्ल. २०।०५	वा. २५।२६	क. ४४।१६	रा. १२।३४	०६।२५।१३।२२	२७।००	६।३६	५।२४	२१ २६ १२	
०९ बु.	५३।१२	रा. ०३।१४	मघा ४५।१३	रा. १२।१४	ब्रह्म. १५।३६	तै. २३।१५	सिंह.	अर्धरात्रम्	०६।२६।१३।१२	२६।१७	६।३७	५।२३	२२ २७ १३	
१० शु.	५३।२३	रा. ०३।१८	पुष. ४६।१४	रा. ०१।१८	पेन्द्र. १२।०८	व. २३।१८	सिंह.	अर्धरात्रम्	०६।२७।१४।२२	२६।१४	६।३७	५।२३	२३ २८ १४	
११ श.	५४।१५	रा. ०४।३६	उफ. ४९।२९	रा. ०२।२६	वैभृति. ०९।१०	ब. २४।१०	सि. ०२।२४	दि. ०७।३६	०६।२८।१५।०५	२६।१०	६।३८	५।२२	२४ २९ १५	
१२ र.	५७।३६	रा. ०५।१४	हस्त. ५३।२७	रा. ०४।०२	विष्क. ०८।१४	क्रौ. २६।१६	कन्या	अर्धरात्रम्	०६।२९।१५।१८	२६।१६	६।३९	५।२१	२५ ३० १६	
१३ च.	६०।१०	अर्धरात्रम्	चित्रा ५८।२९	रा. ०६।०४	प्रोति. ०७।३९	ग. २९।३१	क. २५।१८	सं. ०५।०३	०७।००।१६।३१	२६।१२	६।४०	५।२०	२६ ०१ १७	
१३ म.	०१।२५	प्रा. ०७।१४	स्वाती ६०।००	अर्धरात्रम्	आयु. ०७।१४	व. ०१।२५	तुला	अर्धरात्रम्	०७।०१।१७।१४	२६।३९	६।४०	५।२०	२७ ०२ १८	
१४ बु.	०६।०७	दि. ०९।०८	स्वाती ०४।२२	दि. ०८।२६	सोभा. ०८।१८	श. ०६।०७	तु. ५४।१०	रा. ०६।२१	०७।०२।१७।१७	२६।३६	६।४१	५।१९	२८ ०३ १९	
३० बु.	११।२०	दि. ११।१३	विशा. १०।१६	दि. १०।१९	शोभ. १०।०६	ना. ११।२०	वृश्चिक.	अर्धरात्रम्	०७।०३।१८।१०	२६।३३	६।४१	५।१९	२९ ०४ २०	

## अग्रहायणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४७, सवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क ०६।११।२०२५ ई. तो दिनाङ्क २०।११।२०२५ ई. यावत्।  
शुद्धः, शरदृतु, १२ तो हेमन्तर्तु, याम्यगोल, याम्यायनम्, उत्तरे काल, १२ त. पूर्वे कालः।

१९

पश्चिमास्तो वृषः ३३।१९, विशाखाया रविः ५३।०५.  
रोहिणीद. ५५।१२, परिषद. ५२।१०, भ. ४७।३० उपरि, गृहास्त्रो रोहिण्याम्, पूर्वदक्षिणयात्रा तृतीयांरोहिण्योः रात्रौ घं. ०५।३५ यावत्ततः पश्चिमा विना यात्रा मृगशिरसि।  
गृहास्त्रस्तृतीयायाम्, पूर्वा विना यात्रा मृगशिरसि, गजानन ४ व्रतम्, चन्द्रोदयो रात्रौ घं. ०८।१३, भ. १४।३५ यावत्, (०३-०४) एकोद्विष्टम्।  
दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ।  
षष्ठीद. ५५।१७, अवमम्, भ. ५९।१५ उपरि, वीठपञ्चमी, मनसादेवीशयनम्, विषहरापूजनम्, दक्षिणपश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमांतरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वा विना यात्रा रात्र्यन्ते घं. ०६।२९ यावत्।  
वक्रो बृहस्पतिः ५३।१२, भ. २८।१५ यावत्, उतरा विना यात्रा पुष्ये।  
काल-पेरवाष्टमी, कालभैरवावतारः, कालभैरवव्रतं पूजनञ्च, महाराजाधिराजकोमेष्टरसिंह(१९९)जयन्ती, अष्टकाश्राद्धम्, ग. ३३।१६ उपरि ४८।१६ यावत्।  
अन्यष्टकाश्राद्धम्, पूर्वोत्तरयात्रा दशम्याम्।  
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वकल्यान्याम्, वक्रतुलाया वृषः ५२।१०, भ. २३।१८ उपरि ५३।२३ यावत्।  
उत्पन्ना ११ व्रत सर्वेषाम्, दक्षिणयात्रैकादश्या हस्ते, दति. ५४।१४ उपरि।  
गोमूत्रेण पारणम्, कार्तिकव्रताकाशरादोपदानतुलसीव्रतोद्यापनानि, मासान्, वृश्चिके रविः ४७।३२ म् ३० फलं साम्यम्, दति. ५७।३६ यावत्।  
विष्णुपञ्चैष्टकान्तिपुण्यकालो घं. १२।१० यावद्विने, पुण्याहः, कार्तिकस्नानसमाप्तिः, सिमरियाधाम्नि कल्पवाससमाप्तिः, प्रदोष १३ व्रतम्, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्।  
मासादि, प्रदोष १४ व्रतम्, भ. ०१।२५ उपरि ३३।१६ यावत्।  
॥ ००॥  
अनुपयात्रा रविः ०५।०४, मार्गी ३० स्नानदानादि, पश्चिमांतरयात्रा विवाहञ्च प्रतिपदि, (०१) एकोद्विष्टम्।

मार्गादिमासेष्वेकादशीपारणा वस्तुनि— गोमूत्रेण च गोमयेन पयसा दध्ना गवां सर्पिषा।  
सहस्रौदककार्तवीर्ययज्ञैर्धूर्गैस्तथा दुर्वया॥ कुम्भाण्डेन गुडेन बिल्वतुलसीपत्रेण वा पारणा। द्वादश्या मुनिभिस्त्रया निगदिता मार्गादिमासक्रमात्॥

मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तर गतिश्च										दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्										०२ भुगी वल्लो ०८।१०।०८।१२ अयनांशः २२।१३।१५।४				
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अ.	बु. अ.	मि. अ.	क. अ.	सि. अ.	क. अ.	तु. अ.	बु. अ.	ब. अ.	म. अ.	कु. अ.	मी. अ.		१२	१०	९	श. रा.
०१ बु.	०७।०६।१८।१४	०७।०५।२५।०५	०३।०२।०७।०४	०६।०६।२८।०६	१०।२८।१६।२६	०४।२३।०७।०७	४३।३९	१८।०७	२०।०३	२२।१६	००।३४	०२।१०	०५।१५	०७।२२	०९।३९	११।१४	१३।३०	१५।०१	१६।३०		१२	१०	९	श. रा.
०२ शु.	०७।०७।०१।०८	०७।०५।०५।१७	०३।०२।०८।२३	०६।०७।१४।१४	१०।२८।१४।००	०४।२३।०३।१७	४३।३८	१८।०३	१९।१५	२२।१२	००।३०	०२।१६	०५।१९	०७।१८	०९।३५	११।१०	१३।२६	१४।१७	१६।२६		१२	१०	९	श. रा.
०३ श.	०७।०७।१३।१८	०७।०४।२२।१५	०३।०२।०८।१०	०६।०८।१७।१३	१०।२८।१२।१९	०४।२३।००।१६	४३।३६	१८।०५	१९।१५	२२।१०	००।२६	०२।१२	०४।१७	०७।१४	०९।३९	११।१६	१३।२२	१४।१३	१६।२२		१२	१०	९	श. रा.
०४ र.	०७।०८।२६।१८	०७।०३।१४।०१	०३।०२।०८।१७	०६।१०।१२।१४	१०।२८।१०।३८	०४।२२।१७।३५	४३।३४	१८।१५	१९।१५	२२।१०	००।२२	०२।३८	०४।१३	०७।१०	०९।२७	११।३२	१३।१८	१४।१९	१६।२८		१२	१०	९	श. रा.
०५ च.	०७।०९।०९।३८	०७।०२।१७।२३	०३।०२।०९।१३	०६।१२।१७।१०	१०।२८।०८।१७	०४।२२।१४।२४	४३।३२	१८।१५	१९।१७	२२।१०	००।१८	०२।३४	०४।१९	०७।०६	०९।२३	११।२८	१३।१४	१४।१५	१६।२४		१२	१०	९	श. रा.
०७ म.	०७।०९।१२।२८	०७।०२।१४।३५	०३।०२।०९।२९	०६।१२।१४।१८	१०।२८।०५।३६	०४।२२।१८।०२	४३।३०	१८।१३	१९।३९	२२।१२	००।१०	०२।२६	०४।१८	०६।१८	०९।१५	११।२०	१३।०६	१४।३७	१६।०६		१२	१०	९	श. रा.
०८ बु.	०७।१०।३५।१८	०७।०१।३१।१७	०३।०२।०९।०४	०६।१५।१२।१४	१०।२८।०३।१६	०४।२२।१४।१२	४३।२९	१८।३९	१९।३५	२२।१८	००।०६	०२।२२	०४।३७	०६।१४	०९।११	११।१६	१३।०२	१४।३३	१६।०२		१२	१०	९	श. रा.
०९ बु.	०७।११।१८।०८	०७।००।१९।००	०३।०२।०८।३६	०६।१५।१२।१४	१०।२८।०३।१६	०४।२२।१४।१२	४३।२९	१८।३५	१९।३१	२२।१८	००।०२	०२।१८	०४।३३	०६।१०	०९।०७	११।१२	१२।१८	१४।२९	१५।१८		१२	१०	९	श. रा.
१० शु.	०७।१२।२०।१८	०७।००।०६।१३	०३।०२।०८।०८	०६।१६।३७।१२	१०।२८।०२।१६	०४।२२।१९।१२	४३।२७	१८।३५	१९।३१	२२।१४	००।०२	०२।१८	०४।३३	०६।१०	०९।०७	११।१२	१२।१८	१४।२९	१५।१८		१२	१०	९	श. रा.
११ श.	०७।१२।२४।०९	०६।२९।२४।३३	०३।०२।०६।१३	०६।१७।१२।१५	१०।२८।०१।३०	०४।२२।३८।३१	४३।२५	१८।३१	१९।२७	२२।१०	०२।१४	०४।१९	०६।१८	०९।१५	११।२०	१३।०६	१४।३७	१६।०६		१२	१०	९	श. रा.	
१२ र.	०७।१३।२७।२०	०६।२८।२२।१४	०३।०२।०५।१८	०६।१८।१८।०७	१०।२८।००।१४	०४।२२।३५।२०	४३।२३	१८।२७	१९।२३	२२।३६	०२।१५	०४।१९	०६।३७	०८।१४	१०।१५	१२।१४	१४।१६	१५।१४		१२	१०	९	श. रा.	
१३ च.	०७।१४।०३।११	०६।२८।०९।१३	०३।०२।०३।१३	०६।१०।१३।१९	१०।२८।०५।१८	०४।२२।३२।०९	४३।२१	१८।२२	१९।१८	२२।३१	०२।१५	०४।१९	०६।३७	०८।१४	१०।१५	१२।१४	१४।१६	१५।१४		१२	१०	९	श. रा.	
१३ म.	०७।१४।१३।१२	०६।२७।१९।३४	०३।०२।०२।२८	०६।१९।२८।३१	१०।२८।०५।१२	०४।२२।२८।१८	४३।१९	१८।१८	१९।१४	२२।२७	०२।१०	०४।१९	०६।३७	०८।१४	१०।१५	१२।१४	१४।१६	१५।१४		१२	१०	९	श. रा.	
१४ बु.	०७।१५।३६।१३	०६।२६।३७।१५	०३।०२।०१।०३	०६।२२।१३।१३	१०।२८।०८।२६	०४।२२।२५।१७	४३।१७	१८।१४	१९।१०	२२।२३	०२।१७	०१।१७	०४।१२	०६।२९	०८।१६	१०।१५	१२।३७	१४।०८	१५।३७		१२	१०	९	श. रा.
३० बु.	०७।१६।२०।०४	०६।२५।१६।१६	०३।०१।१५।३९	०६।२३।१८।१५	१०।२८।०७।१०	०४।२२।२२।३६	४३।१६	१८।१०	१९।०६	२२।१९	०२।३७	०१।१३	०४।०८	०६।२५	०८।१८	१०।१५	१२।३३	१४।०४	१५।३३		१२	१०	९	श. रा.

विधिधिविषया— मार्गकृष्णष्टम्या श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतस्नादिने तत्पूजनम्पूजयाश्च कार्यम्। पञ्चोपचारपूजा— गन्धः पुष्पञ्च पुष्पं दीपो नैवेद्यमेव च। पञ्चोपचारः कथिता देवना प्रीतिहेतवः॥ दशोपचारपूजा— अर्घ्य— पादाचमनोयमधुपर्कचमनानि च। गन्धादिपञ्चकञ्चेति उपचारः दर्शोदिताः॥ पौडशोपचारपूजा— आसनं स्वागतं चार्घ्यं पादमाचमनं तथा। मधुपर्कचमनस्नानवसनाभरणानि च। गन्धपुष्पपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा॥ अष्टाङ्गार्घ्यं— आपः क्षीरं कुशाग्राणि धृतञ्च दधितण्डुलाः। सिद्धार्थकाष्ठं पुष्पाणि चाष्टाङ्गार्घ्यं प्रकथ्यते॥ अष्टाङ्गपूजाम्— उरसा शिरसा दृष्ट्वा मनसा वचसा तथा। पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां शृणामोऽष्टाङ्गं हरितः॥ वरणादिकग्रहणम्— अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्। देव्याः (विष्णोः) पादौदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥ पञ्चगव्यम्— गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं श्रेष्ठं महापातकनाशनम्॥ पञ्चामृतम्— शर्करा मधु दुग्धं च पूतं दधि समाश्रयम्। पञ्चामृतमिदं श्रेष्ठं देवशुद्धौ विधीयते॥ पञ्चरत्नानि— कनकं कुलशाली नीलं पद्मरागञ्च मौक्तिकम्। एतानि पञ्चरत्नानि कलशस्थान्तरे धिपेत्॥ पञ्चपल्लवाः— अश्वत्थोदुम्बरः प्लवचतन्वयोधपल्लवाः। पञ्चपल्लव इत्युक्तः कलशो निःक्षिपेद्बुधः॥ सप्तधान्यम्— यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्कस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥ सर्वोषधिः— मुरा मासी ववा कुष्ठं शैलेय रजनीद्रवम्। शुण्ठी चम्पकमुस्ताञ्च सर्वोषधिणः स्मृतः॥ सर्वोषधीनामभावे दद्यादेकं शतावरम्॥ सप्तामृतिका— अश्वस्थान



दिनांक	दि. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	स्मृतिपुरा:	दिनमानम्	सु. उ.	सु. अ.	दिनाङ्कः
०१ शु	१६।४३	दि. ०१।२३	अनु. १७।७	दि. ०१।३७	अग. ११।२७	ब. १६।४३	बृजिकः	अहोरात्रम्	०७।०४।१९।२३	२६।३०	६।४२	५।४८	३०।०५।२१
०२ श	२१।४६	दि. ०३।२४	ज्ये. २३।२७	दि. ०४।०५	सुकर्मा १२।३५	को. २१।४६	बृ. २३।२७	दि. ०४।०५	०७।०६।१०।४८	२६।२८	६।४२	५।४८	०१।०६।२२
०३ र	२६।४०	स. ०५।११	मूलम् २८।१९	स. ०६।१९	भुवि. १३।१७	ग. २६।४०	धनुः	अहोरात्रम्	०७।०७।१०।१३	२६।२६	६।४३	५।४७	०२।०७।२३
०४ च	२९।२८	स. ०६।३०	पूषा ३३।३४	ग. ०८।०९	शुल. १३।४४	वि. २९।२८	घ. ४९।२६	ग. ०२।२९	०७।०८।१०।२०	२६।२४	६।४३	५।४७	०३।०८।२४
०५ म	३१।४३	ग. ०७।२५	उषा ३७।०२	ग. ०९।३३	गण्डः १२।४८	ब. ००।३६	मकर	अहोरात्रम्	०७।०९।१०।३०	२६।२२	६।४४	५।४६	०४।०९।२५
०६ बु	३२।३६	ग. ०७।४६	श्रवणा ३९।४२	ग. १०।२५	बृजि. १०।२६	को. ०२।४०	मकर	अहोरात्रम्	०७।१०।१०।३८	२६।२०	६।४४	५।४६	०५।१०।२६
०७ वृ	३२।४१	ग. ०७।३६	मनि ४०।०६	ग. १०।४६	ध्रुवः ०७।३३	ग. ०२।२४	म. १०।३९	दि. ११।००	०७।११।०४।३३	२६।१९	६।४४	५।४६	०६।११।२७
०८ श	३०।३२	स. ०६।५७	शत ३९।४९	ग. १०।४०	व्या. ०३।४०	वि. ०१।२२	कुम्भ	अहोरात्रम्	०७।१२।०५।४७	२६।१८	६।४४	५।४६	०७।१२।२८
०९ श	२७।४७	स. ०५।५२	पूषा ३८।२६	ग. १०।०७	वज्रः ५३।४०	को. २७।४७	कु. २३।४७	दि. ०४।१६	०७।१३।०६।५२	२६।१६	६।४५	५।४५	०८।१३।२९
१० र	२४।०३	दि. ०४।२२	उषा ३६।१५	ग. ०९।१५	मिदि. ४६।४९	ग. २४।०३	मीनः	अहोरात्रम्	०७।१४।०७।५७	२६।१४	६।४५	५।४५	०९।१४।३०
११ च	१९।२७	दि. ०२।३३	रेवती ३३।४०	ग. ०८।०२	ज्ये. ३९।५०	वि. १९।२७	मी ३३।४०	ग. ०८।०२	०७।१५।०९।०१	२६।१२	६।४६	५।४४	१०।१५।०१
१२ म	१४।१५	दि. १२।२८	अभि २९।३३	स. ०६।३५	वरी ३२।२२	वा. १४।१५	मेघः	अहोरात्रम्	०७।१६।०१०।५	२६।११	६।४६	५।४४	११।१६।०२
१३ वृ	०८।३९	दि. १०।१४	भरणी २५।३२	दि. ०४।१९	परिष. २४।३५	तै. ०८।३९	मे. ३९।२९	ग. १०।३४	०७।१७।११।०९	२६।१०	६।४६	५।४४	१२।१७।०३
१४ बु	०२।४६	दि. ०७।५२	कृति. २१।१९	दि. ०३।१८	शिवः १६।४३	व. ०२।४६	वृषः	अहोरात्रम्	०७।१८।१२।४३	२६।०९	६।४६	५।४४	१३।१८।०४

अग्रहायणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४७, सवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क २१।१२।२०२५ ई. तो दिनाङ्क ०४।१२।२०२५ ई. यावत्।  
शुद्धः, हेमन्तः, याम्यगोलः, याम्यायनम्, पूर्वे कालः।

उत्तरयात्रा हिरण्यमन्त्र प्रोक्तः, कर्णवेषो विवाहानुराधायां, मुण्डन ज्येष्ठायां।  
चन्द्रदर्शनम् १५ साम्यगुणफल महार्घम्, ग. १७।२७ उपरि ३२।२७ यावत्, पूर्वोदितो बुधः ३२।५५, पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठयां तत उत्तरयात्रा, (०२) एकोद्विष्टम्।  
गणेश ४ व्रतम्, धाम्यासिकविभक्त्याऽप्योऽत्र उशोर(कहल)चन्द्रेणैव सूर्यपूजनम्, नवावर्ण्यणम्, पूर्वोत्तरयात्रा बृहस्पतिवेद्याद्विहाहो मध्यमो हिरण्यमन्त्र तृतीयायाम्, घ. ५७।४९ उपरि।  
उत्तरयात्रा पञ्चमीपूर्वापादयोः, विवाहो हिरण्यमन्त्रोत्तरयात्रा, भ. २९।२८ यावत्।  
शुक्लेशः शुक्रः ३०।४४, मार्गः बुधः ४६।४५, विवाहपञ्चमी, श्रीसीतारामविवाहोत्सवः, जनकपुरे श्रीसीतारामदर्शनम्, गोस्वामिलक्ष्मीनाथ(बबाजी)परमहंसस्य २३२ जयन्त्युत्सवः १५३ स्मृतिदिवसः।  
विवाहो दिवाग्री, हिरण्यमन्त्र, कर्णवेषः, गृहप्रवेशः सप्तम्याम्, स्कन्दपञ्चोत्तरम्, चम्पकपटो, उत्तरा विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा, पञ्चकारम्भो रात्रौ घ. १०।२५ उपरि।  
गृहप्रवेशः सप्तम्याम्, नवावर्ण्यणम्, विवाहो धनिष्ठयां, हिरण्यमन्त्र, मुण्डनम्, कर्णवेषः, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठयां, भ. ३२।११ उपरि।  
हिरण्यमन्त्रमष्टम्याम्, हर्षणम्, ५५।४०, भ. ०९।२२ यावत्।  
दति. २७।४७ उपरि, मार्गः शनिः ३१।०४, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा नवम्याम्।  
विवाह एकादश्याम्, दति. २४।०३ यावत्, घ. ५१।४५ उपरि। पञ्चकान्तो रात्रौ घ. ०८।०२ उपरि, ग. २१।१० उपरि ३६।१० यावत्, भ. १९।२७ यावत्।  
दिसम्बर १२, मोक्षदा ११ व्रत सर्वेषाम्, गीताजयन्ती, पश्चिमोत्तरयात्रा मुण्डन हिरण्यमन्त्रैकादश्याम्, कर्णवेषः, गृहप्रवेशः, विवाहो गृहारम्भः रेवत्याम्, केतुवेद्याद्विवाहो मध्यम अश्विन्याम्, गोमूत्रेण पारणम्, केशव १२, प्रदोष १३ व्रतम्, उत्तरा विना यात्राश्विन्याम्, (१२-१३) एकोद्विष्टम्।  
ज्येष्ठयां रविः १२।२९, प्रदोष १४ व्रतम्।  
पूर्णिमाद. ५४।०४, अवमम्, पूर्णिमाव्रतम्, भ. ०२।४६ उपरि २९।४८ यावत्, मार्गः १५ स्नानदानादिः, श्वेत्स्नानम्, हरिहरनाथपूजनदर्शनार्दिकम्, दत्तात्रेयावतारः, पूर्वदक्षिणयात्रा विवाहो हिरण्यमन्त्र गृहारम्भः रेवत्याम्।

तिथयः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः	मिश्रमानम्	मे. अ.	बु. अ.	मि. अ.	क. अ.	सि. अ.	क. अ.	तु. अ.	बु. अ.	घ. अ.	म. अ.	कु. अ.	मी. अ.
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः								
०१ शु	०७।७।०३।४४	०६।२५।१४।३७	०३।१०।१८।१५	०६।२५।१४।३७	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१९।२६	४३।१५	१७।०५	१९।०१	२१।१४	२३।३२	०१।१८	०४।१०	०६।२०
०२ श	०७।७।१४।४४	०६।२४।१५।४१	०३।१०।१५।२४	०६।२६।२९।३०	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१६।४५	४३।१४	१७।०१	१८।१५	२१।१०	२३।२८	०१।१४	०३।१५	०६।२०
०३ र	०७।७।३०।४४	०६।२४।३९।४५	०३।१०।१५।२३	०६।२७।१४।४५	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१३।४५	४३।१३	१६।१५	१८।१५	२१।१०	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
०४ च	०७।१९।३३।४४	०६।२४।२२।२०	०३।१०।१५।२२	०६।२९।१०।१६	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१३	४३।१२	१६।१५	१८।१५	२१।१०	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
०५ म	०७।१९।१५।४४	०६।२४।१६।१२	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
०६ बु	०७।२०।१४।४४	०६।२४।१८।३५	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
०७ वृ	०७।२१।१४।४३	०६।२४।१८।२०	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
०८ श	०७।२२।१०।४४	०६।२४।३९।२२	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
०९ श	०७।२२।१५।३८	०६।२४।४३।३८	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
१० र	०७।२३।३५।३४	०६।२५।१०।११	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
११ च	०७।२४।१९।३०	०६।२६।२५।४४	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
१२ म	०७।२५।१०।३२	०६।२७।१९।४७	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
१३ वृ	०७।२६।१७।३२	०६।२७।३६।१०	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०
१४ बु	०७।२६।३१।४८	०६।२८।१२।२३	०३।१०।१५।२२	०७।१०।१५।३९	१०।२७।१५।४५	०४।२२।१०।१२	४३।१०	१६।१५	१८।१५	२०।१५	२३।२४	०१।१०	०३।१५	०६।२०

विधिः विधिः—रविवासरे त्याज्यवस्तुनि— धार (धौर) तैल जल चोष्णामिषं निशि भोजनम्। एतः स्नानं मध्याह्ने रवी सप्त विवर्जयेत्॥ मार्गादिमासे रविव्रतभक्ष्याणि— पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमव शुतं मार्गशोदिस्व मृष्टीना विस्तिलाना विपलदधि तथा दुग्धक गोमयं च। त्रित्वं तोयाञ्जलीना त्रिमरीचकमथो त्रिपलाः शक्नः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण। धाम्यासिकरविव्रतं साम्बपुराणे—अलिमेषाते घनो भगवत्यर्कवासरे। शुक्लपक्षे स विधिर्वद व्रतं साम्ब समाचरेत्॥ देवोत्थानात्परं ग्राह्यं व्रतं देवस्य भास्वतः कदाचिदलिमेषाकैः कृष्णपक्षे न कारयेत्॥ ज्योतिषे— सूर्यव्रतञ्च वैशाखे मलमासो यदा भवेत्। तदा तत्रैव कर्तव्यं वृषादित्ये न कारयेत्॥ यदि शुक्लपक्षे यथोक्तलक्षणघटितरविवासरालाभस्तदाऽनन्यगतिर्वाक्यः कृष्णपञ्चमीपर्यन्तं तदारम्भविस्मर्गं कर्तव्यम्—“शुक्लपक्षे विशेषेण कृष्णोऽप्यापञ्चमं दिन”मिति म म वामदेवकृतगुह्यार्थदीपिकास्थानिपुराणोपवचनबलात्। रात्रौ लम्बज्ञानं— ध्रुवं परितो रक्तवर्णां शूलिनीं शैलवर्णां चैकान्वा तारा मेघाम्नीनं यावद् भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेघवृषी, वायव्यकोणे मिथुनः, उत्तरस्यां कर्कशो ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकी, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भी, नैऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। षट् यत्र रक्तवर्णां शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। चन्द्रोदयास्तसाधनम्— तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपथे। बाणशास्त्राङ्गविभाजितलग्नं भवति विधुदयमस्तमयं च॥ यथा— मार्गशुक्लपञ्चमं मङ्गले रात्रिमासम् ३३।३८, तदोक्तोत्था (३३।३८)X ५ = १६८।४०, १६८।४० + ०२।०० = १७०।४०, १७०।४० = १५ = ११।२१ दण्डादि। सूर्यास्त(०५।१६)माने यथोक्तफलस्य घण्टामिण्टात्मकमानं(०४।३२) योजनेन घ. ०९ मि. ४८ चन्द्रास्तमानमेव कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानमिति। ग्रहस्थितिः— मार्गी पश्चिमास्तो मङ्गलः, वक्रो पश्चिमास्तो बुधः ०२ तः पूर्वोदितः ०५ तो मार्गी, वक्रो पूर्वोदितः बृहस्पतिः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, वक्रो पूर्वोदितः शनिः ०९ तो मार्गी। वातावरणम्— पश्चादिभागे शीतवातश्चित्रवृष्टयस्तदन्तर्भागे वातहिमपातादयः।



तिथय	तिथय	नक्षत्राणि	योग	कक्षाणि	चन्द्रारावः	सम्यग्दर्शनं	दिनांक	उ. उ. अ.	दिनांक	पौषकृष्णपक्षः	शकाब्दः १९४७, सवत् २०८२, सन् १९३३ साल, दिनाङ्क ०५.१२.१९०२ ई. तौ दिनाङ्क २०.१२.१९०२ ई. यावत्। शुद्धः ०१ तः अशुद्धः, हेमन्तः, गाम्यगोलः, गाम्यमानः पूर्वं कालः।	२१		
दिनांक	द. प.	च. मि.	न. द. प.	च. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	च. मि.	राशयदिः	द. प.	च. मि.	च. मि.	उ. उ. अ.	दिनांक
०१ श	५१.१०४	रा. ०३.१२	गौणी १७.१०	दि. १०.१५	मिदः ०८.१९	वा. २५.१०	वृ. ४५.१२	रा. १२.५१	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०२ श	४५.१०४	रा. ०१.१०	मृग २३.१०	दि. १२.१५	सायः ११.१५	मि. १८.१५	मि. १८.१५	मि. १८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०३ श	४५.१०४	रा. ०१.१०	मृग २३.१०	दि. १२.१५	सायः ११.१५	मि. १८.१५	मि. १८.१५	मि. १८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०४ श	३६.१५५	रा. ०१.१०	पुन ०५.१९	दि. ०९.१३	ब्रह्म ४०.१३	व. ०८.१५	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०५ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०६ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०७ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०८ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०९ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१० श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
११ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१२ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१३ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१४ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१५ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१६ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१७ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१८ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१९ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२० श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२१ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२२ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२३ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२४ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२५ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२६ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२७ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२८ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
२९ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
३० श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७

तिथय	तिथय	नक्षत्राणि	योग	कक्षाणि	चन्द्रारावः	सम्यग्दर्शनं	दिनांक	उ. उ. अ.	दिनांक	पौषकृष्णपक्षः	शकाब्दः १९४७, सवत् २०८२, सन् १९३३ साल, दिनाङ्क ०५.१२.१९०२ ई. तौ दिनाङ्क २०.१२.१९०२ ई. यावत्। शुद्धः ०१ तः अशुद्धः, हेमन्तः, गाम्यगोलः, गाम्यमानः पूर्वं कालः।	२१		
दिनांक	द. प.	च. मि.	न. द. प.	च. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	च. मि.	राशयदिः	द. प.	च. मि.	च. मि.	उ. उ. अ.	दिनांक
०१ श	५१.१०४	रा. ०३.१२	गौणी १७.१०	दि. १०.१५	मिदः ०८.१९	वा. २५.१०	वृ. ४५.१२	रा. १२.५१	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०२ श	४५.१०४	रा. ०१.१०	मृग २३.१०	दि. १२.१५	सायः ११.१५	मि. १८.१५	मि. १८.१५	मि. १८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०३ श	४५.१०४	रा. ०१.१०	मृग २३.१०	दि. १२.१५	सायः ११.१५	मि. १८.१५	मि. १८.१५	मि. १८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०४ श	३६.१५५	रा. ०१.१०	पुन ०५.१९	दि. ०९.१३	ब्रह्म ४०.१३	व. ०८.१५	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०५ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०६ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०७ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०८ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
०९ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१० श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
११ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१२ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१३ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१४ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१५ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५	पुन ०५.१९	क. ०८.१५	अ. ०८.१५	अ. ०८.१५	०७.१२.१९.३७	२६.१०	६.१६	५.१४	११.०५	०७.१२.१९.३७
१६ श	३३.१३२	रा. ०८.१३	पुन ०५.१९	दि. ०८.१५										



[illegible]



२३



[illegible]



तिथयः	तिथयः	नक्षत्राणि	योगाः	करणाणि	चन्द्रराशयः	स्पष्टसूर्यः	दिनमानम्	सु. उ.	सु. अ.	दिनाङ्कः	फाल्गुनकृष्णपक्षः	शकाब्दः १९४७, सवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क ०२।०२।२०२६ ई. तो दिनाङ्क १७।०२।२००६ ई. यावत्। शुक्रः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यावनम्, पूर्वे कालः ११ तो दक्षिणे कालः।	२५						
दिनानि	द. प.	घं. मि.	न. द. प.	घं. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा. छे	अं.					
०१ च	५०।२४	रा. ०२।४५	रले. ४३।०७	रा. ११।५०	आयु. ०४।०१	वा. २१।५५	क. ४३।०७	रा. ११।५०	०९।१९।३०।३४	२७।०४	६।३५	५।२५	१३	२०					
०२ म	४८।२७	रा. ०१।५८	मघा ४२।३५	रा. ११।३७	शोभ. ५४।१६	तै. १९।२६	सिंह.	अहोरात्रम्	०९।२०।३१।३७	२७।०७	६।३५	५।२५	१४	२१					
०३ बु	४७।४४	रा. ०१।४०	पूर्फ. ४३।१५	रा. ११।५२	आग. ५०।४८	व. १८।०६	सिं. ५८।४४	रा. ०६।०४	०९।२१।३२।४०	२७।१०	६।३४	५।२६	१५	२२					
०४ बु	४८।१७	रा. ०१।५२	उफ. ४५।११	रा. १२।३७	सुकर्मा ४८।१९	ब. १८।०१	कन्या	अहोरात्रम्	०९।२२।३३।४३	२७।१३	६।३३	५।२७	१६	२३					
०५ शु	५०।१४	रा. ०२।३९	हस्त. ४८।२४	रा. ०१।५५	घृति. ४६।५४	कौ. १९।१६	कन्या	अहोरात्रम्	०९।२३।३४।४६	२७।१६	६।३३	५।२७	१७	२४					
०६ श	५३।१६	रा. ०३।५०	चित्रा ५२।४२	रा. ०३।३७	शुल. ४६।१७	ग. २१।४५	कं. २०।३३	दि. ०२।४५	०९।२४।३५।४०	२७।१९	६।३२	५।२८	१८	२५					
०७ र	५७।२७	रा. ०५।३१	स्वाती ५८।१९	रा. ०५।४८	गण्ड. ४६।३४	वि. २५।२२	तुला	अहोरात्रम्	०९।२५।३६।३४	२७।२२	६।३२	५।२८	१९	२६					
०८ च	६०।००	अहोरात्रम्	विशा. ६०।००	अहोरात्रम्	वृद्धिः ४७।२८	वा. २९।५५	तु. ४७।४४	रा. ०१।३७	०९।२६।३७।३७	२७।२५	६।३१	५।२९	२०	२७					
०८ म	०२।२२	दि. ०७।२७	विशा. ०४।१५	दि. ०८।१२	ध्रुव. ४८।४७	कौ. ०२।२२	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०९।२७।३८।२०	२७।२८	६।३०	५।३०	२१	२८					
०९ बु	०७।४४	दि. ०९।३६	अनु. १०।४८	दि. १०।४९	व्या. ५०।०९	ग. ०७।४४	वृश्चिकः	अहोरात्रम्	०९।२८।३९।१३	२७।३२	६।३०	५।३०	२२	२९					
१० वृ	१३।०८	दि. ११।४४	ज्ये. १७।१९	दि. ०१।२४	हर्षणः ५१।१९	वि. १३।०८	वृ. १७।१९	दि. ०१।२५	०९।२९।४०।०६	२७।३६	६।२९	५।३१	२३	३०					
११ शु	१८।०६	दि. ०१।४२	मूलम् २३।२६	दि. ०३।५०	वज्र. ५२।०४	वा. १८।०६	धनुः	अहोरात्रम्	१०।००।४०।५९	२७।४०	६।२८	५।३२	२४	०१					
१२ श	२२।१७	दि. ०३।२२	पुषा. २८।४८	स. ०५।५८	सिद्धिः ५२।०५	तै. २२।१७	घ. ४४।५२	रा. १२।२४	१०।०१।४१।४१	२७।४४	६।२७	५।३३	२५	०२					
१३ र	२५।२१	दि. ०४।३५	उषा. ३३।०२	रा. ०७।४०	व्यती. ५१।१४	व. २५।२१	मकरः	अहोरात्रम्	१०।०२।४२।२२	२७।४७	६।२७	५।३३	२६	०३					
१४ च	२७।२०	स. ०५।२२	श्रवणा ३६।११	रा. ०८।५४	वरी. ४९।२५	श. २७।२०	मकरः	अहोरात्रम्	१०।०३।४३।०३	२७।५०	६।२६	५।३४	२७	०४					
३० म	२७।५५	स. ०५।३५	घनि. ३८।०३	रा. ०९।३८	परिष. ४६।३६	मा. २७।५५	म. ०७।०७	दि. ०९।१६	१०।०४।४३।४४	२७।५३	६।२५	५।३५	२८	०५					
तिथयः	मिश्रमानकालिकदिनकङ्कालदिस्पष्टग्राह दिनव्यग्रहरान्न गतिश्च								दैनिकलसप्ताशीचक्रम्						०५ भूगो वल्ली ०८।१०।१०।१३ अपनराशः २२।५४।७७				
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	क. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	घ. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
०१ च	०९।१२।१०।२१	१०।०१।११।३७	०२।२३।१५।१४	०९।२७।२६।१०	११।०१।१५।१५	०४।१८।२७।२१	४३।३३	११।१५	१३।१६	१५।१९	१८।१७	२०।३३	२२।१८	०१।०५	०३।२२	०५।२७	०७।१३	०८।१४	१०।१३
०२ म	०९।१२।१७।१०	१०।०३।१०।१५	०२।२३।१५।१०	०९।२८।११।१०	११।०२।१०।१७	०४।१८।२४।१०	४३।३५	११।१६	१३।१८	१५।१५	१८।१३	२०।२९	२२।१४	०१।०१	०३।१८	०५।१३	०७।१०	०८।१०	१०।१०
०३ बु	०९।१३।३३।१२	१०।०४।१०।१३	०२।२३।१६।१०	०९।२९।१५।३०	११।०२।१२।१८	०४।१८।२०।१९	४३।३६	११।१७	१३।३८	१५।१९	१८।१०	२०।२५	२२।१०	००।१५	०३।१४	०५।१९	०७।०५	०८।३६	१०।०५
०४ बु	०९।१४।२०।२२	१०।०६।०९।३१	०२।२३।३९।१७	१०।०१।१३।०९	११।०२।१९।१९	०४।१८।१७।१९	४३।३७	११।३८	१३।३४	१५।१७	१८।०५	२०।२१	२२।३६	००।१३	०३।१०	०५।१५	०७।०९	०८।३२	१०।०९
०५ शु	०९।१५।१०।३०	१०।०७।३८।१९	०२।२३।३२।२५	१०।०२।२८।१८	११।०२।२५।१०	०४।१८।१४।३९	४३।३९	११।३९	१३।३५	१५।३८	१७।१६	२०।१२	२२।२७	००।१४	०३।०१	०५।०६	०६।१२	०८।२३	०९।१५
०६ श	०९।१५।१५।३१	१०।०८।१२।३९	०२।२३।२६।२०	१०।०३।१४।१४	११।०२।३२।३६	०४।१८।११।२८	४३।३९	११।२५	१३।२१	१५।३४	१७।१५	२०।१८	२२।२३	००।१८	०२।१७	०५।०२	०६।१८	०८।१९	०९।१८
०७ र	०९।१६।१४।०३	१०।०९।०६।२९	०२।२३।२०।१५	१०।०४।१५।१०	११।०२।३९।२२	०४।१८।१०।१७	४३।४०	११।२५	१३।१७	१५।३०	१७।१८	२०।१४	२२।१९	००।३६	०२।१३	०४।१५	०६।१४	०८।१५	०९।१४
०८ च	०९।१७।२७।२३	१०।११।२०।१९	०२।२३।१४।१०	१०।०६।१५।०६	११।०२।४६।०७	०४।१८।१०।०६	४३।४२	११।२२	१३।१९	१५।३२	१७।१४	२०।१०	२२।१५	००।३२	०२।१४	०४।१४	०६।१०	०८।१९	०९।१७
०८ म	०९।१८।१४।१०	१०।१२।३३।१०	०२।२३।१०।१५	१०।०८।१४।१८	११।०२।१५।१३	०४।१८।१५।३३	४३।४६	११।१३	१३।१०	१५।२२	१७।१०	२०।११	२२।११	००।२८	०२।१४	०४।१६	०६।३६	०८।१७	०९।३६
०९ बु	०९।१९।१०।१५	१०।१३।१७।१७	०२।२३।१०।१९	१०।०९।१५।१५	११।०३।१०।१२	०४।१८।१५।३३	४३।४८	११।१९	१३।१७	१५।३०	१७।१८	२०।१४	२२।१९	००।३६	०२।१३	०४।१६	०६।३२	०८।१३	०९।३२
१० वृ	०९।१९।१७।१८	१०।१५।१०।१६	०२।२३।१४।१५	१०।१२।१६।१५	११।०३।१३।०७	०४।१८।१५।२४	४३।५०	११।१५	१३।१०	१५।१८	१७।३३	२०।१३	२२।१०	००।२०	०२।३७	०४।१८	०६।२८	०७।१९	०९।२८
११ शु	०९।२०।३४।२८	१०।१६।१५।३५	०२।२३।१४।१५	१०।१२।१६।१५	११।०३।१३।०७	०४।१८।१५।२४	४३।५२	११।१०	१३।१८	१५।११	१७।२९	२०।१५	२२।१५	००।२३	०२।३०	०४।३५	०६।२१	०७।१५	०९।२२
१२ श	०९।२१।२१।३०	१०।१७।१०।२८	०२।२३।१४।१०	१०।१३।१७।१०	११।०३।१७।१०	०४।१८।१६।१०	४३।५४	१०।१८	१३।१५	१५।१७	१७।२९	२०।१५	२२।१५	००।२३	०२।३०	०४।३५	०६।२१	०७।१५	०९।२२
१३ र	०९।२२।१०।३२	१०।१७।१५।३१	०२।२३।१४।१०	१०।१३।१७।१०	११।०३।१७।१०	०४।१८।१६।१०	४३।५६	१०।१८	१३।१५	१५।१७	१७।२९	२०।१५	२२।१५	००।२३	०२।३०	०४।३५	०६।२१	०७।१५	०९।२२
१४ च	०९।२२।१५।३३	१०।१८।३९।१४	०२।२३।१५।३३	१०।१४।१०।१९	११।०३।३३।१६	०४।१८।१७।१०	४३।५८	१०।१८	१३।१५	१५।१७	१७।२९	२०।१५	२२।१५	००।२३	०२।३०	०४।३५	०६।२१	०७।१५	०९।२२
३० म	०९।२३।१४।२६	१०।१९।२७।०७	०२।२३।३०।२५	१०।१६।१७।२८	११।०३।३३।१६	०४।१८।३९।१०	४३।५८	१०।१८	१३।१५	१५।१७	१७।२९	२०।१५	२२।१५	००।२३	०२।३०	०४।३५	०६।२१	०७।१५	०९।२२



२६

तिथयः										शकाब्दः १९४७, सवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क १८/०२/२०२६ ई. तो दिनाङ्क ०३/०३/२०२६ ई. यावत्।									
तिथयः					तिथयः					शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।									
दिनांकः	द.प.	घ.मि.	न.द.प.	घ.मि.	न.द.प.	घ.मि.	क.द.प.	रा.द.प.	घ.मि.	राश्यादिः	द.प.	घ.मि.	घ.मि.	रा.लक्ष्यः	फाल्गुनशुक्लपक्षः				
०१ बु	२७४२	स ०४१३	शत ३८१२	रा ०९१४३	शिव ४२१४६	रा २७४२	कुम्भः	अहोरात्रम्	१०१०५१४८१५	२७५१६	६१२५	५१३५	२९	०६१८	द्वितीयः				
०२ बु	२८४४	दि ०४१३	पुष्य ३८१०५	रा ०९१३८	सिद्ध ३८१००	को २९१४४	को २९१४४	दि ०३१४३	१०१०६१५५१०६	२७५१९	६१२४	५१३६	३०	०७१९	द्वितीयः				
०३ शु	२९४६	दि ०३१४	उषा ३६१३०	रा ०९१३०	साध्य ३२१२५	रा २९१४४	मीनः	अहोरात्रम्	१०१०७१६५१६७	२८१२०	६१२४	५१३६	०१	०८१०	द्वितीयः				
०४ शु	१८१८	दि १९१४	रेवती ३८१०३	रा ०९१००	शुभ १८१०८	वि १८१०८	मीनः	अहोरात्रम्	१०१०८१७६१०९	२८१०६	६१२३	५१३७	०२	०९११	द्वितीयः				
०५ शु	१९१३	दि १९१४	अश्वि ३७१०५	स ०९१४२	शुक्लः १९११५	रा १८१३३	मीनः	अहोरात्रम्	१०१०९१७६११५	२८१०९	६१२२	५१३७	०३	१०१२	द्वितीयः				
०६ च	०८१३	दि ०९१४	भरणी ३७१०८	स ०९१४२	ब्रह्म १९११५	ते ०८१३३	मीनः	अहोरात्रम्	१०११०१७६११५	२८११२	६१२१	५१३७	०४	१११३	द्वितीयः				
०७ म	५०१२०	दि ०७१२०	कृत्ति ३२१०३	दि ०३१३३	एत ०४१२३	व ०२१३१	वृषः	अहोरात्रम्	१०११११७६११२	२८११८	६१२०	५१४०	०५	१२१४	द्वितीयः				
०९ बु	५०१२०	दि ०७१२०	सिंह १८१४३	दि ०२१४३	विक् १८१४३	वा २३१३८	वृषः	अहोरात्रम्	१०११२१७६११५	२८१२२	६१२०	५१४०	०६	१३१५	द्वितीयः				
१० बु	४५१०२	रा १२१०२	मृग १४१४९	दि १२१४५	प्रोति ४०१५९	ते १७१२२	मिथुनः	अहोरात्रम्	१०११३१७६११८	२८१२६	६११९	५१४१	०७	१४१६	द्वितीयः				
११ शु	३९१४४	रा १०१२२	आर्द्रा १११०२	दि १०१४३	आयु ३३१३८	व १२१२३	मि ५३१३४	रा ०३१४४	१०११४१७६११९	२८१३०	६११८	५१४२	०८	१५१७	द्वितीयः				
१२ शु	३३१००	रा ०८१४७	पुन ०७१४७	दि ०९१३३	सोभा २६१४७	व ०७१२२	कर्कः	अहोरात्रम्	१०११५१७६११९	२८१३४	६११७	५१४३	०९	१६१८	द्वितीयः				
१३ र	३११०८	रा ०९१४३	पुष्य ०५१४०	दि ०८१२०	शोभ २०१५४	को ०३१४०	कर्कः	अहोरात्रम्	१०११६१७६११९	२८१३८	६११६	५१४४	१०	१७१९	द्वितीयः				
१४ च	२८१२१	रा ०५१३८	श्ले ०३१२४	दि ०७१३८	अग १५१४०	क ०३१२४	क ०३१२४	दि ०७१३८	१०११७१७६११५	२८१४२	६११६	५१४४	११	१८१०	द्वितीयः				
१५ म	२६१४८	दि ०४१४६	मघा ०२१४६	दि ०७१४९	सुकर्मा ०११२४	व २६१४८	सिंहः	अहोरात्रम्	१०११८१७६११४	२८१४६	६११५	५१४५	१२	१९११	द्वितीयः				
										१६ म									
										१७ म									
										१८ म									
										१९ म									
										२० म									
										२१ म									
										२२ म									
										२३ म									
										२४ म									
										२५ म									
										२६ म									
										२७ म									
										२८ म									
										२९ म									
										३० म									
										३१ म									
										३२ म									
										३३ म									
										३४ म									
										३५ म									
										३६ म									
										३७ म									
										३८ म									
										३९ म									
										४० म									
										४१ म									
										४२ म									
										४३ म									
										४४ म									
										४५ म									
										४६ म									
										४७ म									
										४८ म									
										४९ म									
										५० म									
										५१ म									
										५२ म									
										५३ म									
										५४ म									
										५५ म									
										५६ म									



तिथयः		तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः		करणानि		चन्द्रपरायः		स्पष्टसूर्यः		दिनमानम्		सं. उ. सं. अ.		दिनाङ्कः		चैत्रकृष्णपक्षः		शकाब्दः १९४७, संवत् २०८२, सन् १४३३ साल, दिनाङ्कः ०४।०३।२०२६ ई. तो दिनाङ्कः १९।०३।२०२६ ई. यावत्।		२७	
दिनानि	द. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	राष्ट्रपतिः	द. प.	घ. मि.	घ. मि.	रा. सं. अ.	दिनाङ्कः	सं. उ.	सं. अ.	दिनाङ्कः	सं. उ.	सं. अ.	दिनाङ्कः	सं. उ.	सं. अ.	दिनाङ्कः	सं. उ.	सं. अ.
०१ बु.	२५।३६	दि. ०४।२८	पुष्य. ०३।१७	दि. ०७।२९	भुतिः ०६।३९	कौ. २५।३६	सि. १८।३२	दि. ०१।३९	१०।१९।१०।३१	२८।१०	६।१४	५।१६	१३	२०	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४
०२ बु.	२६।११	दि. ०४।२९	उफ. ०४।१८	दि. ०८।१०	शुलः ०३।१६	ग. २६।११	कन्या	अहोरात्रम्	१०।२०।१०।१८	२८।१५	६।१३	५।१८	१४	२१	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५
०३ शु.	२८।१०	सं. ०५।२८	हस्तः ०७।१४	दि. ०९।१८	गण्डः ०२।१३	वि. २८।१०	क. ३९।१६	रा. १०।१६	१०।२१।११।१०	२९।१०	६।१२	५।१८	१५	२२	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०६	०६
०४ शु.	३१।१२	सं. ०६।१९	चित्रा ११।१८	दि. १०।१५	वृद्धिः ०१।२५	बा. ३१।१२	तुला	अहोरात्रम्	१०।२२।११।१०	२९।१०	६।११	५।१९	१६	२३	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७
०५ र.	३५।२२	रा. ०८।१९	स्वाती १७।१०	दि. १२।१५	ध्रुवः ०१।३२	कौ. ०३।१७	तुला	अहोरात्रम्	१०।२३।११।१०	२९।१०	६।१०	५।१०	१७	२४	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०८
०६ च.	४०।१६	रा. १०।१६	विशा २३।१०	दि. ०३।२३	व्या. ०२।१८	ग. ०७।१८	तु. ०६।३३	दि. ०८।१८	१०।२४।११।१०	२९।१२	६।१०	५।१०	१८	२५	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९	०९
०७ म.	४५।३६	रा. १२।२३	अनु. २९।३१	सं. ०५।१५	हर्षणः ०३।३३	वि. १२।१६	मृगश्रिः	अहोरात्रम्	१०।२५।११।११	२९।१६	६।१०	५।११	१९	२६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
०८ बु.	५०।१५	रा. ०२।२८	ज्ये. ३६।१०	रा. ०८।३४	वज्रः ०५।१०	बा. १८।१४	सु. ३६।१०	रा. ०८।३४	१०।२६।११।१३	२९।१२	६।१०	५।१२	२०	२७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	
०९ बु.	५५।३९	रा. ०४।२३	मूलम् ४२।१९	रा. ११।१०	सिद्धिः ०६।१७	तै. २३।१५	धनुः	अहोरात्रम्	१०।२७।११।१५	२९।२४	६।१०	५।१३	२१	२८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१० शु.	५९।४४	रा. ०६।१०	पूषा ४७।११	रा. ०१।१४	व्यती. ०७।२४	च. २७।१४	धनुः	अहोरात्रम्	१०।२८।११।१७	२९।२८	६।१०	५।१४	२२	२९	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
११ श.	६०।१०	अहोरात्रम्	उषा. ५२।२३	रा. ०३।१०	वरी. ०७।१४	ब. ३१।११	घ. ०३।१५	दि. ०७।१४	१०।२९।११।१०	२९।३२	६।१०	५।१४	२३	३०	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
११ र.	०२।३७	दि. ०७।१८	श्रवणा ५५।१९	रा. ०४।२५	परिपः ०७।१०	बा. ०२।३७	मकरः	अहोरात्रम्	११।३०।११।११	२९।३६	६।१०	५।१५	२४	०१	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
१२ च.	०४।२८	दि. ०७।१९	धनि. ५७।१६	रा. ०५।१४	शिवः ०५।१७	तै. ०४।२८	म. २६।१३	दि. ०४।१९	११।३१।११।३८	२९।३७	६।१०	५।१६	२५	०२	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
१३ म.	०४।५४	दि. ०८।१०	शत. ५८।१८	रा. ०५।३४	सिद्धिः ०३।१९	ब. ०४।१४	कुम्भः	अहोरात्रम्	११।३२।११।२५	२९।३४	६।१०	५।१७	२६	०३	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
१४ बु.	०४।१५	दि. ०७।१८	पूषा ५८।२९	रा. ०५।२६	शुभः ५५।२६	श. ०४।१५	क. ४३।३४	रा. ११।२८	११।३३।११।३२	२९।३८	६।१०	५।१८	२७	०४	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
३० बु.	०२।१०	दि. ०६।११	उभा. ५७।१३	रा. ०४।१९	शुक्लः ५०।१९	ना. ०२।१०	मीनः	अहोरात्रम्	११।३४।११।३८	२९।३९	६।१०	५।१८	२८	०५	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९
तिथयः		मित्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहानरं गतिश्च		दैनिकलम्पसारिणीचक्रम्		०३ भूगो वल्लो ०८।१०।१०।१८		अयनाशा २२।१५।११		विधिधिविधया—स्कान्दे वारुणीयोग—वारुणेन समायुक्ता मघी कृष्णा त्रयोदशी। गङ्गाया यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा।। महावारुणीयोग—शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता। गङ्गाया यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।। महामाहावारुणीयोग—शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतपिपा यदि। महामहैति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत्। एते योगा दिवेष शस्ता— दिवैव योगः शन्तोऽय न तु रात्रौ कदाचन इति भारतवचनात्। सधवाया अपि वारुण्यदिस्नानमिति वर्षकृत्यपूर्वखण्डे म.म.रूपः।। दिक्क्रमेण प्रह्लादवर्षेण च चिह्नफल मुहूर्तगणपतो—मृत्युर्वह्निनभय हानिस्तुष्टिर्द्व्यगमः सुखम्। क्लेशोऽर्थगमनं शोकं दिव्यु लिङ्गाफल क्रमात्।। गोक्षुतस्य दोषाधिक्यम् उक्तं नारदेन— सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्ट गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाय्वम्भीपीनसकेतवः। केतवः कपटः। पीनसो मुहूर्तासाखावी। रत्नावली(लेकलापयो—प्राग्व्यापुसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यस्त्यम्।। यात्राया क्षुतमवश्यं वर्जनीयम्।रत्नकलापे—अग्रे क्षुतं चेच्छकुनेः किमन्येः पश्चाच्छुतं चेच्छकुनेः किमन्येः। जातानजाताच्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः।। राधुक्षुतं सर्वशकुने—ओषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्।। क्षुतादिषु कर्तव्यपाह— लिङ्गापननञ्जम्भासु जायान्तिष्ठाङ्गुलीध्वनि। गुणवापि च कर्तव्या अकृत्वा ब्रह्मा भवेत्।। होमविधौ विरोधः प्रतिष्ठाप्रकाशे— दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधानविधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु। मौञ्जीवसन— वैश्वदेवकरणे संस्कारनैमित्तिके होमे नित्यभवे न दोषकथनं चक्रं च वहेत्।।अपि च—विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीतिग्रहणे युगादी। दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवागिनचक्रं परिचिन्तनीयम्।। ग्रहस्थिति—मार्गी पश्चिमोत्तः मङ्गलः, वक्रो पश्चिमोत्तः बुधः १२ तः पूर्वोदितः, वक्रो पूर्वोदितो बृहस्पतिः १० तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोत्तः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ०१ तः पश्चिमोत्तः।		चक्रावातोपलपातदयः।													



[illegible]



[illegible]



# आचार्य रतन झा

तिथयः	तिथयः	नक्षत्राणि	योगाः	करणाणि	चन्द्रराशयः	स्वर्गसूर्यः	दिनमानम्	सू. उ. सू. अ.	दिनाङ्कः	वैशाखशुक्लपक्षः	शकाब्दः १९४८, सवत् २०८३, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क १८।०४।२०२६ ई. तो दिनाङ्क ०१।०५।२०२६ ई. यावत्।			
दिनां	द. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	रा. क. अ.	शुद्धः, वसन्तर्तुः, सोम्याषणम्, दक्षिणे कालः।	३०			
०१ श.	२४।१७	दि. ०३।२१	अश्वि १२।१७	दि. १०।१५	प्रीतिः ५०।२३	व. २४।१७	मेषः	अहोरात्रम्	००।१०।२३।१८	३१।५०	५।१७	६।२२	२८	०५।१८
०२ र.	१८।१८	दि. ०१।१०	भरणी ०९।१७	दि. ०९।२०	आयुः ४२।१९	कौ. १८।१८	मे. ३७।२०	दि. ०८।१३	००।१०।२२।१७	३१।५४	५।१७	६।२३	२९	०६।१९
०३ च.	१२।१३	दि. १०।१५	कृति. ०५।२२	दि. ०७।१५	सोभा. ३५।२३	ग. १२।१३	वृष.	अहोरात्रम्	००।१०।२०।१६	३१।५८	५।१७	६।२४	३०	०७।२०
०४ म.	०६।१९	दि. ०८।२०	रोहिणी ०१।१४	ग्रा. ०६।१०	शोभ. २७।१८	वि. ०६।१९	वृ. २९।११	स. ०५।१६	००।१०।१९।१५	३२।१०	५।१७	६।२४	०१	०८।२१
०५ बु.	००।१७	ग्रा. ०५।१४	आर्द्रा ५३।११	ग. ०२।११	अग. २०।१३	वा. ००।१७	मिथुनम्	अहोरात्रम्	००।१०।१७।१४	३२।१४	५।१५	६।२५	०२	०९।२२
०६ च.	४९।१५	ग. ०१।२५	पुन. ४९।१२	ग. ०१।२८	सुकर्मा १२।१०	ग. २२।१७	मि. ३५।१४	ग. ०७।१९	००।१०।१६।१२	३२।१७	५।१५	६।२५	०३	१०।२३
०७ श.	४४।१६	ग. ११।२८	पुष्यः ४६।१५	ग. १२।१६	प्रीतिः ०५।१८	वि. १७।११	कर्कः	अहोरात्रम्	००।१०।१४।१०	३२।१०	५।१३	६।२६	०४	११।२४
०८ श.	४०।१६	ग. ०९।१९	शुल. ४४।१५	ग. ११।२७	गण्डः ५३।२६	वा. १२।१६	क. ४४।१५	ग. ११।२७	००।११।१२।१४	३२।१३	५।१३	६।२७	०५	१२।२५
०९ र.	३७।१५	ग. ०८।१९	मघा ४३।१३	ग. १०।१८	वृद्धिः ४८।२८	तै. ०९।१६	सिंहः	अहोरात्रम्	००।१०।१०।१८	३२।१६	५।१३	६।२७	०६	१३।२६
१० च.	३५।१८	ग. ०७।१९	पुष्यः ४४।१२	ग. १०।१५	पुनः ४४।१२	व. ०६।१७	सि. ५८।१३	ग. ०५।११	००।१३।१०।१२	३२।१९	५।१३	६।२८	०७	१४।२७
११ म.	३४।१८	ग. ०७।१९	उफ. ४४।१३	ग. ११।२१	व्या. ४१।१४	व. ०५।१३	कन्या	अहोरात्रम्	००।१०।१७।१५	३२।१२	५।१३	६।२८	०८	१५।२८
१२ बु.	३५।२५	ग. ०७।१९	हस्तः ४६।१८	ग. १२।१७	हर्षणः ३९।१०	कौ. ०५।१२	कन्या	अहोरात्रम्	००।१०।१५।१८	३२।१५	५।१३	६।२९	०९	१६।२९
१३ च.	३७।२०	ग. ०८।२६	चित्रा ५०।१७	ग. ०९।१६	वज्रः ३८।१४	ग. ०६।१३	क. १८।१८	दि. ०१।११	००।१६।१०।११	३२।२८	५।१३	६।३०	१०	१७।३०
१४ शु.	४०।१४	ग. ०९।१६	स्वाती ५५।२५	ग. ०३।१०	सिद्धिः ३७।११	वि. ०८।१७	तुला	अहोरात्रम्	००।१७।०२।१४	३२।३२	५।१३	६।३०	११	१८।०१

मित्रमानकालर्देनमङ्गलदिश्यष्टा दिवाह्यप्रज्ञान्तर गणित							दैनिकलनसारणीकम्												०८ भूगी वल्लो ०८।१०।११।३० अयनाशा. २२।१५।१८		विधिचषया—सङ्क्रान्तिनिर्णयः सिद्धान्तसुधायां—निशाङ्कचारात्रिकट दिनाङ्क दिवाङ्कचारात्रिकटटिप्पट्यः ताण्ड्यदि प्राकृतिचिह्नार्थं पुण्याय विषयगतगोडलिहिए। रात्रिसङ्क्रमणे निकट दिनाङ्क पुण्याय भवति। तेन रात्रिपूर्वार्द्धे सङ्क्रमे पूर्वदिनाङ्कान्तरपुण्याकालः तथा च रात्रिपरभागे सङ्क्रमे परदिनपूर्वार्द्धभागः पुण्याकालः स्यात्। यदि दिने सूर्यसङ्क्रमस्तदा निकटवर्तिन्यः षोडशघटिका पुण्याय भवन्ति। ता. कर्कसङ्क्रमे पूर्वा. स्थिरराशिसङ्क्रमे पूर्वमाष्टौ परतछाष्टौ घटिकाः तथा कथितेतेषु सङ्क्रमोत्तरवर्तिन्यः पुण्याय भवन्ति। अक्षयतृतीयायां दानमक्षयफलदम्, विष्णुधर्मोत्तरे—वैशाखे शुक्लपक्षे तु तृतीयायां द्विजोत्तमः यद्विहितं नश्येत् तदाताञ्छयमश्नुते। अत्र परशुरामार्चयदानमन्त्र— जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्कर प्रभो। गृहणार्थं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।। जानकीनवमीव्रत बृहद्विष्णुपुराणे—वैशाखस्य सिते पक्षे नवमी तु महापुता। सेव मध्याह्नयोगेन शस्यते व्रतकर्मणि।। तत्र जानकी सम्पूज्य प्रणमेत्तन्मन्त्रः— दशाननविनाशाय जाता धरणिस्मभवा। मैथिली शीलसम्पदा पातु नः पतिदेवता।। मूलवासः—स्वर्गे शुचिप्रोत्पदेपदेमपे धूमो नभः कार्तिकचैत्रपौषे। मूलः ह्यधस्तातु तपस्यमार्गवैशाखशुक्लपक्षे च तत्र।। अपुष्कमूलविचार—अश्विनीमसमूलौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासकृद्मासः क्रमात्।। तस्मादेष्टुत्पत्रानां शान्तिः मूलदिवसेषु कार्याः। मूलवृक्षविचार—मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्र पुष्प फल शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाभ्युदयनयः।। मूलविनाशः स्यात्तन्मे वशविनाशनम्। त्वचि मातृभक्तिलेशः शाखायां मातृल्य च।। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्यजीवितम्।। शीतशान्तिरपि विधेया। तत्र सजानीयापत्यययानन्तरं विजानीयापत्यप्रसवस्रोतः।। ग्रहस्थितिः—मार्गो पूर्वोदितो मङ्गलः मार्गो पूर्वोदितो बुधः ०२ तः पूर्वोत्तरः, मार्गो पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गो पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गो पूर्वोदितः शनिः।		
तिथयः	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मित्रमानम्	मे. अ.	व. अ.	मि. अ.	क. अ.	सि. अ.	क. अ.	तु. अ.	व. अ.	घ. अ.	म. अ.	कु. अ.	मी. अ.	वृ. श.	सू. श.	म. बु. श.	ग. श.
०१ श.	११।१५।३१।२९	११।१५।३१।१६	०२।१३।३१।२९	०१।१०।३१।१९	११।११।३१।१०	०४।१४।३१।१६	४५।१५	०७।१०।४	०९।१०	११।१३	१३।३१	१५।१७	१८।१०	२०।११	२२।१६	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
०२ र.	११।११।३१।१५	११।१७।३०।२९	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१५	०७।१०।४	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
०३ च.	११।१२।३१।२९	११।१८।३१।१६	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१५	०८।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
०४ म.	११।१३।३१।३५	११।१२।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
०५ बु.	११।१३।३१।३५	११।१२।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
०६ च.	११।१४।३१।३५	११।१३।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
०७ श.	११।१५।३१।३५	११।१४।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
०८ श.	११।१६।३१।३५	११।१५।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
०९ श.	११।१६।३१।३५	११।१५।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
१० र.	११।१७।३१।३५	११।१६।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
११ च.	११।१७।३१।३५	११।१६।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
१२ म.	११।१८।३१।३५	११।१७।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
१३ बु.	११।१८।३१।३५	११।१७।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
१४ बु.	११।१८।३१।३५	११।१७।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३
१५ शु.	११।१८।३१।३५	११।१७।३१।३५	०२।१३।३१।३५	०१।१०।३१।३६	११।११।३१।१६	०४।१४।३१।१५	४५।१०	०६।१७	०८।१७	११।१०	१३।३१	१५।१७	१७।१९	२०।११	२२।१३	००।११	०२।१७	०३।१८	०५।१७	४	३	३	३



तिथयः

तिथयः

नक्षत्राणि

योगाः

करणाणि

चन्द्रराशयः

स्थसूर्यः

दिनमानः

सू. उ. स. अ.

दिनाङ्कः

दिनांक

द. प.

च. मि.

न. द. प.

च. मि.

यो. द. प.

क. द. प.

रा. द. प.

च. मि.

वृष्यादिः

द. प.

च. मि.

च. मि.

च. मि.

अ.

०१ श

११ द. ५४ १७

५४ १७

विशा ६०।००

अहोरात्रम्

व्यती ३८।२८

या २८।२६

रा. ४४।१०

रा. ११।२१

००।२८।००।१३

३२।३६

५।२९

६।३१

१२

१९

०२

ज्येष्ठे वृन्ताक त्यजेत्।

०२ र

४९।०१

०१।०४

विशा ०१।०४

विशा ०१।०४

वृश्चि ३९।३८

तै १७।०९

वृश्चि ३९।३८

अहोरात्रम्

००।२८।००।२८

३२।३९

५।२८

६।३१

१३

२०

०३

सूर्योदयादिवहो नैवगुणधायाम्, उत्तरयात्रा हिरण्यमानश्चतुर्गुणधायाम्।

०३ म

५४।१०

०३।०४

अनु ०३।०४

अनु ०३।०४

पुष्य ४९।३८

व ३९।३६

वृश्चि ३९।३८

अहोरात्रम्

००।२९।००।२९

३२।४२

५।२८

६।३१

१४

२७

०४

कर्कशो गृहस्थो हिरण्यमानश्चतुर्गुणधायाम्, पुष्यञ्च ज्येष्ठायाम्, पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायाम्, च. २१।३६ उपरि ५४।११ यावत्।

०४ म

५९।१७

०५।०४

ज्ये १४।०३

ज्ये १४।०३

शिव २९।२९

च. २६।१७

च. १४।१०

ज्ये ११।०३

००।२९।०४।१०

३२।४५

५।२७

६।३१

१५

२८

०५

आसुर्य च व्रततो, चन्द्रोदयो रात्रौ च. ०९।२४, अहोरात्रा ज्येष्ठायाम् ततः पूर्वयात्रा, च. ०८।१० उपरि २३।१० यावत्।

०५ व

६०।००

अहोरात्रम्

मूलम् २०।२७

मूलम् २०।२७

सिद्ध ४४।१०

ज्ये ३९।३८

धनुः ४९।३८

अहोरात्रम्

००।२९।०४।२९

३२।४८

५।२६

६।३१

१६

२९

०६

बृहस्पतिवेदिहादिहो मध्यमो हिरण्यमानः शुक्रारम्भञ्च मूल, पूर्वयात्रा।

०६ श

०३।३५

ज्ये ०३।३५

पुष्य २६।१७

ज्ये ०३।३५

साध्य ४४।१४

तै ०३।३५

च. ४२।३२

च. १०।२७

००।२९।०४।३०

३२।४९

५।२६

६।३१

१७

२७

०७

पूर्वोत्तरयात्रा पञ्चम्याम्, द. ति. ०३।३५ उपरि।

०७ व

०७।४७

ज्ये ०७।४७

पुष्य ३९।१६

ज्ये ०७।४७

शिव ४४।१५

च. ०७।४५

मकरः ४९।३८

अहोरात्रम्

००।२९।०४।३५

३२।५०

५।२५

६।३१

१८

२८

०८

विवाहः सप्तम्याम्, द. ति. ०७।४७ यावत्, च. ०७।४७ उपरि।

०८ श

१०।३०

ज्ये १०।३०

श्रवणा ३५।०७

च. ०७।२७

शुक्ल ४४।१३

च. १०।३०

मकरः ४९।३८

अहोरात्रम्

००।२९।०४।३५

३२।५०

५।२५

६।३१

१९

२९

०९

पूर्वा विना यात्रा श्रवणायाम्, पञ्चक्रान्तः साय च. ०७।२७ उपरि, च. ३९।१० यावत्।

०९ र

१२।१७

ज्ये १२।१७

धनि ३८।१९

च. ०८।२९

ब्रह्म ४२।३८

च. १२।१७

म. ०६।२८

ज्ये ०७।४९

००।२९।०४।३९

३३।०१

५।२४

६।३१

२०

२७

१०

विवाहोऽष्टम्याम्, पूर्वयात्रा मकरस्ये चन्दे।

१० र

१२।२३

ज्ये १२।२३

शत ३९।१३

च. ०९।१०

पुष्य ३९।२२

च. १२।२३

कुम्भः ४९।३८

अहोरात्रम्

००।२९।०४।३९

३३।०२

५।२३

६।३१

२१

२८

११

पश्चिमयात्रा पूर्वभाते, कृत्तिकायां रविः ४५।०३, च. ४१।१३ उपरि।

११ म

१२।२३

ज्ये १२।२३

पुष्य ३९।२५

च. ०९।१०

वैशाख ३५।३१

ज्ये ११।२३

कु. २४।२२

ज्ये ०३।१०

००।२९।०४।३९

३३।०३

५।२३

६।३१

२२

२९

१२

पश्चिमयात्रा दशम्याम्, वृषे बुधः ५१।१७, च. ११।२३ यावत्।

१२ व

०९।११

ज्ये ०९।११

अश्व ३८।२५

च. ०८।१६

च. ३८।१५

च. ०९।११

मीनः ४९।३८

अहोरात्रम्

००।२९।०४।३९

३३।०४

५।२२

६।३१

२३

३०

१३

मित्रे शुक्रः १६।२२, अश्विन्यां वृषे मङ्गलः ३८।२३, अश्व ११ वृत्त सर्वेषाम्, विवाहो दिवात्रा, पश्चिमयात्रा रेवत्याम्।

१३ र

०५।१६

ज्ये ०५।१६

रेवती ३६।३४

च. ०९।११

पूषि. २५।३८

च. ०५।१६

मी. ३६।३४

ज्ये ०७।४९

००।२९।०४।३९

३३।०५

५।२१

६।३१

२४

३१

१४

१४ श

०९।१८

श्रा ०६।१०

अश्वि ३३।१०

च. ०६।१३

आयु १८।१५

व. ०९।३८

मेघः ४९।३८

अहोरात्रम्

०१।१०।३२।३३

३३।०६

५।२१

६।३१

२५

०१

१५

३० श

५९।००

०१।१४

भरणी ०३।०६

च. ०५।३०

सोमा १२।१७

च. २३।१७

च. ४४।२८

श्रा ११।१७

०१।१०।३३।०७

३३।०९

५।२०

६।३०

२६

०१

१६

३१ श

५९।००

०१।१४

भरणी ०३।०६

च. ०५।३०

सोमा १२।१७

च. २३।१७

च. ४४।२८

श्रा ११।१७

०१।१०।३३।०७

३३।०९

५।२०

६।३०

२६

०१

१६

तिथयः

मिश्रमानकालिकर्दैनिकमङ्गलदिनव्यष्ट्याह दिनव्यग्रहान्तं गतिश्च



दिनांक: १९४८, संवत् २०८३, सन् १९३३ साल, दिनाङ्क १७/०५/२०२६ ई. तो दिनाङ्क ३१/०५/२०२६ ई. यावत्।

३२

विषयःविषयःनवाञ्चयोगःकरणातिवन्दारणःसम्पत्तःदिनपत्रम्वृ. उ. वृ. अ.दिनाङ्कः

प्रथमज्येष्ठशुक्लपक्षः (मलमासः)

शकाब्दः १९४८, संवत् २०८३, सन् १९३३ साल, दिनाङ्क १७/०५/२०२६ ई. तो दिनाङ्क ३१/०५/२०२६ ई. यावत्।  
अशुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सोम्यागस्तः, सोम्यायनम्, पश्चिम कालः।

अतिगण्डः ५२२२८, पूर्वदिशिपञ्चमया त्रितीययापुनः, मलमासे स्त्रीणां यात्रा न शुभप्रदा, मलमासफलम्-योगीश्वर भवेज्येष्ठे यज्ञानादिकं बहु॥

चन्द्रदर्शनम् ३० सम्मन्त्रफलं साम्भ्यम्, पूर्वं विना यात्रा तृतीययापुनः।

योगेश्वर व्रतम्, उत्तरा विना यात्रा प्रमादशिशिः, दति ३२ १४७ उपरि, भ. ५९ १४९ उपरि।

पश्चिमदिशिपञ्चमया पञ्चमया मिथुनये चन्दे ततः पश्चिमयापुनः, दति २६ १५५ यावत्, भ. २६ १५५ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमा विना यात्रा पुष्ये, ग. ५९ १४८ उपरि, (०६-०७) एकोदश्याम्।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्, भ. १९ १४८ यावत्।

पश्चिमोत्तरयापुनः १५३३ ततो दक्षिणा विना यात्रा।

पश्चिमोत्तरा पुष्यः १७१२९, भ. २९ १४८ उपरि ४० १५१ यावत्,



[illegible]



तिथयः	तिथयः			नक्षत्राणि		योगाः		करणानि		चन्द्रराशयः		स्मृत्युर्वः		दिनमानम्		सु. उ.	सु. अ.	दिनाङ्काः	
दिनानि	द. प.	घ. मि.	न. द. प.	घ. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	घ. मि.	मि. पुनम्	अहोरात्रम्	राश्यादिः	द. प.	घ. मि.	घ. मि.	रा. मि.	श. मि.	अ.	रा. मि.	श. मि.
०१ मं.	०३ १०५	भा. ०६ १२४	आर्द्रा ३५ १९	सं. ०७ १८८	गण्ड.	०५ १८८	व. ०३ १०५	मि. पुनम्	अहोरात्रम्	०२ १०१ १०५ १८०	३४ १०९	५ १८०	६ १८०	२६ ०२	१६	२६ ०२	१६	२६ ०२	१६
०३ बु.	५१ १३४	रा. ०१ १८८	पुन. ३१ १३७	सं. ०५ १८०	भुव.	५० १८६	तै. २४ १२१	मि. १७ १३३	दि. १२ १२१	०२ १०२ १०२ १०८	३४ ११०	५ १८०	६ १८०	२७ ०३	१७	२७ ०३	१७	२७ ०३	१७
०४ बु.	४६ १३१	रा. ११ १४६	पुष्य २८ १२४	दि. ०४ १३२	व्या.	४४ १८८	व. १९ १०३	कर्क.	अहोरात्रम्	०२ १०२ १४९ १०६	३४ १११	५ १८०	६ १८०	२८ ०४	१८	२८ ०४	१८	२८ ०४	१८
०५ शु.	४२ १२९	रा. १० १०६	श्र्ले. २५ १८६	दि. ०३ १३२	हर्षण.	३८ १२२	व. १४ १२६	क. २५ १८६	दि. ०३ १३२	०२ १०३ १४६ १०४	३४ ११२	५ १८०	६ १८०	२९ ०५	१९	२९ ०५	१९	२९ ०५	१९
०६ रा.	३९ १०४	रा. ०८ १८८	मघा २४ १८६	दि. ०२ १८२	वज्र.	३३ १०९	को. १० १८३	सिंह.	अहोरात्रम्	०२ १०४ १४२ १४८	३४ ११२	५ १८०	६ १८०	३० ०६	२०	३० ०६	२०	३० ०६	२०
०७ र.	३६ १८१	रा. ०७ १४४	पुष्य २३ १३९	दि. ०२ १३८	सिद्धि.	२८ १८५	ग. ०७ १४८	मि. ३८ १८७	रा. ०८ १८९	०२ १०५ १४९ १४२	३४ ११२	५ १८०	६ १८०	३१ ०७	२१	३१ ०७	२१	३१ ०७	२१
०८ च.	३५ १४७	सं. ०७ १२९	उफ.	२४ १८३	दि. ०२ १४९	व्यती. २५ १८९	वि. ०६ १८९	कन्या	अहोरात्रम्	०२ १०६ १४६ १४६	३४ ११२	५ १८०	६ १८०	०१ ०८	२२	०१ ०८	२२	०१ ०८	२२
०९ मं.	३६ १०७	सं. ०७ १३७	हस्तः २६ १०३	दि. ०३ १३५	वरी. २२ १८५	वा. ०५ १४७	क. ५७ १३६	रा. ०४ ११२	०२ १०७ १४३ १४०	३४ ११२	५ १८०	६ १८०	०२ ०९	२३	०२ ०९	२३	०२ ०९	२३	२३
१० बु.	३७ १४६	रा. ०८ १८६	चित्रा २९ १०८	दि. ०४ १४९	परिष. २१ १३४	तै. ०६ १४७	गुला	अहोरात्रम्	०२ १०८ १४० १३४	३४ ११२	५ १८०	६ १८०	०३ १०	२४	०३ १०	२४	०३ १०	२४	२४
११ बु.	४० १२८	रा. ०९ १२१	स्वाती ३३ १२२	सं. ०६ १३१	शिव. २१ १०२	व. ०९ १०७	गुला	अहोरात्रम्	०२ १०९ १३७ १२७	३४ ११२	५ १८०	६ १८०	०४ ११	२५	०४ ११	२५	०४ ११	२५	२५
१२ शु.	४४ १८८	रा. १० १४३	विशा. ३८ १४०	रा. ०८ १३८	सिद्धि. २१ १२८	व. १२ १२३	तु. २२ १२१	दि. ०२ १०६	०२ ११० १३४ १२०	३४ ११२	५ १८०	६ १८०	०५ १२	२६	०५ १२	२६	०५ १२	२६	२६
१३ रा.	४८ १४०	रा. १२ १४२	अनू. ४४ १४२	रा. ११ १०३	साध्य. २२ १३४	को. १६ १३४	शुक्रिक.	अहोरात्रम्	०२ १११ १३१ १२१	३४ ११०	५ १८०	६ १८०	०६ १३	२७	०६ १३	२७	०६ १३	२७	२७
१४ र.	५३ १४८	रा. ०२ १८९	ज्ये. ५१ १२२	रा. ०१ १३९	शुभ. २४ १०६	ग. २१ १८९	वृ. ५१ १२२	रा. ०१ १३९	०२ ११२ १२८ १०२	३४ १०८	५ १८०	६ १८०	०७ १४	२८	०७ १४	२८	०७ १४	२८	२८
१५ च.	५८ १४७	रा. ०४ १४२	मूलम् ५७ १४१	रा. ०४ १४५	शुक्ल २५ १४६	वि. २६ १८८	घनः	अहोरात्रम्	०२ ११३ १२४ १४३	३४ १०६	५ १८१	६ १८१	०८ १५	२९	०८ १५	२९	०८ १५	२९	२९

## द्वितीयज्येष्ठशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४८, संवत् २०८३, सन् १४३३ साल, दिनाङ्क १६ १० ६ १२ ० २६ ई. तो दिनाङ्क २९ १० ६ १२ ० २६ ई. यावत्।  
शुद्ध, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, पश्चिमे कालः।

द्वितीयादः ५४ १०३, अवमम्, वृद्धिदः ५२ १३४, चन्द्रदर्शनम् १५ सौम्यशुद्धफल महार्थम्, मासादि।  
रम्भातृतीया, पञ्चामित्रत पतिपुत्रफलप्रदम्, महाराणाप्रतापजयन्ती, क्षत्रियवैश्ययोरुपनयनम्, मुण्डनम्, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, तडागस्नानं पुण्ये।

गणेश ४ व्रतम्, उमाचतुर्थी, उमापूजनम्, भ. १९ १०३ उपरि ४६ १३१ यावत्।

उपनयनम्, विवाहः कृष्णनक्षत्र मघायाम्, ग. १९ १४६ उपरि ३४ १४६ यावत्।

अरण्यपक्षी, स्कन्दपक्षी, विन्ध्यवासिनीपूजनदर्शनादिकम्, उत्तरयात्रा पूर्वफलग्न्याम्।

पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफलग्न्याम्, शनिविधादिवहो नैवोत्तरफलग्न्याम्, दति ३६ १४९ उपरि, भ. ३६ १४९ उपरि।

आर्द्राया रविः ३९ १४८ खोखोसूचयोगो मकरलन रासभवाहन सौम्यानाडीपतिवृहस्पतिस्तेन वातातपखण्डवृष्टियोगः, भ. ०६ १८९ यावत्, द.ति. ३५ १८७ यावत्।

वृषे मङ्गलः ०२ १३४, वक्रो बुधः ४१ १२२, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा।

उपनयनम्, कर्णवेधो विवाहश्च विद्यायां, राहुवेधादिवहो मध्यमः स्वात्याम्, मुण्डनम्, देवादिप्रतिष्ठा, गृहप्रवेशः पश्चिमदक्षिणयात्रा, रामेश्वरप्रतिष्ठादिनं तद्वर्शनपूजनादिकम्।

निर्जला ११ व्रतं सर्वपापम्, उपनयनमेकादशीव्रतोपापनाश, पश्चिमयात्रा राहुवेधादिवहो मध्यमो गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च स्वात्याम्, मुण्डनम्, देवादिप्रतिष्ठा, भ. ०९ १०७ उपरि ४० १२८ यावत्।

पश्चिमास्तो बुधः ५६ १०६, तिलेन पारणम्, त्रिविक्रम १२, विवाहो गृहप्रवेशान्तराधायाम्, उत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्।

प्रदोष १३ व्रतम्, गृहप्रवेशान्तराधायाम्, पश्चिमोत्तरयात्रा।

प्रदोष १४ व्रतम्, चम्पकचतुर्दशी, पूर्वोत्तरयात्रा विवाहश्च पूर्णिमायाम्, ग. ४५ १२२ उपरि, भ. ५३ १८८ उपरि।

ज्येष्ठी १५ स्नानदानादि, तिलादिदानम्, साग्रातिक्वैदस्वतमन्वादिः, श्रीकबीर(६२८)जयन्ती, गृहारम्भो विवाहश्च मूले, पूर्णिमाव्रतम्, उत्तरयात्रा, ग. ०० १२२ यावत्, भ. २६ १८८ यावत्।

दिनायः	मिश्रमानकालिकदैनिकमङ्गलादित्यष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च										दैनिकलम्पसारिणीयकम्										०५ भूगो वल्लो ०८ १४० १२ १६ अयनाशा २२ १४ ४ १२	विधिधविषया-चतुर्थ्या सोभाग्यवृद्धये आभूतन ब्रह्मपुराणे-ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्या तु जाता पूर्वाम्ना यतो तस्मात् ता नव साम्यया स्त्रीषः सोभाग्यवृद्धये । षष्ठ्या शुभसन्ततिरामा त्क-द्वन्द्वोदिव कर्णादित्या राजभारतण्डे-ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे धनं चारण्यसज्जिता । कुजनैककलसदस्यामर्चनं सिते विभोदित्या विध्यातिनीने-स्वच्छेद्योपाराधयन्ति वा । कन्दमूलकलहारा । लम्बने-सन्तति शुभम् । अष्ट्या चतुर्थ्या ज्ञानिगणपत्यु तयतिष्यते । सायङ्काले जनाने सुवर्गस्य धेनोऽ दाना दित्यं यातीति प्रोक्तं कृष्णनाभिन- ज्येष्ठपञ्चमस्या हरेभुवन्द्ये दिवि । पात्यश्वरुद्वयस्य त्द्रवमिदं स्तुतम् । दशम्या मङ्गलदहाध, पक्षे-शुक्लपक्षे दशमी ज्येष्ठे मासि द्विजोतन । हस्ते दशापाणि तस्मादहाराह स्मृता । चतुर्थ्या पक्षे यमः-ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दश्या हस्तयोगतः । दशजनापहा मङ्गल दशापाहस्य स्मृता । अस्या दशायोगातिव्यस्तित्वान्नज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दश्या बुधहस्तयोः । व्यतीपाते गगनन्दे कृष्णवन्द्ये रवेः । दशयोगे नवः स्या सप्तयोगः प्रभृच्यते । मङ्गलाभासात्पम्, ब्रह्मपुष्टे-दृष्टवा तु हस्ते पाप सृष्टवा तु विदितं नयेत् । प्रसङ्गनापि मङ्गल मोषदा त्वनवाहितम् । वैः पुण्यपात्राणि मङ्गल सकन्दमूलकलहारा । तेषां कुलना लघुनू भवार्वाणि शिवा । भवकलसमभूतं पापं पुसां प्रणयति । आनेवे- मङ्गलयां पुत्रिजातापुन पुत्रिताः सर्वदेवत तस्मात् सर्वभयलेने पुत्रजयेदयोगमोक्ष । मङ्गलयाः स्म्यंलकस्म- षष्ठ्या तिष्ठन् स्वपन् ध्यायन् ब्राह्म बुधस्व वन्दु । य स्मोत् सततं मङ्गल स वै मुच्यते कश्चनात् । पुर्णिमाया तिलदानमहत्त्वमादित्यपुराणे-ज्येष्ठे मासि तिलान् दद्यात् पौर्णमास्या विशेषतः । अष्टमस्यास्य पक्षस्य फल प्राप्नोत्यसंशयम् । ग्रहस्थिति-मार्गो पूर्वोदितो मङ्गलः, मार्गो पश्चिमोदितः बुधः ०९ त्ते वक्ते १२ तः पश्चिमास्तः, मार्गो पूर्वो बृहस्पतिः, मार्गो पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गो पूर्वोदितः शनिः । वाताकाशस्य पश्चादन्तभागयोः वाताभ्रचारातापदस्य सन्धभागे वाताभ्रचारखण्डवृष्टयः ।
दिनानि	मङ्गलः	बुधः	बृहस्पतिः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानम्	मे. अ.	वृ. अ.	मि. अ.	क. अ.	सि. अ.	क. अ.	तु. अ.	वृ. अ.	घ. अ.	म. अ.	कु. अ.	मी. अ.			
०१ मं.	०० १२५ १२७ १५९	०२ १२३ १९९ १०५	०३ १०३ १२७ १४५	०३ १०० १२५ १४६	११ १७७ १९१ १४३	०४ १११ १२१ १२९	४७ १०५	०३ १२२	०५ १०८	०७ १२१	०९ १३९	११ १५५	१४ १४०	१६ १२७	१८ १४४	२० १४९	२२ १३५	०० १०६	०१ १३५			
०३ बु.	०० १२६ १११ १४५	०२ १२४ १०६ १०५	०३ १०३ १४० १२२	०३ १०१ १३४ १३९	११ १७७ १२३ १४७	०४ १११ ११८ १२०	४७ १०६	०३ १०८	०५ १०४	०७ १२७	०९ १३५	११ १५२	१४ १०६	१६ १२३	१८ १४०	२० १४५	२२ १३१	०० १०२	०१ १३१			
०४ बु.	०० १२६ १५५ १३९	०२ १२४ १५३ १०४	०३ १०३ १५२ १३९	०३ १०२ १४३ १२२	११ १७७ १२७ १४९	०४ १११ ११८ १४९	४७ १०६	०३ १०४	०५ १००	०७ १२३	०९ १३१	११ १४७	१४ १०२	१६ ११९	१८ १३६	२० १४१	२२ १२७	२३ १५८	०१ १२७			
०५ शु.	०० १२७ १३९ १४६	०२ १२५ १४० १०३	०३ १०४ १०५ १०६	०३ १०३ १५२ १०५	११ १७७ १३१ १५५	०४ १११ ११९ १४९	४७ १०६	०३ १००	०४ १४६	०७ १०९	०९ १२७	११ १४३	१३ १५८	१६ १४५	१८ १३२	२० १३७	२२ १२३	२३ १५४	०१ १२३			
०६ रा.	०० १२८ १२२ १२८	०२ १२५ १५९ १४२	०३ १०४ १४८ १०४	०३ १०४ १०० १४५	११ १७७ १३५ १२०	०४ १११ १०८ १३८	४७ १०६	०२ १४६	०४ १५२	०७ १०५	०९ १२३	११ १३९	१३ १५४	१६ १४१	१८ १२८	२० १३३	२२ ११९	२३ १५०	०१ १२३			
०७ र.	०० १२९ १०५ १४०	०२ १२६ १३८ १४८	०३ १०४ १४४ १०२	०३ १०४ १४४ १००	११ १७७ १३८ १४४	०४ १११ १०५ १२७	४७ १०६	०२ १४२	०४ १४८	०७ १०५	०९ १२९	११ १३५	१३ १५०	१६ १०७	१८ १३४	२० १२९	२२ ११५	२३ १४६	०१ १२५			
०८ च.	०० १२९ १४८ १४२	०२ १२६ १३८ १४८	०३ १०४ १४४ १००	०३ १०४ १४४ १००	११ १७७ १३८ १४४	०४ १११ १०२ १४६	४७ १०६	०२ १४८	०४ १४४	०६ १५७	०९ १२५	११ १३१	१३ १४६	१६ १०३	१८ १२०	२० १२५	२२ १११	२३ १४२	०१ १२१			
०९ मं.	०१ १०० १३२ १०४	०२ १२६ १४५ १०८	०३ १०४ १४६ १४८	०३ १०४ १४६ १४८	११ १७७ १४४ १४२	०४ ११० १४९ १०५	४७ १०६	०२ १४४	०४ १४०	०६ १५३	०९ १२१	११ १२७	१३ १४२	१५ १५९	१८ १४६	२० १२१	२२ १०७	२३ १३८	०१ १०७			
१० बु.	०१ १०१ १४५ १४६	०२ १२६ १३८ १२६	०३ १०५ १०९ १५५	०३ १०४ १३२ १५३	११ १७७ १४८ १०६	०४ ११० १४५ १४४	४७ १०६	०२ १४०	०४ १३६	०६ १४९	०९ १०७	११ १२३	१३ १३८	१५ १५५	१८ १४२	२० ११७	२२ १०३	२३ १३४	०१ १०३			
११ बु.	०१ १०१ १४८ १२८	०२ १२६ १३१ १४५	०३ १०५ १२२ १४२	०३ १०५ १२२ १४२	११ १७७ १४१ १२०	०४ ११० १४२ १४४	४७ १०६	०२ १३६	०४ १३२	०६ १४५	०९ १०३	११ ११९	१३ १३४	१५ १५१	१८ १०८	२० ११३	२२ १०८	२३ १३०	०० १५९			
१२ शु.	०१ १०२ १४१ १३९	०२ १२६ १२५ १०४	०३ १०५ १३५ १४९	०३ १०५ १३५ १४९	११ १७७ १४४ १३४	०४ ११० १४९ १३४	४७ १०६	०२ १३२	०४ १२८	०६ १४१	०८ १५९	११ १२५	१३ १३०	१५ १४७	१८ १०४	२० १०९	२१ १५५	२३ १२६	०० १५५			
१३ रा.	०१ १०३ १२४ १४६	०२ १२६ १४९ १२४	०३ १०५ १४९ १४६	०३ १०५ १४९ १४६	११ १७७ १४७ १४१	०४ ११० १४६ १२३	४७ १०५	०२ १२८	०४ १२४	०६ १३७	०८ १५५	११ १२१	१३ १२६	१५ १४३	१८ १०४	२० १०५	२१ १५१	२३ १२२	०० १५१			
१४ र.	०१ १०४ १२७ १४२	०२ १२६ १४३ १४४	०३ १०६ १०२ १४३	०३ १०६ १०४ १०१	११ १७७ १४९ १४८	०४ ११० १४३ १४२	४७ १०४	०२ १२४	०४ १२०	०६ १३३	०८ १५१	११ १०७	१३ १२२	१५ १३९	१८ १५६	२० १०१	२१ १४७	२३ ११८	०० १४७			
१५ च.	०१ १०४ १४० १४८	०२ १२४ १३८ १०					४७ १०३	०२ १२०	०४ ११६	०६ १२९	०८ १४७	११ १०३	१३ ११८	१५ १३५	१८ १५१	२० १०१	२१ १४३	२३ ११४	०० १४३			



विषयः तिथयः नक्षत्राणि योगाः करणाणि चन्द्रराशयः स्वष्टसूर्यः दिनमानम् सू. उ. सू. अ. दिनपङ्काः											शकाब्दः १९४८, संवत् २०८३, सन् १९३३ साल, दिनाङ्क ३०।०६।२०२६ ई. तो दिनाङ्क १४।०७।२०२६ ई. यावत्। शुद्ध. १३ तः अशुद्ध, प्रोम्पत्, सौम्यगोल, सौम्यायनम्, पश्चिमे काल।	३५			
दिनादि	द. प.	च. मि.	न. द. प.	च. मि.	यो. द. प.	क. द. प.	रा. द. प.	च. मि.	रा. क. से. अ.		आषाढकृष्णपक्षः				
०१ म.	६०।००	अहोरात्रम्	पूषा ६०।००	अहोरात्रम्	ब्रह्म २७।१८	वा ३१।०४	धनुः	अहोरात्रम्	०२।१४।२१।१४	३४।०५	५।११	६।१९	०९।१६	३०	
०१ जु.	०३।२०	प्रा. ०६।३१	पूषा ०३।१०	प्रा. ०६।१३	ऐन्द्र २८।२१	को. ०३।२०	घ. २०।११	दि. ०१।१५	०२।१५।१८।३५	३४।०४	५।११	६।१९	१०।१७	०१	
०२ च.	०७।१३	दि. ०८।१४	उषा ०९।१३	दि. ०८।१३	वैष्ण्वि २८।१४	ग. ०७।१३	मकर.	अहोरात्रम्	०२।१६।१५।२६	३४।०३	५।११	६।१९	११।१८	०२	
०३ शु.	०९।१६	दि. ०९।१०	श्रवणा १३।३३	दि. १०।३७	विष्क. २८।१४	वि. ०९।१६	म. ४५।१०	रा. ११।१६	०२।१७।२१।२६	३४।०२	५।१२	६।१८	१२।१९	०३	
०४ श.	११।३६	दि. ०९।१०	धनि. १६।१७	दि. ११।१५	प्रीति. २६।१०	वा. ११।३६	कुम्भ.	अहोरात्रम्	०२।१८।१०।१०	३४।००	५।१२	६।१८	१३।२०	०४	
०५ र.	११।३३	दि. ०९।१०	रात. १८।१४	दि. १२।१२	आयु. २४।२४	ते. ११।३३	कुम्भ.	अहोरात्रम्	०२।१९।१०।१०	३३।५९	५।१२	६।१८	१४।२१	०५	
०६ च.	१०।१४	दि. ०९।१३	पूषा १९।२५	दि. १२।१८	सीमा २०।१६	व. १०।१४	कु. ०३।२१	प्रा. ०६।३२	०२।२०।१०।१९	३३।५८	५।१२	६।१८	१५।२२	०६	
०७ म.	०८।११	दि. ०८।११	उषा १८।१४	दि. १२।१७	शोभ. १६।३२	व. ०८।११	मीन.	अहोरात्रम्	०२।२०।१५।१०	३३।५७	५।१३	६।१७	१६।२३	०७	
०८ जु.	०५।२८	दि. ०७।२४	रवती १७।२१	दि. १२।१९	अग. ११।१७	को. ०५।१०	मी. १७।२१	दि. १२।१९	०२।२१।१६।३१	३३।५६	५।१३	६।१७	१७।२४	०८	
०९ वृ.	०१।१७	प्रा. ०५।१४	अश्वि. १४।१९	दि. ११।१३	सुकर्मा ०५।१८	ग. ०१।१७	मेघ.	अहोरात्रम्	०२।२२।१३।२२	३३।५५	५।१३	६।१७	१८।२५	०९	
११ शु.	५०।१२	रा. ०१।३०	भरणी ११।१०	दि. ०९।१७	शुल. ५१।३३	व. २३।२९	मे. २५।१२	दि. ०३।३४	०२।२३।१०।१३	३३।५४	५।१३	६।१७	१९।२६	१०	
१२ श.	४४।११	रा. ११।१०	कृति. ०८।१०	दि. ०८।२९	गण्ड. ४४।१०	को. १७।१२	वृष.	अहोरात्रम्	०२।२४।१७।१०	३३।५३	५।१४	६।१६	२०।२७	११	
१३ र.	३८।२९	रा. ०८।३८	रोहिणी ०४।१०	दि. ०६।१२	वृद्धि. ३६।३०	ग. ११।३५	वृ. ३१।१९	स. ०६।१०	०२।२५।१४।१०	३३।५०	५।१४	६।१६	२१।२८	१२	
१४ च.	३२।१७	स. ०६।१०	आर्द्रा ५५।१८	रा. ०३।३३	ध्रुव. २८।१२	वि. ०५।२३	मिथुनम्	अहोरात्रम्	०२।२६।१०।१५	३३।४८	५।१४	६।१६	२२।२९	१३	
३० म.	२६।१५	दि. ०३।१५	पुन. ५१।१८	रा. ०२।१०	व्या. २१।२२	ता. २६।१५	मि. ३७।१६	रा. ०८।२५	०२।२७।३७।१९	३३।४७	५।१५	६।१५	२३।३०	१४	
दिनादि मङ्गलः बुधः बृहस्पतिः शुकः शनिः केतुः मिश्रमानम् मे. अ. वृ. अ. मि. अ. क. अ. सि. अ. क. अ. वृ. अ. वृ. अ. घ. अ. म. अ. कु. अ. मी. अ.															
०१ म.	०१।१०।१३।४।४	०२।१२।०२।१५	०३।१०।१२।३।७	०३।१२।१८।१५	११।१८।१०।१९	०४।१०।३६।५०	४।७।२	०६।१२	०८।१३	१३।१४	११।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
०१ जु.	०१।१०।६।७।७	०२।१३।०२।६।६	०३।१०।६।३।०।४	०३।१२।२६।६	११।१८।१०।१३	०४।१०।३३।३९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१०।१४	१३।१७	१३।१८	२३।१०	
०२ च.	०१।१०।३।०।१०	०२।१२।११।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१०।३३	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
०३ शु.	०१।१०।१३।१२	०२।१२।११।१०	०३।१०।६।३।१८	०३।१२।१४।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३१।३५	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
०४ श.	०१।१०।१२।१०	०२।१२।१३।१३	०३।१०।६।३।१७	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
०५ र.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
०६ च.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
०७ म.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
०८ जु.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
०९ वृ.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
११ शु.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
१२ श.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
१३ र.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
१४ च.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
३० म.	०१।१०।१०।१०	०२।१२।१०।१०	०३।१०।६।३।१६	०३।१२।१३।१०	११।१८।१२।१९	०४।१०।३०।२९	४।७।२	०१।१७	०६।१०	०८।१३	१३।१७	१३।१८	२३।१९	२३।१०	
विषयविषया—सूर्यनक्षत्राणि—रोहिणि—मृगशिरा—पूर्वोत्तरफल्गुनी—हस्त—चित्रा—स्वाती—विशाखा—ज्येष्ठा—मूल—शतभिषा—उत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। एतत्फलम्—वन्दे सूर्यर्षेण वृष्टिः सूर्ये चन्द्रर्षेण सति। उभौ चन्द्रर्षेण स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तथा भवेत्। तावेव यदि सूर्ये तदा वृष्टिर्न जायते॥ नक्षत्राणां पुरुषादियज्ञा—मूलादीनि चतुर्दशर्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादिदश सोमसंज्ञकानि, विशाखादिर्षाणि नपुंसकानि। तत्र पुरुषो योगे सुवृष्टिः सोमपुरुषयोगे स्वल्पवृष्टिस्तथा भवेत्। पञ्चतारिण्या—कुम्भकर्कटकौ मीनमकराणितुलाधराः। सजला राशयः श्रेष्ठा निर्बलाः शेषराशयः॥ राक्षसम्—आषाढशुक्ले प्रतिपत्तिषो वा पञ्चमीतिषो। गुरुशुक्रेन्दुवारण सुवृष्टिश्च सुभिषता॥ शुक्लपक्षे द्वितीयाया नवम्या वा तिथौ यदि। गुरुशुक्रेन्दुवारणस्य सुवृष्टिश्च समवेता॥ उमा रवौ बुधे चाप्या भौमेऽनवर्षातिष्ठते। शनिर्वा प्रजापिता स्यादिति बुधे परे॥ शुक्लपक्षाद्वितीयाया पञ्चम्या यदि वर्षति। मेघे वा दृश्यते तत्र श्रवणे बहु वर्षति॥ आषाढशुक्लपञ्चम्या विद्युद्विद्योते भृशम्। तदा सुवृष्ट्या सर्वत्र सुभिधं वायुतेऽनिरम्॥ आषाढशुक्ल—पञ्चम्याख्ये तिथिवतुष्टये। यावन्त्यप्राणि दृश्यन्ते वृष्टिः प्रावृषि तावती॥ शुक्लपञ्चम्यां तु विद्युत्तन्वत यदि। जलपातोऽपि वा तत्र तदा सूर्यवतिवृष्टयः॥ स्वपश्चिमवस्तुनि—आसने वसने शय्या ज्ञायाजप्य कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न पोषा कदाचन॥ अशक्तानि विरोध्या कल्याण—अशक्तौ निर्वर्त्त देशे मुने जाते च सुतके। जपेन्य मानसो सन्त्या कुशवार्तिवर्जितान्॥ कल्याणवर्षा कल्याण—अशक्तौ सत्यमस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रहः। दान दमो दया धान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्॥ पञ्चमहापदान्याह स एव—बलिकर्म—स्वशाहोम—स्वाध्यायातिथिसात्त्विकाः। भूतपित्रमरज्ज्वननुद्यागा महानद्याः॥ राक्षस्यति—मार्गी पूर्वोदितो मङ्गलः, वक्रो पश्चिमस्तो बुधः, १४ तः पूर्वोदितः, मार्गी पूर्वोदितो बृहस्पतिः, मार्गी पश्चिमोदितः शुकः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः। चातारणम्—पञ्चादिभागे वातातपखण्डवृष्टयस्तदुत्तरभागे वातातपखण्डवृष्टयः।															







* विशांतरी महादशानन्दशास्त्रम् *																		* ब्रह्मणा दत्तादिपदार्थाः *																		37																	
सूर्यदशावर्ष ६						चन्द्रदशावर्ष १०						मङ्गलदशावर्ष ७						गुरुदशावर्ष १८						बृहस्पतिदशावर्ष १६						शनिदशावर्ष १९						बुधदशावर्ष १७						केतुदशावर्ष ७						शुक्रदशावर्ष २०					
कृत्तिका, उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढ						रोहिणी, हस्त, श्रवणा						मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा						आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा						पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वभाद्र						पुष्य, अनुराधा, उत्तरभाद्र						आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती						मघा, मूल, अश्विनी						पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ, भरणी					
अनन्दशा १८						अनन्दशा ३०						अनन्दशा २१						अनन्दशा ५४						अनन्दशा ४८						अनन्दशा ५७						अनन्दशा ५१						अनन्दशा २१						अनन्दशा ६०					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन																		
सूर्य	००	०३	१८	चन्द्र	००	१०	००	मङ्गल	००	०४	२७	गुरु	०२	०८	१२	बृह	०२	०१	१८	शनि	०३	००	०३	बुध	०२	०४	२७	केतु	००	०४	२७	शुक्र	०३	०४	००																		
चन्द्र	००	०६	००	मङ्गल	००	०७	००	गुरु	०१	००	१८	बृह	०२	०४	२४	शनि	०२	०६	१२	बुध	०२	०८	०९	केतु	००	११	२७	शुक्र	०१	०२	००	सूर्य	०१	००	००																		
मङ्गल	००	०४	०६	गुरु	०१	०६	००	बृह	००	११	०६	शनि	०२	१०	०६	बुध	०२	०३	०६	केतु	०१	०१	०९	शुक्र	०२	१०	००	सूर्य	००	०४	०६	चन्द्र	०१	०८	००																		
गुरु	००	१०	२४	बृह	०१	०४	००	शनि	०१	०१	०९	बुध	०२	०६	१८	केतु	००	११	०६	शुक्र	०३	०२	००	सूर्य	००	१०	०६	चन्द्र	००	०७	००	मङ्गल	०१	०२	००																		
बृह	००	०९	१८	शनि	०१	०७	००	बुध	००	११	२७	केतु	०१	००	१८	शुक्र	०२	०८	००	सूर्य	००	११	१२	चन्द्र	०१	०५	००	मङ्गल	००	०४	२७	गुरु	०३	००	००																		
शनि	००	११	१२	बुध	०१	०५	००	केतु	००	०४	२७	शुक्र	०३	००	००	सूर्य	००	०९	१८	चन्द्र	०१	०७	००	मङ्गल	००	११	२७	गुरु	०१	००	१८	बृह	०२	०८	००																		
बुध	००	१०	०६	केतु	००	०७	००	शुक्र	०१	०२	००	सूर्य	००	१०	२४	चन्द्र	०१	०४	००	मङ्गल	०१	०१	०९	गुरु	०२	०६	१८	बृह	००	११	०६	शनि	०३	०२	००																		
केतु	००	०४	०६	शुक्र	०१	०८	००	सूर्य	००	०४	०६	चन्द्र	०१	०६	००	मङ्गल	००	११	०६	गुरु	०२	१०	०६	बृह	०२	०३	०६	शनि	०१	०१	०९	बुध	०२	१०	००																		
शुक्र	०१	००	००	सूर्य	००	०६	००	चन्द्र	००	०७	००	मङ्गल	०१	००	१८	गुरु	०२	०४	२४	बृह	०२	०६	१२	शनि	०२	०८	०९	बुध	००	११	२७	केतु	०१	०२	००																		
* योगिनीदशानन्दशास्त्रम् *																		* योगिनीशान्तिपत्रम् *																		* गुरुद्विर्वाचनम् *																	
मङ्गला १ (चन्द्र)						पिङ्गला २ (सूर्य)						धान्या ३ (बृह)						भ्रामरी ४ (मङ्गल)						भद्रिका ५ (बुध)						उल्का ६ (शनि)						सिद्धा ७ (शुक्र)						सङ्क्रा ८ (केतु)											
श्रवणा, आर्द्रा, चित्रा						धनिष्ठा, पुनर्वसु, स्वाती						शतभिषा, पुष्य, विशाखा						अश्विनी, आश्लेषा, अनुराधा, पूर्वभाद्र						भरणी, मघा, ज्येष्ठा, उत्तरभाद्र						कृत्तिका, पूर्वफाल्गुनी, रोहिणी, उत्तरफाल्गुनी						मृगशिरा, हस्त, चित्रा						उत्तराषाढ											
मास १२						मास २४						मास ३६						मास ४८						मास ६०						मास ७२						मास ८४						मास ९६											
योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन	योगिनी	मास	दिन																		
मङ्गला	००	१०	पिङ्गला	०१	१०	धान्या	०३	००	भ्रामरी	०५	१०	भद्रिका	०८	१०	उल्का	१२	००	सिद्धा	१६	१०	सङ्क्रा	२१	१०	मङ्गला	०२	२०	पिङ्गला	०३	१०	धान्या	०६	००	भ्रामरी	०९	१०	भद्रिका	१३	१०															
पिङ्गला	००	२०	धान्या	०२	००	भ्रामरी	०४	००	भद्रिका	०६	२०	उल्का	१०	००	सिद्धा	१४	००	सङ्क्रा	१८	२०	मङ्गला	०२	२०	पिङ्गला	०३	१०	धान्या	०६	००	भ्रामरी	०९	१०	भद्रिका	१३	१०	उल्का	१६	००															
धान्या	०१	००	भ्रामरी	०२	२०	भद्रिका	०५	००	उल्का	०८	००	सिद्धा	११	२०	सङ्क्रा	१६	००	मङ्गला	०२	१०	पिङ्गला	०३	१०	धान्या	०६	००	भ्रामरी	०९	१०	भद्रिका	१३	१०	उल्का	१६	००	सिद्धा	१८	२०															
भ्रामरी	०१	१०	भद्रिका	०३	१०	उल्का	०५	००	सिद्धा	१३	१०	मङ्गला	०२	००	पिङ्गला	०४	२०	धान्या	०७	००	भ्रामरी	१०	२०	पिङ्गला	०४	२०	धान्या	०७	००	भ्रामरी	१०	२०	पिङ्गला	०४	२०	धान्या	०७	००															
भद्रिका	०१	२०	उल्का	०४	००	सिद्धा	०७	००	सङ्क्रा	१०	२०	मङ्गला	०१	२०	पिङ्गला	०४	००	धान्या	०७	००	भ्रामरी	१०	२०	पिङ्गला	०४	००	धान्या	०७	००	भ्रामरी	१०	२०	पिङ्गला	०४	००	धान्या	०७	००															
उल्का	०२	००	सिद्धा	०४	२०	सङ्क्रा	०८	००	मङ्गला	०१	१०	पिङ्गला	०३	१०	धान्या	०६	००	भ्रामरी	०९	१०	भद्रिका	१३	१०	उल्का	१६	००	सिद्धा	१८	२०	मङ्गला	०२	२०	पिङ्गला	०३	१०	धान्या	०६	००															
सिद्धा	०२	१०	सङ्क्रा	०५	१०	मङ्गला	०१	००	पिङ्गला	०२	२०	धान्या	०५	००	भ्रामरी	०८	००	भद्रिका	११	२०	उल्का	१६	००	सिद्धा	१८	२०	मङ्गला	०२	२०	पिङ्गला	०३	१०	धान्या	०६	००	भ्रामरी	०९	१०	भद्रिका	१३	१०												
सङ्क्रा	०२	२०	मङ्गला	००	२०	पिङ्गला	०२	००	धान्या	०४	००	भ्रामरी	०६	२०	भद्रिका	१०	००	उल्का	१४	००	सिद्धा	१८	२०	मङ्गला	०२	२०	पिङ्गला	०३	१०	धान्या	०६	००	भ्रामरी	०९	१०	भद्रिका	१३	१०	उल्का	१६	००												
* योगिनीभुक्तभोगयानचक्रम् *																		* नेत्रस्फुरणफलम् *																		* गुरुद्विर्वाचनम् *																	
जन्मार्थं विद्युतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात्। मङ्गलाद्याः सङ्क्रातान्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः। ततो विशोत्तरीदशावद्भुक्तभोगयवर्धनयनं कार्यम्।																																																					



[illegible]



[illegible]







[illegible]







यहाँ १५ तथा १४ क्रान्ति के मध्य ०१ अंश क्रान्ति अथवा ६० कला का अन्तर है जिसका चरमिनटान्तर ११४ सेकेण्ड प्राप्त हुआ है।  
अतएव ०८ कला क्रान्ति सम्बन्धी चरमिनट साधन हेतु अनुपात करने हैं—  
०१ अंश अथवा ६० कला का चरमिनटान्तर = ११४ सेकेण्ड  
अतएव ०१ कला का चरमिनटान्तर = ११४ सेकेण्ड ÷ ६०  
अतः ०८ कला का चरमिनटान्तर = ११४ सेकेण्ड X ०८ ÷ ६० = ११२ ÷ ६० = १५ सेकेण्ड १२ प्रतिसेकेण्ड = १५ सेकेण्ड (अ)  
२४ अक्षांश एवम् १४ क्रान्त्यंश का चरमिनटान्ति = २५ मिनट ३० सेकेण्ड  
(अ) अनुपात से प्राप्त फल = + १५ सेकेण्ड  
अतएव २४ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटान्ति = २५ मिनट ४५ सेकेण्ड (ब)  
२५ अक्षांश एवम् १५ क्रान्त्यंश का चरमिनटान्ति = २८ मिनट ४३ सेकेण्ड  
२५ अक्षांश एवम् १४ क्रान्त्यंश का चरमिनटान्ति = २६ मिनट ४२ सेकेण्ड  
अन्तर चरमिनटान्ति = ०२ मिनट ०१ सेकेण्ड = १२१ सेकेण्ड  
यहाँ १५ तथा १४ क्रान्ति के मध्य ०१ अंश क्रान्ति अथवा ६० कला का अन्तर है जिसका चरमिनटान्तर १२१ सेकेण्ड प्राप्त हुआ है।  
अतएव ०८ कला क्रान्ति सम्बन्धी चरमिनट साधन हेतु अनुपात करते हैं—  
०१ अंश अथवा ६० कला का चरमिनटान्तर = १२१ सेकेण्ड  
अतएव ०१ कला का चरमिनटान्तर = १२१ सेकेण्ड ÷ ६०  
अतः ०८ कला का चरमिनटान्तर = १२१ सेकेण्ड X ०८ ÷ ६० = १६८ ÷ ६० = १६ सेकेण्ड ०८ प्रतिसेकेण्ड = १६ सेकेण्ड (स)  
२५ अक्षांश एवम् १४ क्रान्त्यंश का चरमिनटान्ति = २६ मिनट ४२ सेकेण्ड  
(स) अनुपात से प्राप्त फल = + १६ सेकेण्ड  
अतएव २५ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटान्ति = २६ मिनट ५८ सेकेण्ड (द)  
२५ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटान्ति = २६ मिनट ५८ सेकेण्ड  
२४ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटान्ति = २५ मिनट ४५ सेकेण्ड  
अन्तर चरमिनटान्ति = ०१ मिनट १३ सेकेण्ड = ७३ सेकेण्ड  
यहाँ २५ तथा २४ अक्षांश के बीच ०१ अक्षांश अथवा ६० कला का अन्तर है जिसका चरमिनटान्तर ७३ सेकेण्ड प्राप्त हुआ है। अतः  
२८ कला अक्षांश सम्बन्धी चरमिनट साधन हेतु अनुपात करते हैं—  
०१ अंश अथवा ६० कला का चरमिनटान्तर = ७३ सेकेण्ड  
अतएव ०१ कला का चरमिनटान्तर = ७३ सेकेण्ड ÷ ६०  
अतः २८ कला का चरमिनटान्तर = ७३ सेकेण्ड X २८ ÷ ६० = २०४४ ÷ ६० = ३४ सेकेण्ड ०४ प्रतिसेकेण्ड = ३४ सेकेण्ड (य)  
२४ अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला क्रान्ति का चरमिनटान्ति = २५ मिनट ४५ सेकेण्ड  
(य) अनुपात से प्राप्त फल = + ३४ सेकेण्ड  
अतः २८ अंश २८ कला अक्षांश एवम् १४ अंश ०८ कला उत्तरा क्रान्ति का चरमिनट = २६ मिनट १९ सेकेण्ड = २६ मिनट। अब  
दिनार्द्धसाधनवालिका द्वारा दिनमान साधन करते हैं— ०६।०० + ००।२६ = ०६।२६ दिनार्द्धघण्टा। इसे ढाई से गुणा करने पर १६।०५ दण्डादि दिनार्द्धमान हुआ। इसे द्विगुणित करने पर ३२।१० दण्डादि दिनमान देवघर का हुआ। इसे ६०।०० दण्ड में घटाने पर २७।१० दण्डादि रात्रिमान देवघर का हुआ। दिनमान + रात्र्यर्द्धमान = मिश्रमान = ३२।१० + १३।५५ = ४६।०५ मिश्रमान देवघर का हुआ।  
अभीष्ट स्थान का सूर्योदयान्ता साधन— दिनमान में ५ से भाग देने पर सूर्यास्त होता है। सूर्यास्त को १२।०० घण्टे में घटाने पर सूर्योदय का मान होता है। यथा— ३२।१० ÷ ५ = ०६।२६ घण्टादि सूर्यास्त एवं १२।०० - ०६।२६ = ०५।३४ घण्टादि सूर्योदय देवघर का हुआ।

अभीष्टस्थान का तिथ्यादिसाधन— जिस स्थान का पञ्चाङ्ग उपलब्ध हो उस पञ्चाङ्ग में दिए गए तिथ्यादि के दण्डादि मानों में स्पष्टदेशान्तर का संस्कार (धन या ऋण) करें। स्पष्टदेशान्तर— देशान्तर दो प्रकार के होते हैं—पूर्वापर तथा दक्षिणोत्तर। पूर्वापर रेखाशो के अन्तर से ज्ञात होता है। इस हेतु पञ्चाङ्ग के रेखांश तथा अभीष्टस्थान के पूर्वापर रेखाशो का अन्तर कर उसे ४ से गुणा करने पर मिनटादि फल आता है। पूर्वादिशा में इस फल का धन तथा पश्चिमदिशा में ऋण संस्कार किया जाता है। दक्षिणोत्तर अन्तर का साधन चर द्वारा किया जाता है। इसके साधन का प्रकार पूर्वोक्त उदाहरण द्वारा स्पष्ट रूप से कहा जा चुका है। यहाँ अभीष्टस्थान तथा जिस स्थान का पञ्चाङ्ग हो, उसका चर साधन कर दोनों का अन्तर करने से चरान्तर होगा। इसके धन—ऋण संस्कार करने का नियम निम्नलिखित है—  
१. जिस स्थान का पञ्चाङ्ग हो वहाँ के अक्षांश से अभीष्टस्थान का अक्षांश अधिक हो तथा उत्तरा क्रान्ति हो तो चरान्तर धन होगा अन्यथा ऋण होगा।  
२. जिस स्थान का पञ्चाङ्ग हो वहाँ के अक्षांश से अभीष्टस्थान का अक्षांश कम हो तथा दक्षिणा क्रान्ति हो तो चरान्तर धन होगा अन्यथा ऋण होगा।  
पूर्वापर देशान्तर तथा चरान्तर दोनों धन या ऋण हो तो योग करने पर धन या ऋण स्पष्टदेशान्तर होगा। यदि एक धन तथा अन्य ऋण हो तो दोनों का अन्तर करें। यदि धनमान अधिक हो तो स्पष्ट संस्कार धन तथा यदि ऋणमान अधिक हो तो स्पष्ट संस्कार ऋण होगा। यहाँ स्पष्टदेशान्तर संस्कार है। उदाहरण—दिनाङ्क १५-०८-२०२५ ई. को देवघर के तिथ्यादि का मान साधन करना है। अभीष्ट स्थान देवघर का अक्षांश = २४ अंश २८ कला उत्तर, रेखांश = ८६ अंश ५५ कला पूर्व, उत्तरा क्रान्ति = १४ अंश ०८ कला ऋणात्मिका, पूर्वसाधित चर = २६ मिनट। विश्वविद्यालय—पञ्चाङ्गम् का अक्षांश = २६ अंश ३५ कला उत्तर, रेखांश = ८५ अंश ३० कला पूर्व अंग क्रान्ति = १४ अंश ०८ कला ऋणात्मिका, पूर्वोक्त विधि से दिनाङ्क १५-०८-२०२५ ई. को मिथिला का चर = २९ मिनट। मिथिला से देवघर पूर्व है। अतः रेखांशान्तर = ८६।५५ - ८५।३० = ०१।२५ को ४ से गुणा करने पर देशान्तर मिनट ०५।४० = ०६ मिनट (स्वल्पान्तरात्) धन हुआ। पूर्वोक्त नियमानुसार मिथिला के अक्षांश से देवघर का अक्षांश कम तथा उत्तरा क्रान्ति है, अतएव चर ऋण होगा। अतः २९-२६ = ०३ मिनट चरान्तर ऋण। यहाँ देशान्तर ०६ मिनट धन तथा चरान्तर ०३ मिनट ऋण है। अतएव इन दोनों का अन्तर ०६-०३ = ०३ मिनट स्पष्टदेशान्तर धन हुआ। इसे ढाई से गुणा करने पर ००।०७ दण्डादि स्पष्टदेशान्तर धन हुआ। अतः दिनाङ्क १५-०८-२०२५ ई. को मिथिला के तिथ्यादि मान में ००।०७ दण्डादि का योग करने पर निम्नलिखित तिथ्यादि मान देवघर का होगा—  
मिथिला मान दण्डादि स्पष्टदेशान्तर दण्डादि देवघर मान दण्डादि  
सप्तमीतिथि ४८।१९ + ००।०७ ४९।०६ सप्तमीतिथि  
अश्विनीनक्षत्र ११।१० + ००।०७ ११।१७ अश्विनीनक्षत्र  
गण्डयोग १९।४२ + ००।०७ १९।४९ गण्डयोग  
मिथिला (विश्वविद्यालय—पञ्चाङ्गम्) से अभीष्ट स्थान का ग्रहस्पष्टीकरण—विश्वविद्यालय—पञ्चाङ्गम् में मिश्रमान(मध्यरात्रि)कालिक ग्रहस्पष्ट दिया गया है। इन ग्रहों को अभीष्टस्थानीय बनाने के लिए पूर्वोक्त नियमानुसार चर साधन कर अभीष्ट स्थान का दिनमान—मिश्रमान—सूर्योदयास्तादि साधन कर लें। तब पञ्चाङ्गस्थ मिश्रमान एवम् अभीष्टस्थानीय मिश्रमान के अन्तर से ग्रहगति द्वारा प्राप्त फल को पूर्व में ऋण तथा पश्चिम में धन करने से अभीष्टस्थान का मिश्रमानकालिक ग्रह होगा। उदाहरण—दिनाङ्क १५-०८-२०२५ ई. को देवघर में मिश्रमानकालिक सूर्यस्पष्टीकरण—पूर्ववत् देवघर का चरादि साधन कर दिनमान—मिश्रमान—सूर्योदयास्तादि साधन करें। तब दोनों स्थानों के मिश्रमानों का अन्तर = ४६।१४ - ४६।०५ = ००।०९ दण्डादि को सूर्यगति ५७।३६ से गुणा कर ६० से भाग देने पर प्राप्त विकलादि फल ०८।३८ = ०९ (स्वल्पान्तरात्) को पञ्चाङ्गस्थ मिश्रमानकालिक स्पष्टसूर्य ०३।२८।२१।१२ में घटाने पर ०३।२८।२१।०३ देवघर का मिश्रमानकालिक स्पष्टसूर्य हुआ। इसी प्रकार अन्य दिनों के ग्रह भी बनाए जा सकते हैं। तब, मिश्रमान(निशीथ)कालिक ग्रह से इष्टकालिक ग्रहस्पष्टीकरण (पृष्ठ ०२)नियमानुसार अभीष्ट तिथि को मिश्रमानकालिक ग्रह से इष्टकालिकग्रह साधन किया जा सकता है।

• चलान्तरसारिणी •													
मास	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	
दिनाङ्क	मि	मि	मि	मि	मि	मि	मि	मि	मि	मि	मि	मि	
०१	-०३	-१४	-१२	-०४	+०३	+०२	-०३	-०६	+००	+१०	+१६	+११	
०२	-०४	-१४	-१२	-०४	+०३	+०२	-०४	-०६	+००	+१०	+१६	+११	
०३	-०४	-१४	-१२	-०४	+०३	+०२	-०४	-०६	+००	+११	+१६	+११	
०४	-०५	-१४	-१२	-०३	+०३	+०२	-०४	-०६	+०१	+११	+१६	+१०	
०५	-०५	-१४	-१२	-०३	+०३	+०२	-०४	-०६	+०१	+११	+१६	+१०	
०६	-०५	-१४	-१२	-०३	+०३	+०२	-०४	-०६	+०१	+१२	+१६	+०९	
०७	-०६	-१४	-११	-०२	+०३	+०१	-०५	-०६	+०२	+१२	+१६	+०९	
०८	-०६	-१४	-११	-०२	+०४	+०१	-०५	-०६	+०२	+१२	+१६	+०९	
०९	-०७	-१४	-११	-०२	+०४	+०१	-०५	-०६	+०२	+१२	+१६	+०८	
१०	-०७	-१४	-११	-०२	+०४	+०१	-०५	-०५	+०३	+१३	+१६	+०८	
११	-०८	-१४	-१०	-०१	+०४	+०१	-०५	-०५	+०३	+१३	+१६	+०७	
१२	-०८	-१४	-१०	-०१	+०४	+०१	-०५	-०५	+०४	+१३	+१६	+०७	
१३	-०८	-१४	-१०	-०१	+०४	+००	-०६	-०५	+०४	+१३	+१६	+०६	
१४	-०९	-१४	-१०	-०१	+०४	+००	-०६	-०५	+०४	+१३	+१६	+०६	
१५	-०९	-१४	-०९	+००	+०४	-००	-०६	-०५	+०५	+१३	+१६	+०५	
१६	-१०	-१४	-०९	+००	+०४	-००	-०६	-०४	+०५	+१३	+१६	+०५	
१७	-१०	-१४	-०९	+००	+०४	-०१	-०६	-०४	+०५	+१३	+१५	+०४	
१८	-१०	-१४	-०८	+००	+०४	-०१	-०६	-०४	+०५	+१३	+१५	+०४	
१९	-१०	-१४	-०८	+०१	+०४	-०१	-०६	-०४	+०६	+१५	+१५	+०३	
२०	-११	-१४	-०८	+०१	+०४	-०१	-०६	-०४	+०६	+१५	+१५	+०३	
२१	-११	-१४	-०८	+०१	+०४	-०१	-०६	-०३	+०७	+१५	+१४	+०२	
२२	-११	-१४	-०७	+०१	+०४	-०२	-०६	-०३	+०७	+१५	+१४	+०२	
२३	-१२	-१४	-०७	+०१	+०४	-०२	-०६	-०३	+०७	+१५	+१४	+०२	
२४	-१२	-१३	-०७	+०२	+०३	-०२	-०६	-०३	+०८	+१६	+१४	+०१	
२५	-१२	-१३	-०६	+०२	+०३	-०२	-०६	-०२	+०८	+१६	+१३	+००	
२६	-१२	-१३	-०६	+०२	+०३	-०२	-०६	-०२	+०८	+१६	+१३	+००	
२७	-१३	-१३	-०६	+०२	+०३	-०३	-०६	-०२	+०९	+१६	+१३	-०१	
२८	-१३	-१३	-०५	+०२	+०३	-०३	-०६	-०२	+०९	+१६	+१२	-०१	
२९	-१३	-१२	-०५	+०३	+०३	-०३	-०६	-०१	+०९	+१६	+१२	-०२	
३०	-१३	—	-०५	+०३	+०३	-०३	-०६	-०१	+१०	+१६	+१२	-०२	
३१	-१३	—	-०५	—	+०३	—	-०६	-०१	—	+१६	—	-०३	

देशान्तर एवं चलान्तरसंस्कारप्रकार—सम्पूर्ण भारत में स्ट्रेण्डर्ड (मानक) समय समान है। इसके अनुसार एक ही समय होकर जहाँ १० या १२ बजते हैं। परन्तु लोकल (स्थानीय) समय प्रत्येक जगह के धिन्-धिन् होते हैं। अतः स्थानीय समय बनाने के लिये चलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (योग या अन्तर) करना चाहिये। यथा — ०१ जनवरी को देवघर के स्ट्रेण्डर्ड (मानक) समय में ०३ मिनट चलान्तर ऋण एवम् १८ मिनट मानक देशान्तर धन कर देने तो देवघर (वैद्यनाथधाम) का लोकल (स्थानीय) समय हो जाएगा।



\* अक्षांश-देशान्तरसारणी \*

\* पलभासारणी \*

स्थान	अक्षांश	मिथिलादेशान्तर	मानकदेशान्तर	स्थान	अक्षांश	मिथिलादेशान्तर	मानकदेशान्तर	स्थान	अक्षांश	मिथिलादेशान्तर	मानकदेशान्तर	स्थान	अक्षांश	मिथिलादेशान्तर	मानकदेशान्तर
उत्तर	मिनटादि	मिनटादि	उत्तर	मिनटादि	मिनटादि	उत्तर	मिनटादि	मिनटादि	उत्तर	मिनटादि	मिनटादि	उत्तर	मिनटादि	मिनटादि	मिनटादि
अदल्यास्थान	२६।३३	+ ०९।३०	+ १३।३०	गोरखपुर	२६।६५	- ०८।३२	+ ०३।२८	दिल्ली	२८।३८	- ३३।००	- २१।००	बुलनेबर	२०।४३	+ ०१।२०	+ १३।२०
अजमेर	२६।२९	- ४३।२८	- ३१।२८	गोहाटी	२६।४०	+ २५।००	+ ३७।००	दुमका	२४।४६	+ ०७।००	+ १९।००	झोपाल	२३।४६	- ३२।२४	- २०।२४
अमृतसर	३१।३७	- ४२।२०	- ३०।२०	ग्वालियर	२६।४४	- २९।२०	- १७।२०	देवघर	२४।२८	+ ०५।४०	+ १७।४०	मनुष	२७।३०	- ३१।४६	- १९।४६
अयोध्या	२६।४९	- १३।४२	- ०१।४२	गाउँशाला	२२।३६	+ ०३।४६	+ १५।४६	देहरादून	२६।३३	- ०६।४८	+ ०५।४२	मधुपुर	२४।४८	+ ०४।२८	+ १६।२८
अररिया	२६।०६	+ ०८।००	+ २०।००	गतग	२४।०२	- ०२।३०	+ ०९।३०	धनकुटा	२७।००	+ ०७।२०	+ १९।२०	मधुबनी	२६।२१	+ ०२।२८	+ १७।२४
अहमदाबाद	२३।०३	- ५१।२०	- ३९।२०	घण्डीगढ़	३०।१५	- ३४।४०	- २२।४०	धनकुटा	२७।००	+ ०७।२०	+ १९।२०	मधुपुर	२५।५७	+ ०५।२४	+ १७।२४
आगरा	२७।४०	- २९।४६	- १७।४६	चायबासा	२२।३३	+ ०१।२४	+ १३।२४	धनकुटा	२७।००	+ ०७।२०	+ १९।२०	मुक्तिनाथ	२८।४४	- ०६।४५	+ ०५।४५
आरा	२५।३४	- ०३।२०	+ ०८।४०	चास	२३।३८	+ ०२।४०	+ १४।४०	धनकुटा	२७।००	+ ०७।२०	+ १९।२०	मुहुर	२५।२३	+ ०४।००	+ १६।००
आसनसोल	२३।४२	+ ०५।४६	+ १७।४६	चेन्नई	१३।०५	- २०।४०	- ०८।४०	धनकुटा	२७।००	+ ०७।२०	+ १९।२०	मुजफ्फरपुर	२६।०७	- ००।४२	+ ११।४८
इन्दौर	२२।४२	- ७८।४०	- २६।४०	छपरा	२५।४७	+ ०३।००	+ ०९।००	नागपुर	२१।४०	- २५।२०	- १३।२०	मुम्बई	१९।००	- ५०।२५	- ३८।२५
उज्जयिनी	२३।०९	- ७९।०८	- २७।०८	जनकपुर	२७।००	+ ०१।४८	+ १३।४८	नालन्दा	२५।०७	- ००।२०	+ १९।४०	मुुरी	२३।४०	- ११।४४	+ ००।४६
उत्तरकाशी	३०।४४	- २८।४२	- १६।४२	जबलपुर	२३।४०	- २२।०४	- १०।०४	पटना	२५।३७	+ ०१।४०	+ १०।४०	मोठ	२९।००	- ३१।४२	- १९।४२
उदयपुर	२४।३५	- ४७।४६	- ३५।४६	जमशेदपुर	२२।४०	+ ०२।४०	+ १४।४०	पलामू	२३।४२	- ०४।४२	+ ०७।०८	मैसूर	१२।४८	- ७५।३२	- २३।३२
औरंगाबाद	२४।४५	- ०४।२०	+ ०७।४०	जमालपुर	२५।४९	+ ०४।०८	+ १६।०८	पुणे	१९।४८	+ ०१।२८	+ १३।२८	मोक्कमा	२५।२४	+ ०१।४०	+ १३।४०
कटक	२०।२६	+ ०१।४६	+ १३।४६	जमुई	२४।४५	+ ०२।४०	+ १४।४०	पुणे	१८।३४	- ४६।२८	- ३४।२८	मोतिहारी	२६।४०	- ०१।४०	+ १०।२०
कटिहार	२५।३०	+ ०८।२०	+ २०।२०	जयनगर	२६।४०	+ ०२।३६	+ १४।३६	पुर्णिमा	२५।४९	+ ०८।०४	+ २०।०४	मोहनिया	२५।४१	- ०७।३२	+ ०४।२८
काठमाण्डू	२७।४५	- ००।४०	+ ११।२०	जयपुर	२६।४५	- ७८।३२	- २६।३२	पोखरा	२८।४७	- ०६।०८	+ ०५।४२	मोसली	३०।४३	- ३५।४२	- २३।४२
कानपुर	२६।२८	- २०।३६	- ०८।३६	जालन्धर	३१।४९	- ७९।४४	- २७।४४	प्रयाग	२८।२८	- १४।२४	- ०२।२४	रक्कील	२६।४८	- ०२।३६	+ ०९।२४
काशी	२५।२०	+ १०।००	+ ०२।००	जोधपुर	२६।२०	- ४९।४८	- ३७।४८	फरीदाबाद	२८।२६	- ७२।४४	- २०।४४	राउकैला	२२।४५	- ०२।३२	+ ०९।२८
किशनगञ्ज	२६।४०	+ ०९।४४	+ २१।४४	जीनपुर	२५।४६	- ११।०४	+ ००।४६	फरक्किसगञ्ज	२६।४८	+ ०७।०४	+ १९।०४	राजगीर	२५।४०	- ००।२४	+ ११।३६
कुश्नर	२९।४९	- ७४।४०	- २२।४०	जौनपुर	२५।४६	- ११।०४	+ ००।४६	बक्सर	२५।३४	- ०६।४०	+ ०६।४०	राजमहल	२५।३३	+ ०९।३२	+ २१।३२
कुठ	२५।४०	- ७८।४२	- २६।४२	जयपुर	२६।४५	- ७८।३२	- २६।३२	बागल	२७।३८	- ०५।४०	+ ०६।४०	रामगढ़	२३।३८	+ ००।४६	+ १२।४६
कोलकाता	२२।३४	+ ११।३६	+ २३।३६	झाड़ा	२४।४६	+ ०३।३०	+ १५।३०	बदौनाथ	३०।४४	- २४।४०	- १२।४०	राउकैला	२२।४५	- ०२।३२	+ ०९।२८
खार्गड़िया	२५।४९	+ ०४।४०	+ १६।४०	झारसी	२५।२६	- २७।४०	- १५।४०	बलिया	२५।४४	- ०५।२४	+ ०६।३६	रायपुर	२१।४५	+ १५।४६	- ०३।४६
पया	२४।४९	- ०२।००	+ १०।००	झाल्देनगञ्ज	२४।०२	- ०५।३०	+ ०६।३०	बस्ती	२६।४८	- ११।४०	+ ००।४६	रोहतास	२५।४५	+ ०२।०८	+ १४।०८
गोविन्दपुर	२८।२०	- ३२।४६	- २०।४६	हुमना	२५।३३	- ०५।४२	+ ०६।४८	बोका	२४।४५	+ ०४।२०	+ १६।२०	रोहतास	२८।४४	- ३५।२८	- २३।२८
गोडी	२५।३४	- ०७।४०	+ ०४।२०	इहरी	२४।४२	- ०५।४६	+ ०६।४६	बेङ्गलुरु	१३।००	- ७१।४०	- १९।४०	लखनऊ	२६।४१	- ०८।२०	- ०६।२०
गिरौडीह	२४।४१	+ ०३।२०	+ १५।२०	तिरुपति	१३।४०	- २४।२०	- १२।२०	बेङ्गलुरु	१३।००	- ७१।४०	- १९।४०	लखनऊ	२६।४१	- ०८।२०	+ १४।२४
गुमला	२३।०२	- ०३।२०	+ ०८।४०	तिलैया	२४।२०	+ ००।०४	+ १२।०४	बोकारो	२३।४०	+ ०२।४०	+ १४।४०	लखनऊ	२६।४१	- ०८।२०	+ १४।२४
गुरुग्राम	२८।२७	- ७३।४४	- २१।४४	दरभंगा	२६।४०	+ ०१।४८	+ १३।४८	भधुआ	२३।२०	- ०७।४२	+ ०४।४२	लखनऊ	२६।४१	- ०८।२०	+ १४।२४
गोडी	२४।४५	+ ०६।३०	+ १८।३०	दाङ	२८।३७	- १२।४८	- ००।४८	भागलपुर	२५।४५	+ ०६।४०	+ १८।४०	लखनऊ	२६।४१	- ०८।२०	+ १४।२४
गोण्डा	२७।२८	- १३।४६	- ०१।४६	दानापुर	२५।४५	- ०२।४०	+ १०।४०	धियाई	२१।४३	- १६।४६	- ०४।४६	लखनऊ	२६।४१	- ०८।२०	+ १४।२४
गोपालगञ्ज	२६।२८	- ०४।४६	+ ०७।४६	दाङगिरी	२७।०२	+ ११।०४	+ २३।०४								

\* अक्षांश द्वारा पलभा साधन करने की विधि \*

पलभाशतशेदधिक कलाद्य व्यतीतभोग्याक्षप्रभान्तरणम्।  
मच्छा हतं तत्कलपुगता चाक्षभा भवेत्साधिता सुखार्थम्॥

अर्थात् गत अक्षांश और ऐष्य अक्षांश सम्बन्धी अङ्गुलादि पलभाओं के अन्तर को अक्षांश सम्बन्धी कलामान से गुणा करना चाहिए। प्राप्त गुणफल को ६० से भाग देने पर जो लब्धि प्राप्त हो उसको गत अक्षांश सम्बन्धी पलभा में जोड़ देने से अभीष्ट पलभा अङ्गुलादि हो जाती है। इसे सूत्ररूप में इस प्रकार लिखा जा सकता है—

(ऐष्यपलभामान - गतपलभामान) × अक्षांशकलामान + ६० = अङ्गुलादि लब्धि।

गत अक्षांशसम्बद्ध पलभामान + अङ्गुलादि लब्धि = अभीष्टस्थानीय पलभामान अङ्गुलादि।

उपयुक्त पलभासारिणी में ०१ से लेकर ६० अक्षांशों की पलभा दी गई है। प्रमुख स्थानों के अक्षांशमान अक्षांश-देशान्तरसारिणी में दिए गए हैं।

अक्षांश-देशान्तरसारिणी में देवघर का उत्तर अक्षांश २४ अंश २८ कला है। पलभासारिणी में २४ अक्षांश का ०५।२०।३९ तथा २५ अक्षांश का ०५।३५।४२ अङ्गुलादि पलभामान है। दोनों का अन्तर (०५।३५।४२) - (०५।२०।३९) = ००।१५।४१ हुआ। यहाँ २४ गत अक्षांश तथा २५ ऐष्य अक्षांश के बीच १ अंश अथवा ६० कला का अन्तर है जिसका पलभान्तर ००।१५।४१ अङ्गुलादि प्राप्त हुआ है। अतः २८ कला का मान साधन करने हेतु अनुपात करने है—

१ अंश अथवा ६० कला का पलभान्तर = ००।१५।४१ है।  
अतः १ कला का पलभान्तर = ००।१५।४१ ÷ ६० = ००।२५।४१

अतः २८ कला का पलभान्तर = (००।१५।४१ × २८) ÷ ६० = ००।४२०।३०८ ÷ ६० = ००।७०।३०४।०८ = ००।७०।३०४ प्राप्त हुआ। इसे २४ अक्षांश के पलभामान में योग करने पर (०५।२०।३९) + (००।७०।३०४) = ०५।२०।३९ अङ्गुलात्मिका पलभा देवघर की हुई। इसी प्रकार अन्य स्थानों की पलभा का साधन करना चाहिए।







